फिश फार्मिंग को दोमट मिट्टी वाला तालाब बेहतर

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में बेहतर उत्पादन के लिए समेकित मत्स्यपालन विषय पर जारी प्रशिक्षण प्रमाण पत्र वितरण के साथ सम्पन्न हो गया. अध्यक्षता करते हुए प्रसार शिक्षा उप निदेशक प्रशिक्षण डॉ बिनीता सतपथी ने कहा कि फिश फार्मिंग शुरू करने के लिए अच्छी दोमट मिट्टी वाला तालाब बनाने की जरूरत है. पूरे साल तालाब में पानी की उपलब्धता बरकरार रहे. तालाब को तैयार करने करने के दौरान वैज्ञानिकी विधि को अपनाते हुए चूने व गोबर की खाद का प्रयोग करना जरूरी होता है. सही आकार की मछली के बीज डालें. समय-समय पर चारा और पानी की व्यवस्था सुनिश्चित करें. उन्होंने कहा कि मछली के बीमार होने पर विशेषज्ञ से जांच कराना चाहिए. धान के खेतों में भी मछली पालन किया जा सकता है, जिसे एकीकृत मत्स्यपालन कहते हैं. इससे मत्स्यपालकों को दोहरा लाभ होता है. बायोफ्लॉक मछलीपालन से होने वाला लाभ कई कारकों पर निर्भर करता है. जिनमें टैंक का आकार, मछलियों की प्रजाति, मछलियों का आहार, बिजली की खपत आदि शामिल है. डा सतपथी ने कहा कि मत्स्यपालन को जल कृषि भी कहा जाता है. नियंत्रित वातावरण में जलीय जीवों का नियंत्रित पालन-पोषण करता है. मछलियों का वजन तेजी से बढ़ाने के लिए उनके आहार का विशेष ध्यान देना जरूरी होता है. उन्हें आहार के रूप में प्रोटीनयुक्त चारा उपलब्ध कराने की दिशा में पहल करने की आवश्यकता जतायी. मौके कृषि विज्ञान केंद्र परसौनी के हेड सह वरिष्ठ वैज्ञानिक पर डॉ अभय, एसएमएस फीसरीज डा उदय, डा फूलचंद, डा संजीव आदि ने प्रतिभागियों के साथ अपने विचार साझा किये. टेक्निकल टीम के सुरेश कुमार, सूरज कुमार, विक्की आदि मौजद थे

प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र देते वैज्ञानिक.

Monday, September 1, 2025
प्रभात खबर
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68b49dcb6684b7ec4db1aad5

2/9/25 पेज 14

हिंदी चेतना कार्यक्रम • डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में हिंदी चेतना माह का शुभारंभ

हिंदी अब दुनिया के 20 से अधिक देशों में पढ़ाई जा रही, छात्रों में और अभिरुचि बढ़ाएं

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में हिंदी चेतना माह 2025 का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम एक सितंबर से तीस सितंबर तक चलेगा। इस तीस दिवसीय कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय में हिंदी निबंध प्रतियोगिता, वाद विवाद प्रतियोगिता, आलेख प्रतियोगिता, अंतराक्षरी, कवि सम्मेलन समेत विभिन्न तरह के प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। इन प्रतियोगिताओं में शिक्षक, वैज्ञानिक, शिक्षकेत्तर कर्मचारी एवं छात्र छात्राएं शिरकत करेंगे। विश्वविद्यालय में गैर हिंदी भाषी विद्यार्थियों एवं पदाधिकारियों के लिए भी विशेष प्रतियोगिता भी आयोजित की जायेगी। कार्यक्रम में बोलते हुए मुख्य अतिथि प्रख्यात पत्रकार एवं साहित्यकार राकेश प्रवीर ने कहा कि हिंदी सिर्फ भाषा नहीं है बल्कि हमारी संस्कृति हैं। उन्होंने कहा कि हिंदी अब दुनिया के बीस से अधिक देशों में पढ़ाई जा रही है। उन्होंने कहा कि भारत अब दुनिया में आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। ऐसे में हिंदी के प्रति लोगों की अभिरुचि बढ़ी है। उन्होंने कहा कि हिंदी भाषी राज्यों में लोगों को हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को लेकर सचेत रहना चाहिए। निदेशक शिक्षा डा. उमाकांत बेहरा ने कहा कि वे हिंदी भाषी नहीं है लेकिन हिंदी को अपनी मौसी भाषा मानते हैं। उन्होंने कहा कि उन्हें आश्चर्य होता है जब बिहार और उत्तर प्रदेश के लोग कहते हैं कि उनकी हिंदी कमजोर है और वे हिंदी नहीं लिख सकते। उन्होंने बताया कि उड़िया भाषी होते हुए भी उन्होंने हिंदी में किताब लिखी है। आधारभूत एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ.अमरेश चंद्रा ने कहा कि कुलपति डा. पीएस पांडेय हिंदी के प्रयोग को लेकर हम सबो को काफी उत्साहित करते हैं और उन्हीं के प्रयासों से अब हिंदी चेतना पूरे एक महीने तक मनाया जा रहा है। मात्स्यिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. पी पी श्रीवास्तव ने कहा कि हिंदी में भी शोध पत्र प्रकाशित किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि हिंदी में अच्छे शोध पत्र शुरू करने पर भी जोर देना चाहिए। सामुदायिक महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ.उषा सिंह ने कहा बचपन से ही बच्चों को हिंदी भाषी होने पर गर्व का अहसास दिलाना चाहिए।

पूसा में कार्यक्रम को संबोधित करते राकेश प्रवीर व मौजूद लोग।

विश्वविद्यालय के कार्यों में हिंदी का अब अधिक प्रयोग

अभियंत्रण महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ.राम सुरेश वर्मा ने कहा कि विश्वविद्यालय के कार्यों में हिंदी का अब अच्छा प्रयोग हो रहा है लेकिन उसे और बढ़ावा देने की जरूरत है। उन्होंने अपने महाविद्यालय में हिंदी में हो रहे कार्यों की भी चर्चा की। राजभाषा अधिकारी डॉ.शंकर झा ने राजभाषा विभाग की एक वर्ष की उपलब्धियों की जानकारी दी और कहा कि हिंदी के प्रयोग को लेकर कई पुरस्कार भी विश्वविद्यालय को मिले हैं। उन्होंने हिंदी चेतना माह में होने वाले कार्यक्रमों के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी और अधिक से अधिक लोगों से उसमें शामिल होने की अपील की। कार्यक्रम के दौरान मंच संचालन सौरभ द्विवेदी ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन डा. ईश प्रकाश ने किया। मौके पर डॉ.महेश कुमार, डॉ. एस के झा, डॉ.कुमार राज्यवर्धन आदि थे।

विश्वविद्यालय में दुर्गा पूजा की सफलता के लिए एक दर्जन समितियों का हुआ गठन

पूसा स्टाफ क्लब में दुर्गा पूजा समिति की बैठक में शामिल सदस्य • जागरण

संस, जागरण• पूसा: डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के पूसा स्टाफ क्लब में दुर्गा पूजा समिति की बैठक अध्यक्ष सुशील कुमार सिंह की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इसमें पिछले वर्ष के आय-व्यय को ध्वनिमत से पारित किया गया। इस वर्ष की पूजा को सफल बनाने के लिए कुल 12 समितियों का गठन किया गया। इनमें सफाई, मूर्ति, पंडाल, प्रसाद, सुरक्षा, सांस्कृतिक कार्यक्रम और सीसीटीवी कैमरा की समितियां शामिल हैं। मौके पर समिति के सचिव शिरीश कुमार चौधरी, कोषाध्यक्ष जयप्रकाश राय, उपाध्यक्ष अनिल कुमार, और मीडिया प्रभारी रिंकू सिंह भी थे। सचिव शिरीष कुमार चौधरी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 3 सितंबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया है कि पूर्वानुमानित अवधि में आसमान में हल्के से मध्यम बादल छाए रह सकते हैं। इस अवधि में सामान्य से कम वर्षा होगी। तराई क्षेत्रों तथा कुछ मैदानी भागों में वर्षा हो सकती है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस दौरान 12 से 15 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से पूरवा हवा चलेगी।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
01 सितंबर	31.0	26.0
02 सितंबर	31.5	26.0
दरभंगा		
01 सितंबर	31.5	26.0
02 सितंबर	31.5	26.2
पटना		
01 सितंबर	33.0	27.0
02 सितंबर	33.0	27.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 01-9-25

भास्कर 1/9/25 पेज 17

मंडे पॉजिटिव | केले का फूल महत्वपूर्ण पोषण तत्वों वाला भोजन का एक अच्छा स्रोत है

रिसर्च : केले के फूल से बनी सब्जियां बचाती है बीमारी से

भास्कर न्यूज | पूसा

बिहार के ज्यादातर केला उत्पादक किसान व व्यापारी आमतौर पर केले की कटाई के दौरान केले के फूल को फेंक देते हैं। केले के फूल को फेंकने के बजाय हम सबो को विभिन्न रूपों में इसका सेवन करने की जरूरत हैं। केले का फूल महत्वपूर्ण पोषण तत्वों वाला भोजन का एक अच्छा स्रोत है। केले के फूल से बने सब्जियों का सेवन मनुष्य को गंभीर बीमारियों से बचाने में सहायक होता हैं। केले के फूल में कई तरह के उत्कृष्ट औषधीय और पौष्टिक गुण पायें जाते हैं जिस वजह से यह इंसानों के लिए अत्यंत लाभकारी माने जाते हैं। फूल में फॉस्फोरस, कैल्शियम, पोटेशियम, तांबा, मैग्नीशियम, आयरन जैसे कई आवश्यक खनिज पाएं जाते हैं जो मानव शरीर को सदैव बेहतर बनाये रखने के लिए अति महत्वपूर्ण होते है। केले के फूल का सेवन खासकर लोग बरसात के दिनों में ज्यादा करते हैं। इसमें पोटैशियम पाया जाता है जो शरीर को तुरंत एनर्जी देता है और कमजोरी भी दूर करता है। विशेषज्ञों के अनुसार विटामिन सी और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर केले का फूल स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद है।

कहते हैं वैज्ञानिक : मधुमेह को नियंत्रित करने में सहायक

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के पादप रोग विभाग के हेड सह अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (फल) के प्रधान अन्वेषक डॉ. संजय कुमार सिंह बताते हैं कि ऐसे तो केले के सभी भाग प्रत्येक रूप में लाभकारी होते हैं लेकिन खासकर केले का फूल मानव शरीर के लिए अत्यंत ही लाभकारी होता हैं। केले के फूल से बनाई गई सब्जियों का सेवन मानव शरीर में संक्रमण को भी रोकता है। केले के फूल के अर्क में इथेनॉल होता है जो रोगजनक बैक्टीरिया के विकास को भी रोकता है। इसके फूल का सेवन मधुमेह को नियंत्रित करने, इंसानों के मूड को बूस्ट कर उनकी चिंता को कम करने, कैंसर, हृदय रोग से बचाने, नए बच्चों को जन्म देने वाली माताओं में दूध के स्राव को बढ़ाने, बच्चों के जन्म से पूर्व माताओं के गर्भाशय को सुरक्षित रख प्रसव बाद रक्तस्राव को कम करने आदि में भी काफी सहायक होता हैं। इतना ही नही कृषि वैज्ञानिकों की मानें तो केले के फुल का सेवन इंसानों के बढ़ते उम्र की प्रक्रिया को धीमा करने, महिलाओं में मासिक धर्म को संतुलित करने, गुर्दा को स्वस्थ रखने, पाचन में सुधार करने, आयरन के स्तर को बढ़ाने, यूरिक एसिड की समस्या को ठीक करने में सहायक है।

बाजारों में सालों भर बनी रहती है केले की उपलब्धता

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि भारत में केले के फूलों से अलग-अलग प्रकार की रेसिपी बनाई जाती है। खासकर बिहार और बंगाल में केले के फूल से जहां पकोड़े बनाये जाते हैं। वही बहुत सारे राज्यों में इससे सब्जी, भाजी आदि भी बनाई जाती है। इससे काढ़ा व सुप भी बनाया जाता हैं। केला एक बारहमासी फल है। इसकी उपलब्धता हरेक मौसम के दौरान बाजारों में बनी रहती हैं। कच्चे और पके हुए केले तो आसानी से मिल ही जाते हैं। अब बाजारों में इसके फूल भी धड़ल्ले से मिलने लगे हैं।

हिंदी को क्लिष्ट भाषा से बाहर निकालने की जरूरत : प्रवीर

चेतना मास का शुभारंभ करते अतिथि.

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में हिंदी चेतना माह 2025 का शुभारंभ किया गया. इस दौरान हिंदी निबंध, वाद-विवाद, आलेख, अंताक्षरी, कवि सम्मेलन आदि प्रतियोगिता होगी. मुख्य अतिथि राकेश प्रवीर ने कहा कि हिन्दी को क्लिष्ट भाषा से बाहर निकालने की जरूरत है. हिंदी सिर्फ भाषा नहीं है बल्कि हमारी संस्कृति है. उन्होंने कहा कि हिंदी अब दुनिया के बीस से अधिक देशों में पढ़ाई जा रही है. निदेशक शिक्षा डा उमाकांत बेहरा ने कहा कि वे हिंदी भाषी नहीं है लेकिन हिंदी को अपनी मौसी भाषा मानते हैं. आधारभूत एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ अमरेश चंद्रा ने कहा कि अब हिंदी चेतना पूरे एक महीने तक मनाया जा रहा है. मात्स्यिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ पीपी श्रीवास्तव ने कहा कि हिंदी में भी शोध पत्र प्रकाशित किया जाना चाहिए. अधिष्ठाता डॉ उषा सिंह ने कहा कि बचपन से ही बच्चों को हिंदी भाषी होने पर गर्व का अहसास दिलाना चाहिए. अभियंत्रण महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ राम सुरेश वर्मा, राजभाषा अधिकारी डॉ शंकर झा, सौरभ तिवारी, डा ईश प्रकाश, डॉ महेश कुमार, डॉ एसके झा, डॉ कुमार राज्यवर्धन आदि थे.

प्रभात खबर
Tuesday, September 2, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68b5ed93bc5c58c6e68a96e3

कृषि • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कृषि वैज्ञानिक ने किसानों के लिए दी सलाह

किसान व्यावसायिक रूप से गिलोय की खेती कर प्राप्त कर सकते हैं बेहतर लाभ, बाजार में भी अधिक डिमांड

2/9/25 भास्कर न्यूज | पूसा पेज 13

गिलोय के जड़, तना एवं पत्तियों का उपयोग प्राचीन काल से औषधियों के रूप में किया जाता रहा है। गिलोय एक बहू वर्षीय लता है तथा इसे प्रायः लोग अमृता, गुरबेल आदि नाम से जानते है। गिलोय मौजूदा समय की महामारी कोरोना के प्रकोप को भी कम करने में काफी लाभकारी हैं। किसान व्यवसायिक रूप से गिलोय की खेती कर बेहतर लाभ अर्जित करने के अलावे पर्यावरण का संरक्षण और लोगों की सेहत को बेहतर बनाने का काम कर सकते हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कृषि वैज्ञानिक एवं अखिल भारतीय औषधीय एवं सुगंध परियोजना के मुख्य अन्वेषक डॉ. दिनेश राय ने दी है। उन्होंने कहा कि भारत में औषधीय पौधों की खेती और उसके उपयोग का इतिहास काफी प्राचीन है। औषधीय पौधों के उपयोग का वर्णन ऋग्वेद में भी मिलता है। उन्होंने कहा कि औषधीय पौधों में गिलोय काफी प्रमुख है जिसकी मांग कोरोना वायरस जैसी महामारी में काफी बढ़ गई है। यह एक बहुवर्षीय लता होती है जो घर के आसपास या बाग बगीचों में पेड़ पर देखी जा सकती है। गिलोय में अमृत के समान गुण होने के कारण इसे लोग अमृता भी कहते हैं। उन्होंने बताया कि आयुर्वेद साहित्य में गिलोय को ज्वर की एक महान औषधि माना गया है जिस वजह से लोग इसे जीवंतिका भी कहते है। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि गिलोय की खेती दोमट मिट्टी से लेकर रेतीली, बंजर और पथरीली सभी प्रकार की भूमि में की जा सकती है। उन्होंने बताया कि किसान जून जुलाई माह के दौरान 6 से 8 इंच तक के दो गांठो वाले गिलोय के डंठलों की कटाई कर इसे अपने खेतों में लगा सकते हैं। उन्होंने बताया कि एक हेक्टेयर भूमि में गिलोय की खेती करने के लिए किसानों को 2500 कलमों की जरूरत पडती है।

किसान गिलोय लगाने से पूर्व खेतों को ऐसे करें तैयार, कम उर्वरक डालें

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि गिलोय लगाने से पूर्व किसान अपने खेतों की जुताई अच्छी तरह से करके उसमें से खरपतवार निकाल दें। किसान खेत तैयार करते समय प्रति हेक्टेयर की दर से खेतों में 10 टन सड़ी हुई गोबर की खाद व वर्मी कंपोस्ट देने के अलावे उसमें निर्धारित मात्रा में डीएपी, पोटाश, नाइट्रोजन और जिंक का प्रयोग कर सकते हैं।

इन समस्याओं से छुटकारा दिलाने में है लाभकारी

औषधीय विभाग से जुड़े कृषि वैज्ञानिक ने बताया की गिलोय के प्रयोग से जहां शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता काफी अधिक बढ़ जाती है। वहीं गिलोय डेंगू, स्वाइन फ्लू और मलेरिया जैसे कई तरह के बुखारो को भी उतारने में काफी लाभकारी है। इतना ही नहीं गिलोय मधुमेह, गैस या पेट की अन्य बीमारी, गठिया रोग, आंख व कान के रोग, बवासीर, पीलिया आदि जैसे रोगों को भी दूर करने में काफी मददगार साबित होता है। उन्होंने बताया कि लोग गिलोय का सेवन सुबह खाली पेट आसानी से कर सकते हैं।

हिंदी सिर्फ एक भाषा ही नहीं है, यह हमारी संस्कृति भी

केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में हिंदी चेतना माह प्रारंभ, कल तक चलेगा कार्यक्रम, विभिन्न प्रतियोगिताओं का होगा आयोजन

- प्रतियोगिताओं में वैज्ञानिक, शिक्षक कर्मचारी और छात्र लेंगे भाग
- गैर हिंदी भाषी लोगों के लिए भी होगी विशेष प्रतियोगिता

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में सोमवार से हिंदी चेतना माह का शुभारंभ हुआ। एक से तीस सितंबर तक चलने वाले इस माह में विश्वविद्यालय में हिंदी निबंध प्रतियोगिता, वाद विवाद प्रतियोगिता, आलेख प्रतियोगिता, अंत्याक्षरी, कवि सम्मेलन समेत विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएगी। इन प्रतियोगिताओं में शिक्षक, वैज्ञानिक, शिक्षकेत्तर कर्मचारी एवं छात्र छात्राएं भाग लेंगे। विश्वविद्यालय में गैर हिंदी भाषी विद्यार्थियों एवं पदाधिकारियों के लिए भी विशेष प्रतियोगिता होगी। कार्यक्रम में बोलते हुए मुख्य अतिथि साहित्यकार राकेश प्रवीर ने कहा कि हिंदी सिर्फ भाषा नहीं है बल्कि हमारी संस्कृति हैं। उन्होंने कहा कि हिंदी अब दुनिया के बीस से अधिक देशों में पढ़ाई जा रही है। भारत अब दुनिया में आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। ऐसे में हिंदी के प्रति लोगों की अभिरुचि बढ़ी है। उन्होंने कहा कि हिंदी भाषी राज्यों में लोगों को हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को लेकर सचेत रहना चाहिए। निदेशक शिक्षा डा उमाकांत बेहरा ने कहा कि वे हिंदी भाषी नहीं है लेकिन

संबोधन करते मुख्य अतिथि साहित्यकार राकेश प्रवीर • जागरण

हिंदी को अपनी मौसी भाषा मानते हैं। उन्होंने कहा कि उन्हें आश्चर्य होता है जब बिहार और उत्तर प्रदेश के लोग कहते हैं कि उनकी हिंदी कमजोर है और वे हिंदी नहीं लिख सकते। उन्होंने बताया कि उड़िया भाषी होते हुए भी उन्होंने हिंदी में किताब लिखी है । आधारभूत एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ अमरेश चंद्रा ने कहा कि कुलपति डा पीएस पांडेय हिंदी के प्रयोग को लेकर काफी उत्साहित करते हैं और उन्हीं के प्रयासों से अब हिंदी चेतना पूरे एक

कार्यक्रम में उपस्थित अतिथि • जागरण

महीने तक मनाया जा रहा है। अधिष्ठाता डा. पीपी श्रीवास्तव ने कहा कि हिंदी में भी शोध पत्र प्रकाशित किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि हिंदी में अच्छे शोध पत्र शुरू करने पर भी जोर देना चाहिए। सामुदायिक महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ उषा सिंह ने कहा बचपन से ही बच्चों को हिंदी भाषी होने पर गर्व का अहसास दिलाना चाहिए। अभियंत्रण महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ राम सुरेश वर्मा ने कहा कि विश्वविद्यालय के कार्यों में हिंदी का अब अच्छा प्रयोग हो रहा है लेकिन उसे और बढ़ावा देने की जरूरत है। उन्होंने अपने महाविद्यालय में हिंदी में हो रहे कार्यों की भी चर्चा की। राजभाषा अधिकारी डॉ शंकर झा ने राजभाषा विभाग की एक वर्ष की उपलब्धियों की जानकारी दी और कहा कि हिंदी के प्रयोग को लेकर कई पुरस्कार भी विश्वविद्यालय को मिले हैं। कार्यक्रम से दौरान मंच संचालन श्री सौरभ द्विवेदी ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन डा ईश प्रकाश ने किया। कार्यक्रम के दौरान डॉ महेश कुमार, डॉ एस के झा, डॉ कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न वैज्ञानिक, शिक्षक पदाधिकारी एवं छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

सम्मानित होते शिक्षा का अखिलेश ठाकुर • जागरण

बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन की ओर से सम्मानित किए गए शिक्षक

संस, जागरण • सरायरंजन : बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन पटना के द्वारा प्रखंड के चिह्नित मध्य विद्यालय गंगापुर के प्रधानाध्यापक अखिलेश ठाकुर को शिक्षा के क्षेत्र में योगदान के लिए सम्मानित किया गया है। सम्मान स्वरूप श्री ठाकुर को चादर, माला, पाग के अलावा प्रशस्ति पत्र व स्मृति चिह्न भेंट किया गया। समारोह में राज्य के 62 शिक्षकों को सम्मानित किया गया है। इस अवसर पर एक संगोष्ठी का भी आयोजन हुआ जिसका विषय था– "वर्तमान परिवेश में गुरुओं का महत्व"। समारोह की अध्यक्षता बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने की। समारोह में मुख्य अतिथि राज्य उपभोक्ता संरक्षण आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति संजय कुमार, अतिविशिष्ट अतिथि पटना विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा. केसी सिन्हा, विशिष्ट अतिथि पद्मश्री विमल जैन एवं पद्मश्री अशोक कुमार विश्वास, स्वागताध्यक्ष डा. शशि भूषण कुमार आदि मौजूद रहे।

Dainik Jagran 02-09-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 3 सितंबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया है कि पूर्वानुमानित अवधि में आसमान में हल्के से मध्यम बादल छाए रह सकते हैं। इस अवधि में सामान्य से कम वर्षा होगी। तराई क्षेत्रों तथा कुछ मैदानी भागों में वर्षा हो सकती है। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि इस दौरान 12 से 15 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से पूरवा हवा चलेगी।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
02 सितंबर	31.0	26.0
03 सितंबर	31.5	26.0
दरभंगा		
02 सितंबर	31.5	26.0
03 सितंबर	31.5	26.2
पटना		
02 सितंबर	33.0	27.0
03 सितंबर	33.0	27.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 02-9-2025

कार्यक्रम | डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि विद्यापति सभागार में हिन्दी चेतना माह का किया गया शुभारंभ

हिन्दी सिर्फ भाषा नहीं, यह हमारी संस्कृति: राकेश प्रवीर

पूसा, निज संवाददाता । डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि विद्यापति सभागार में सोमवार को हिन्दी चेतना माह की शुरूआत हुई। अध्यक्षता निदेशक, शिक्षा डॉ.उमाकांत बेहरा ने की। इस दौरान मुख्य अतिथि रूप में मौजूद वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार राकेश प्रवीर ने कहा कि हिन्दी सिर्फ भाषा नहीं है। यह हमारी संस्कृति है। आमजन की आत्मा है। जो उनके हृदय में बसती है। जरूरत है इसे सरल व सहज बनाकर व्यवहार में लाने की। उन्होंने कहा कि बदलते समय में भारत आर्थिक रूप् से सबल होने के साथ हिन्दी में भी वैश्विक स्तर पर काफी तेजी से आकार ले रहा है। हिन्दी के प्रति अभिरूचि लगातार बढ़ रही है।

डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि विद्यापति सभागार में सोमवार को हिन्दी चेतना माह का उद्घाटन करते अतिथि।

वर्तमान समय अपनी संस्कृति, परंपरा के विस्तार देने का है। अपने अध्यक्षीय संबोधन में निदेशक शिक्षा डॉ.उमाकांत बेहरा ने कहा कि वे हिंन्दी भाषी नहीं है। लेकिन हिंन्दी को वे अपनी मौसी भाषा मानते हैं। उन्होंने कहा कि हिन्दी भारत तक सिमित नहीं है। इसे मॉरिसस समेत कई अन्य देश उपयोग में ला रहे हैं। उन्होंने कहा कि उनका लगाव हिन्दी के प्रति काफी अधिक है। यही वजह वे उडिया भाषी होने के बाबजूद उन्होंने हिंदी में किताब लिखी है। मौके पर डीन डॉ. अमरेश चन्द्रा, डॉ.पीपी श्रीवास्तव, डॉ.उषा सिंह, डॉ.राम सुरेश समेत डॉ.संतोष ठाकुर, डॉ.आरके साह, डॉ.सुनीता कुमारी आदि ने भी संबोधित किया। स्वागत करते हुए राजभाषा अधिकारी डॉ.शंकर झा ने बीते वर्ष की उपलब्धियां व आगामी योजनाओं पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि एक माह के दौरान निबंध लेखन, वाद-विवाद, आलेख, अंताक्षरी प्रतियोगिता, कवि सम्मेलन आदि का आयोजन किया जायेगा। संचालन सौरभ द्विवेदी एवं डॉ.ईश प्रकाश ने किया। मौके पर डॉ.महेश कुमार, डॉ.एसके झा, डॉ.कुमार राज्यवर्धन आदि मौजूद थे।

विश्व स्तर पर हिंदी के प्रति लोगों में अभिरुचि बढ़ी : राकेश प्रवीर

पूसा । डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के विद्यापति सभागार में हिंदी चेतना माह 2025 का शुभारंभ हुआ। तीस सितंबर तक चलने वाले हिंदी चेतना माह के दौरान विश्वविद्यालय में शिक्षक, वैज्ञानिक, शिक्षकेत्तर कर्मचारी व छात्र छात्राओं केलिए विविध प्रतियोगितायें आयोजित की जायेंगी, जिसमें हिंदी निबंध प्रतियोगिता, वाद विवाद प्रतियोगिता, आलेख प्रतियोगिता शामिल है। इस क्रम में कवि सम्मेलन भी आयोजित किया जाना वहीं विश्वविद्यालय में गैर हिंदी भाषी छात्रों एवं पदाधिकारियों के लिए भी विशेष प्रतियोगिता आयोजित की जायेगी। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित प्रख्यात पत्रकार एवं साहित्यकार राकेश प्रवीर ने कहा कि देश में सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली हिंदी सिर्फ भाषा नहीं है बल्कि हमारी संस्.ति है। उन्होंने कहा कि हिंदी अब दुनिया के बीस से अधिक देशों में पढ़ाई जाती है। ऐसे में विश्व स्तर पर हिंदी के प्रति लोगों की अभिरुचि बढी है। उन्होंने कहा कि हिंदी भाषी राज्यों में लोगों को हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को लेकर जागरूक होना चाहिए। इस अवसर पर निदेशक शिक्षा डॉ उमाकांत बेहरा ने कहा कि आश्चर्य होता है जब बिहार और उत्तर प्रदेश के लोग कहते है कि उनकी हिंदी कमजोर है और वे हिंदी नहीं लिख सकते। उन्होंने बताया कि उडिया भाषी होते हुए भी उन्होंने हिंदी में किताब लिखी है।

Rashtriya Sahara 02-09-2025

ग्रामीण विकास में मत्स्य पालन की महत्वपूर्ण भूमिका : डॉ सतपथी

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के पंचतंत्र सभागार में बेहतर उत्पादन के लिए समेकित मत्स्यपालन जारी प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र वितरण के साथ संपन्न हो गया. अध्यक्षता करते हुए प्रसार शिक्षा निदेशालय के उप निदेशक प्रशिक्षण डॉ विनिता सतपथी ने कहा कि ग्रामीण विकास में मत्स्यपालन की महत्वपूर्ण भूमिका है. यह खाद्य सुरक्षा प्रदान करता है. रोजगार के अवसर पैदा करता है. आय बढ़ाता है. ग्रामीण समुदायों के सामाजिक-आर्थिक कल्याण में सुधार करता है. उन्होंने कहा कि यह प्रोटीन व पोषक तत्वों का किफायती

प्रमाणपत्र के साथ प्रतिभागी व वैज्ञानिक.

स्त्रोत है. यह गरीबी व भुखमरी को कम करने में मदद करता है. मत्स्यपालन पर्यटन को भी बढ़ावा दे सकता है. आर्थिक बदलाव के दौरान यह सामाजिक सुरक्षा जाल के रूप में काम करता है. मत्स्यपालन, झींगा व अन्य जलीय जीवों को पकड़ने, संसाधित करने और बेचने का उद्योग है. डा सतपथी ने कहा कि मत्स्यपालन के लिए उपयुक्त तालाब का चयन एवं निर्माण आवश्यक है. मिट्टी-पानी की जांच, तालाब प्रबंधन, मत्स्य बीज, बीज संचय व अंगुलिकाओं की देखभाल, मृदा एवं जल का विस्तृत विवरण की गुणवत्ता बनी रहनी चाहिए. प्रशिक्षण का देखरेख प्रसार शिक्षा निदेशक डा मयंक राय ने किया. इसमें पूर्णिया जिले से 30 प्रतिभागियों हिस्सा लिया. मौके पर नीतीश कुमार, आशीष अहमद, चौरसिया, राम कुमार यादव, डा फूलचंद, संजीव, सूरज, सुरेश मौजूद थे.

प्रभात खबर
Wednesday, September 3, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68b7400d40ef647af584454b

भास्कर 3/9/25 पेज 17

सुझाव • कृषि यंत्रों का उपयोग कर समय, लागत और श्रम की बचत कर सकते हैं, इससे होगा फायदा

किसान कृषि यंत्रों के रख-रखाव पर दें विशेष ध्यान : विनीता

भास्कर न्यूज | पूसा

समय से मरम्मत जरूरी : कृषि यंत्रों के प्रयोग से पहले किसान सभी यंत्रो का करें गंभीरता से निरीक्षण

खेतीबाड़ी में कृषि उपकरणों की भूमिका बेहद अहम होती है। बिहार के किसान कृषि उपकरणों की मदद से सालोंभर अपनी खेती से जुड़े कार्यों को कम लागत, कम समय और कम श्रम में अच्छे ढंग से करते रहते हैं परंतु इन किसानों के लिए यह भी अत्यंत जरूरी है कि वे समय-समय पर अपने सभी कृषि यंत्रों का रख रखाव करते रहें। कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली की विषय वस्तु विशेषज्ञ कृषि अभियंत्रण इंजीनियर

ट्रैक्टर की धुलाई कराता किसान।

इंजीनियर विनीता कश्यप ने बताया कि किसानों को कृषि यंत्रों के हर भाग का गंभीरता से निरीक्षण करना चाहिए। यंत्र का यदि कोई नट-बोल्ट या पूर्जा टूटा हुआ है तो किसान उसे अविलंब बदल दें या उसकी मरम्मत कराएं। उन्होंने बताया कि खासकर जुताई करने वाले कृषि यंत्रों के जो भाग घिस गए हैं उनमें किसानों को समय समय पर धार लगवाना चाहिए। उन्होंने बताया की कृषि यंत्रों के उचित गति से कार्य करने के लिए यंत्र में आवश्यक समायोजन यानि एडजैस्टमेंट ठीक से कराना चाहिए जिससे बेल्ट आदि का तनाव ठीक रहे और यंत्र सुचारु रुप से कार्य कर सकें। उन्होंने बताया कि बीज एवं उर्वरक बुआई यंत्र तथा फसल सुरक्षा यंत्र के परीक्षण के दौरान कैलिब्रिशन करके उसका समायोजन कर लेना चाहिए जिससे मशीन से खेतों में उचित मात्रा में बीज एवं उर्वरक डाली जा सके।

विनीता कश्यप ने कहा कि कृषि यंत्रों में किसी तरह की कोई खराबी न हो और किसानों का यंत्र लंबे समय तक कारगर बना रहे इसके लिए किसानों को समय समय पर कृषि यंत्रों के मरम्मत का कार्य कराकर उसका देखभाल हमेशा करते रहना चाहिये। उन्होंने कहा कि मौजूदा समय के किसान खेतीबाड़ी में अधिक से अधिक कृषि यंत्रों का उपयोग कर न सिर्फ समय, लागत और श्रम की बचत कर पा रहे है। बल्कि समय से फसलों की बुआई कर वे अधिक से अधिक उत्पादन भी प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि किसानों को कृषि यंत्रों का रख-रखाव ऐसे तो सालों भर करने की जरूरत होती है परंतु खरीफ के मौसम में जब वातावरण में अत्यधिक नमी हो, बारिश की वजह से मिट्टी गीली हो और खेतों में खरपतवार की मात्रा अधिक हो तो कृषि यंत्रों पर बेहद प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इस परिस्थिति में किसानों को मशीनों की विशेष देखभाल करनी पड़ती है। उन्होंने बताया कि खरीफ के मौसम में किसान रोटावेटर, हैप्पी सीडर, जीरो टिलेज, रोटो सीड ड्रिल, स्ट्रा रीपर, लैंड लेजर लेवलर आदि जैसे कृषि यंत्रो का प्रयोग खूब करते हैं। किसानों को खेतीबाड़ी में इन सभी कृषि यंत्रों को उपयोग करने के बाद उसकी सफाई बेहतर ढंग से करनी चाहिए। उन्होंने बताया कि ट्रैक्टर रखने वाले किसान समय-समय पर ट्रैक्टर के ब्रेक, तेल का स्तर, फिल्टर आदि को चेक करते रहें। उन्होंने कहा कि कृषि यंत्रों के प्रयोग के बाद उसे अच्छी तरह धोना चाहिए। यदि आवश्यक हो तो किसान मिट्टी के तेल का प्रयोग भी कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि इसके अलावे किसान समय समय पर अपने कृषि यंत्रों का ग्रीसिंग भी कराते रहें।

पशुपालन व मात्स्यिकी विकास मेला आयोजित

विश्वविद्यालय किसानों के साथ संवाद करेगा

मेले में पहुंचे डिप्टी सीएम को सम्मानित करते कुलपति।

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा की ओर से सोमवार को गांधी ऑडिटोरियम मोतिहारी में सम्मान समारोह सह कृषि, पशुपालन एवं मात्स्यिकी विकास मेला-2025 का आयोजन किया गया। यह जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के सूचना पदाधिकारी डॉ. कुमार राज्यवर्धन ने एक प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया कि तीन दिनों तक चलने वाले इस मेले में बिहार के उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, पूर्व सांसद और महाभारत के कृष्ण नितीश भारद्वाज, मोतिहारी के सांसद और पूर्व कृषि मंत्री राधा मोहन सिंह, गन्ना मंत्री कृष्णनंदन पासवान, पिछड़ा वर्ग मंत्री हरि सहनी, अनुसूचित जाति एवं जनजाति कल्याण मंत्री जनक चमार, मोतिहारी विधायक प्रमोद कुमार, राणा रणधीर सिंह, श्यामबाबू प्रसाद यादव, सुनीलमणि तिवारी, लालबाबू प्रसाद गुप्ता सहित अन्य गणमान्य लोगों ने हिस्सा लिया। इस अवसर पर समारोह को संबोधित करते हुए कुलपति डॉ.पीएस पांडेय ने कहा कि पशुपालन और मत्सियकी के क्षेत्र में बिहार में अपार संभावनाएं हैं। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय देशी नस्लों के विकास को लेकर लगातार सक्रिय प्रयास कर रहा है। इसके कारण भ्रूण प्रत्यारोपण तकनीक के द्वारा एक सौ से अधिक शाहीवाल नस्ल की बछियों का जन्म कराया गया है। उन्होंने कहा कि इस मेले से पशुपालकों और मछली पालकों में और जागरूकता आयेगी।

Dainik Bhaskar 03-09-2025

विश्वविद्यालय ने किया कृषि पशुपालन एवं मत्स्यिकी विकास मेला-2025 का आयोजन

उद्‌घाटन करते अतिथि व अन्य।

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय की ओर से मोतिहारी के गांधी ऑडिटोरियम, में आयोजित कृषि पशुपालन एवं मत्स्यिकी विकास मेला-2025 का शुभारंभ उपस्थित अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर किया जिसमें बिहार के उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, पूर्व सांसद और महाभारत में कृष्ण की भूमिका निभाने वाले नितीश भारद्वाज, मोतिहारी के सांसद और पूर्व कृषि मंत्री राधा मोहन सिंह, गन्ना मंत्री कृष्णनंदन पासवान, पिछड़ा वर्ग मंत्री हरि सहनी, मोतिहारी के विधायक प्रमोद कुमार, राणा रणधीर सिंह, श्यामबाबू प्रसाद यादव, सुनीलमणि तिवारी, लालबाबू प्रसाद गुप्ता, और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इसमें उपस्थित विवि के कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने कहा कि पशुपालन और मत्सियकी के क्षेत्र में बिहार में अपार संभावनाएं है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय देशी नस्लों के विकास को लेकर लगातार सक्रिय प्रयास कर रहा है। जिसके कारण भ्रुण प्रत्यारोपण तकनीक के द्वारा एक सौ से अधिक शाहीवाल नस्ल की बाछियों का जन्म कराया गया है। उन्होंने कहा कि इस मेला से पशुपालकों और मछली पालकों में और जागरूकता आयेगी। उन्होंने ने कहा कि विश्वविद्यालय किसानों के साथ संवाद के लिए अलग अलग जगह किसान मेला आयोजित कर रह है। इस दौरान किसानों और पशुपालकों को कृषि से जुड़े नवीनतम तकनीक और योजनाओं से अवगत कराया गया । इस दौरान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न संगठनों व मदर डेयरी एवं अन्य संगठनों ने भी भाग लिया और अपनी सहभागिता दिखाई वहीं किसानों के साथ संवाद किया। वहीं इस दौरान किसानों व पशुपालकों को सम्मानित भी किया गया।

Rashtriya Sahara 03-09-2025

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बेहतर प्रदर्शन की जरूरत : कुलपति

प्रतिनिधि,पूसा

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा ने एनआइआरएफ रैंकिंग में 24 वां रैंक हासिल किया है. जबकि केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालयों की श्रेणी में पहला स्थान प्राप्त किया है. 2024 में विश्वविद्यालय की रैंक 29 था. कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय की रैंक पिछले दो वर्षों से लगातार अच्छी हो रही है. बेहतरी के लिए और कार्य काम करना है. अंतरराष्ट्रीय स्तर की रैंकिंग के लिए और बेहतर प्रयास करने के लिए वैज्ञानिकों व कर्मियों को प्रेरित किया. कुलसचिव डॉ मृत्युंजय कुमार ने कहा कि विश्वविद्यालय पिछले तीन वर्षों से लगातार नये नये मुकाम हासिल कर रहा है. निदेशक अनुसंधान डॉ एके सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय में अनुसंधान की गुणवत्ता में तीव्र सुधार हुआ है. निदेशक शिक्षा डा उमाकांत बेहरा ने कहा कि विश्वविद्यालय के छात्र अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहे हैं.

प्रभात खबर
Friday, September 5, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68b9d23d97f0435151097763

भास्कर 5/9/25 पेज 19

खेती-किसानी • वैज्ञानिक तकनीक से लगाया गया केला किसानों को देगा तिगुना लाभ, काफी फायदा होगा

केला उत्पादन में रुचि रखने वाले किसान 15 सितंबर से पहले करें केले की रोपाई

भास्कर न्यूज | पूसा

उत्तर भारत खासकर बिहार में केला उत्पादन के क्षेत्र में रुचि रखने वाले किसान आगामी 15 सितंबर से पहले केले की रोपाई अवश्य कर लें। केला लगाने के लिए यह समय काफी उपयुक्त माना जाता हैं। इस समय वैज्ञानिक तकनीक से केले की रोपाई कर किसान दोगुना ही नहीं बल्कि तीन गुना अधिक उत्पादन और लाभ प्राप्त कर सकते हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के पादप रोग विभाग के हेड एवं केला अनुसंधान संस्थान गोरौल के प्रभारी डॉ. संजय कुमार सिंह ने दी है। उन्होंने बताया कि इस समय लगाया गया केला का बागबानी किसानों के लिए जहां अधिक फायदेमंद होगा तो वहीं, 15 सितंबर के बाद केले की रोपाई करने पर ठंड और धुंध के कारण पौधे कमजोर पड़ जाते हैं जिससे पैदावार कम हो जाती हैं। केला गर्म और नमी वाले जलवायु में अच्छा होता है। 15 से 35 डिग्री तापमान केले की खेती के लिए अनुकूल हैं। केले का पौधा ठंड में पाले और तेज हवा को नहीं झेल पाता। हल्की रेतीली दोमट मिट्टी जिसमें पानी का अच्छा निकास हो केले की खेती के लिए सबसे उपयुक्त होता हैं। किसान भारी या दलदली मिट्टी में केला लगाने से बचें। कृषि वैज्ञानिक ने बताया केला लगाने से पूर्व किसान खेत से खरपतवार को साफ कर उसकी गहरी जुताई कराएं। खेत में प्रति हेक्टेयर 10 से 15 टन गोबर की खाद डाले। खेत में जहां पानी लगता हो वहां नालियां व ऊंची क्यारियां बनवाकर केला लगाएं।

नर्सरी में रखा केला का पौधा।

रोग से बचाने के लिए बाग की साफ-सफाई जरूरी है

बताया कि केले के तना में लगने वाला घुन, एफिड और नेमाटोड मुख्य कीट हैं। जबकि केले का प्रमुख रोग पनामा विल्ट, सिगाटोका लीफ स्पॉट और बनाना बंची टॉप है। इन सभी कीट व रोग से केले को बचाने के लिए किसानों को रोग मुक्त पौधे लगाने चाहिए। बाग में हमेशा साफ सफाई रखनी चाहिए। अगर बाग में कोई रोग लग जाएं तो संक्रमित पौधे को हटाते रहने चाहिए। किसानो को नीम आधारित उत्पाद और जैविक उपायो को भी अपनाना चाहिए।

किसान केले की कौन सी किस्मों का करें चयन, इसके बारे में भी जानकारी दी गई

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि उत्तर भारत के किसान व्यवसायिक रूप से केले की खेती करने के लिए ग्रांड 9, ड्वार्फ कैवेंडिस आदि की खेती कर सकते हैं। इसके अलावे स्थानीय बाजारों के अनुरूप किसान केले के स्वादिष्ट व स्थानिय किस्मों जैसे मालभोग, चिनिया, चीनी चंपा, कांथाली, अल्पना की खेती करते हैं। इन सबके अलावे किसान केले की सब्जी के लिए कोठिया व साबा बतीसा की खेती कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि सबसे अच्छा है कि किसान टिशू कल्चर पौधे लगाए जो रोग मुक्त और सामान वृद्धि वाले होते हैं। यदि केले का सकर लें तो केवल मजबूत एवं स्वोर्ड सकर का ही उपयोग करें। उन्होंने बताया कि केला लगाने के लिए किसानों को पौधे के बीच की दूरी 2 गुने 2 मीटर रखनी चाहिए। इसके अलावे 60 गुने 60 गुने 60 सेंटीमीटर का गड्ढा खोदकर उसमें गोबर की खाद, नीम की खली गड्ढे में भरकर उसे कुछ दिनों के लिए छोड़ दें। बाद में उस गड्ढे में केले का पौधा लगाएं। उ पौधा लगाने के दौरान पौधे का प्रकंद मिट्टी की सतह से 5 सेमी नीचे होना चाहिए। उन्होंने बताया कि केला नमी चाहता है लेकिन जल भराव से खराब हो जाता हैं। ऐसी स्थिति में ड्रिप सिंचाई तकनीक का इस्तेमाल करें।

एनआइआरएफ रैंकिंग में डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय को 14वां स्थान

विश्वविद्यालय पहले 29वें स्थान पर था, कुलपति ने इसे नई ऊंचाइयों तक ले जाने की बात कही

संस, जागरण● पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा ने नेशनल इंस्टीट्यूशन रैंकिंग फ्रेमवर्क (एनआइआरएफ) द्वारा गुरुवार को जारी रैंकिंग में देश भर के कृषि एवं संबद्ध विश्वविद्यालयों में 14वां स्थान प्राप्त किया है। केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालयों की श्रेणी में पहला स्थान प्राप्त किया है। इसी तरह पूर्वी भारत के सभी कृषि विश्वविद्यालयों में भी डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय को प्रथम स्थान मिला है। 2024 में विश्वविद्यालय की रैंकिंग 29 थी। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने एनआइआरएफ की रैंक जारी की।

कुलपति ने परिणाम को बताया उत्साहजनक : कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि विश्वविद्यालय की रैंक पिछले दो वर्षों से लगातार अच्छी हो रही है। यह उत्साहजनक है। विश्वविद्यालय की प्रगति में शिक्षक, वैज्ञानिक, कर्मचारी, छात्र

विश्वविद्यालय का प्रशासनिक भवन● जागरण

सबका योगदान है। पिछले कई वर्षों की तुलना में यह रैंक काफी अच्छा है, लेकिन हमें और बेहतर करने के लिए कार्य करना है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय देश ही नहीं, अंतरराष्ट्रीय स्तर की रैंकिंग में भी अच्छा प्रदर्शन करे। इसके लिए सबको मिलकर कार्य करने की आवश्यकता है। एनआइआरएफ रैंकिंग में विश्वविद्यालय के बेहतर प्रदर्शन से सभी शिक्षकों, वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों में उत्साह है।

गुणवत्ता के आधार पर मिलती है रैंकिंग: एनआइआरएफ रैंकिंग भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा देश के विश्वविद्यालय और कालेजों को उनकी गुणवत्ता और प्रदर्शन के आधार पर प्रदान किया जाता है। इसमें विश्वविद्यालयों की शिक्षा, अनुसंधान, विद्यार्थियों की सफलता, समावेशिता आदि विभिन्न मापदंड रहते हैं।

भारत सरकार ने एनडीआरएफ रैंकिंग की शुरुआत 2015 में की थी। एनआइआरएफ रैंकिंग को लेकर बनाई गई कमेटी के चेयरमैन डा. पीपी श्रीवास्तव थे। कुलसचिव डा. मृत्युंजय कुमार ने कहा कि विश्वविद्यालय पिछले तीन वर्षों से लगातार नए-नए मुकाम हासिल कर रहा है। निदेशक अनुसंधान डा. एके सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय में अनुसंधान की गुणवत्ता में तेजी से सुधार हुआ है। अब सभी अनुसंधान किसानों एवं आम लोगों के हित को ध्यान में रखकर किया जा रहा है। निदेशक शिक्षा डा. उमाकांत बेहरा ने कहा कि विश्वविद्यालय के छात्र देश ही नहीं, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहे हैं।

Dainik Jagran 06-09-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 7 सितंबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया है कि पूर्वानुमानित अवधि में मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। इस बीच गर्मी व उमस जारी रहेगी। समस्तीपुर स्थित डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय द्वारा जारी पूर्वानुमान के अनुसार किसानों को सूखे से राहत मिलने की संभावना नहीं दिख रही है। अधिकतम तापमान में एक से दो डिग्री वृद्धि होने की संभावना है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
05 सितंबर	31.0	26.0
06 सितंबर	31.5	26.0
दरभंगा		
05 सितंबर	31.5	26.0
06 सितंबर	31.5	26.2
पटना		
05 सितंबर	33.0	27.0
06 सितंबर	33.0	27.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 06-09-2025

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय ने एनआइआरएफ रैंकिंग में हासिल की चौदहवी रैंक

समस्तीपुर (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा ने एनआइआरएफ रैंकिंग में फिर से एक बार ऊंची छलांग लगाई है। चार सितंबर को जारी हुए रैंकिंग में वि ववविद्यालय ने देश भर के कृषि एवं संबद्ध वि ववविद्यालयो में चौदहवीं रैंक हासिल

केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालयों की श्रेणी में मिला पहला स्थान, कुलपति नें इसे सामूहिक प्रयासों का बताया परिणाम, जतायी खुशी

की है, जबकि केंद्रीय कृषि वि ववविद्यालयों की श्रेणी में पहला स्थान प्राप्त किया है। इसी तरह पूर्वी भारत के सभी कृषि विश्वविद्यालयों में भी डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि वि ववविद्यालय को प्रथम स्थान हासिल हुआ है। 2024 में वि ववविद्यालय की रैंक 29 वीं थी। आज भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने एनआइआरएफ की रैंक जारी की है। कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने कहा कि वि ववविद्यालय की रैंक पिछले दो वर्षो से लगातार अच्छी हो रही है। यह उत्साहजनक है। उन्होंने कहा कि वि ववविद्यालय में शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार के क्षेत्र में तेजी

पूसा स्थित डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय।

से सुधार हो रहा है। उन्होंने कहा कि वि ववविद्यालय की प्रगति में शिक्षक, वैज्ञानिक, कर्मचारी, छात्र छात्राएं सबका योगदान है। उन्होंने कहा कि यह रैंक पिछले कई वर्षो की तुलना में काफी अच्छा है लेकिन हमें और बेहतर करने के लिए कार्य करना है। उन्होंने कहा कि वे चाहते है कि वि ववविद्यालय को देश ही नहीं बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर की रैंकिंग में भी अच्छा प्रदर्शन करे। उन्होंने कहा कि इसके लिए सबको मिलकर कार्य करने की आवश्यकता है। एनआइआरएफ रैंकिंग में वि ववविद्यालय के बेहतर प्रदर्शन से सभी शिक्षकों, वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों में उत्साह का माहौल है और बेहतर रैंकिंग को लेकर लोगों ने एक दूसरे को बधाई और शुभकामनाएं दी।

कुलसचिव डॉ मृत्युंजय कुमार ने कहा कि विश्वविद्यालय पिछले तीन वर्षो से लगातार नये नये मुकाम हासिल कर रहा है। निदेशक अनुसंधान डॉ एके सिंह ने कहा कि वि ववविद्यालय में अनुसंधान की गुणवत्ता में तीव्र सुधार हुआ है और अब लगभग सभी अनुसंधान किसानों एवं आम लोगों के हित को ध्यान में रखकर किया जा रहा है। इसी का परिणाम है कि पिछले तीन साल में वि ववविद्यालय को तेरह से अधिक पेटेंट प्रदान किए गये है। निदेशक शिक्षा डा0 उमाकांत बेहरा ने कहा कि वि ववविद्यालय के छात्र देश ही नहीं बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहे है।

उन्होंने कहा कि शिक्षा किसी भी वि ववविद्यालय का मूल आधार होता है जिसमें काफी सुधार हुआ है। उन्होंने कहा कि वि ववविद्यालय के कुलपति छात्रों के समग्र विकास को लेकर सतत प्रयत्नशील है। वि ववविद्यालय का दीक्षारंभ कोर्स एक अनूठी पहल है जो विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में अहम योगदान देता है। इसकी खूबियों को देखते हुए सरकार ने अब इसे सभी वि ववविद्यालयों में लागू कर दिया है। बता दें कि एनडीआरएफ रैंकिंग भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा देश के वि ववविद्यालयो और कालेजों तो उनकी गुणवत्ता और प्रदर्शन के आधार पर प्रदान किया जाता है। इसमें वि ववविद्यालयों को शिक्षा , अनुसंधान, विद्यार्थियों की सफलता, समावेशिता आदि विभिन्न मापदंडो् के अनुसार रैंक प्रदान किया जाता है। भारत सरकार ने एनडीआरएफ रैंकिंग की शुरुआत 2015 में की थी।

भास्कर 6/9/25 पेज 17

पपीता के फलों पर काला धब्बा रोग का प्रकोप बढ़ा, संकट

कृषि : डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के वरीय कृषि वैज्ञानिक ने रोग से बचाव को लेकर दी जानकारी, इससे कम होगा नुकसान

भास्कर न्यूज़ | पूसा

पपीते में लगने वाला काला धब्बा रोग पपीते के पौधों के लिए काफी घातक और विनाशकारी है। आमतौर पर पहले यह रोग पपीते के लिए महज एक छोटी सी समस्या थी। परंतु साल दर साल वातावरण में हो रहे बदलाव के कारण आज यह रोग एक गंभीर समस्या बनकर हमारे सामने उभर चुका है। पपीता उत्पादक किसान कृषि वैज्ञानिकों के महत्वपूर्ण सलाह को अपनाकर इस रोग से पपीते के पौधों और बागों को बचा सकते हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक, पादप रोग

काला धब्बा रोग ।

विभाग के हेड व केला अनुसंधान केंद्र गोरौल के प्रभारी डॉ. संजय कुमार सिंह ने दी है। उन्होंने कहा कि पपीते में लगने वाला यह रोग एस्परस्पोरियम कैरिका नामक कवक द्वारा होता है जिसे पहले सेरकॉस्पोरा कारिकाई के नाम से भी जाना जाता था। यह रोग भारत के अलावे अफ्रीका, उत्तर, दक्षिण और मध्य अमेरिका, कैरिबियन, ओशिनिया, ऑस्ट्रेलिया, फिजी, फ्रेंच पोलिनेशिया, न्यू कैलेडोनिया और सोलोमन द्वीप आदि देशों में भी पाया गया हैं। उन्होंने कहा कि इस रोग का मुख्य मेजबान पपीता के पौधे ही है। उन्होंने बताया कि बिहार की कृषि जलवायु से जुड़े परिस्थितियों में यह रोग पहली बार वर्ष 2020 में देखने को मिला था। वर्ष 2021 से इस रोग में बढ़ोतरी देखने को मिल रही हैं। रोग बढ़ोतरी का मुख्य कारण वातावरण में अत्यधिक नमी का बनना हैं।

पपीता के काला धब्बा रोग का प्रबंधन

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि इस बीमारी का संक्रमण दिखाई पड़ने के बाद किसान फलों और पत्तियों के नीचे वाले हिस्से पर काले धब्बों की तलाश करें जहाँ बीजाणु उत्पन्न होते हैं। अत्यधिक धब्बे होने पर पेड़ों से पत्तियां सूखकर गिर जाती हैं या जल्दी मर जाती हैं। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि इस रोग के प्रबंधन के लिए यह अति आवश्यक है कि सर्वप्रथम किसान इसे विभिन्न शष्य विधियों द्वारा ही नियंत्रित करने का प्रयास करें। बागों से संक्रमित पत्तियों और फलों को तुरंत हटाते हुए उसे खेत से बाहर निकालकर जलाकर नष्ट दें। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि इस रोग को किसान कॉपर आक्सीक्लोराइड, मैन्कोजेब या क्लोरोथालोनिल नाम के दवाई का 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर पपीते के पौधों और जड़ो में छिड़काव कर इस रोग को आसानी से प्रबंधित कर सकते है।

रोग के मुख्य लक्षण और जीवन चक्र

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि यह रोग पपीता के पत्तियों पर पीले रंग के धब्बे बनने के साथ ही उभरता हैं। यदि पत्तियां इस बीमारी से गंभीर रूप से संक्रमित होती हैं तो पत्तियां भूरे रंग में बदल जाती हैं और वह मर जाती हैं। पपीते के फल पर भी इसके धब्बे भूरे से काले और थोड़े धंसे हुए दिखाई पड़ते हैं। पत्तियों के नीचे छुपे इस रोग के बीजाणु हवा चलने पर इधर उधर फैल जाते हैं। बाजारों में फलों को तोड़कर बेचने के लिए ले जाने के दौरान भी इस रोग का प्रसार लंबी दूरी तक होता है। कृषि वैज्ञानिक ने बताया इस रोग के लगने के बाद पपीते की पत्तियां गिरने लगती है तथा इससे पेड़ों की वृद्धि बुरी तरह प्रभावित हो जाती है। स्वस्थ पेड़ों की तुलना में इस बीमारी से ग्रसित पेड़ बेहद कम फल देने लगते हैं। पेड़ों पर लगने वाले युवा फल भी संक्रमण के कारण जहां नीचे गिर जाते हैं।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 10 सितंबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में बादल आ सकते हैं। इस अवधि में कहीं-कहीं हल्की वर्षा हो सकती है। इस बीच गर्मी व उमस जारी रहेगी। समस्तीपुर स्थित डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के द्वारा जारी पूर्वानुमान के अनुसार किसानों को सूखे से हाल फिलहाल राहत मिलने की संभावना नहीं दिख रही है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
06 सितंबर	33.8	25.8
07 सितंबर	33.0	25.8
दरभंगा		
06 सितंबर	33.0	25.8
07 सितंबर	33.0	25.0
पटना		
06 सितंबर	34.6	26.0
07 सितंबर	34.6	26.0

डिग्री सेल्सियस में

दैनिक जागरण 7/9/23 पेज 3

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 10 सितंबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में बादल आ सकते हैं। इस अवधि में कहीं-कहीं हल्की वर्षा हो सकती है। इस बीच गर्मी व उमस जारी रहेगी। समस्तीपुर स्थित डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के द्वारा जारी पूर्वानुमान के अनुसार किसानों को सूखे से हाल फिलहाल राहत मिलने की संभावना नहीं दिख रही है।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 10 सितंबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में बादल आ सकते हैं। इस अवधि में कहीं-कहीं हल्की वर्षा हो सकती है। इस बीच गर्मी व उमस जारी रहेगी। समस्तीपुर स्थित डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के द्वारा जारी पूर्वानुमान के अनुसार किसानों को सूखे से हाल फिलहाल राहत मिलने की संभावना नहीं दिख रही है।

Dainik Jagran08-09-2025

किसानों ने किया विवि का एक्सपोजर विजिट

वैज्ञानिकों के साथ किसान प्रतिभागी.

पूसा. डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों का सोमवार को कृषि विज्ञान केंद्र पिपरा कोठी से समेकित पोषक तत्व प्रबंधन 40 किसानों का एक्पोजर विजिट हुआ. प्रतिभागियों की टीम विवि स्थित प्रसार शिक्षा निदेशालय पहुंचकर वैज्ञानिक डॉ बिनीता सतपथी एवं वैज्ञानिक फूलचंद से ज्ञानवर्धन किया. केंद्रीय विवि के अलग-अलग यूनिट में प्रतिभागियों का ज्ञानवर्धन कराया गया. कार्यक्रम का संचालन डॉ अरविंद कुमार सिंह की अध्यक्षता में किया गया. मौके पर गौरव कुमार, रणधीर कुमार सिंह आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Tuesday, September 9, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68bf279d0eb6aa511b4dcb9f

राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के अंतर्गत पांच दिवसीय प्रशिक्षण शुरू

प्राकृतिक खेती आधुनिक समय की मांग, इसपर ध्यान दें : कुलपति

आयोजन

प्रतिनिधि,पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय में सोमवार को कृषि सखियों के लिए राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के अंतर्गत पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ. उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने प्राकृतिक खेती की महत्ता पर विशेष बल दिया. कहा कि प्राकृतिक खेती वैदिक काल से चली आ रही परंपरा है. समय के साथ रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक प्रयोग ने हमारी भूमि की उपजाऊ शक्ति को नष्ट कर दिया है. अब समय आ गया है कि हम अपनी धरती को पुनर्जीवित करें. प्राकृतिक खेती की ओर पुनः लौटें. कुलपति ने कृषि सखियों की भूमिका को भविष्य की दिशा दिखाने वाली बताते हुए कहा कि आज की ये कृषि सखियां कल की प्राकृतिक खेती की पथप्रदर्शक बनेंगी. कृषि क्षेत्र में नई क्रांति लायेंगी. साथ ही उन्होंने प्राकृतिक खेती विद्यालय के स्नातक छात्रों को भी इस दिशा में आगे आने का आह्वान किया. आशा व्यक्त की कि यही छात्र भविष्य में प्राकृतिक खेती के विज्ञान को विश्व स्तर पर प्रचारित और प्रसारित करेंगे. इस अवसर पर कार्यक्रम में कई विशिष्ट अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति रही. मौके पर डीन पीजीसीए डॉ. मयंक राय, डीआर डॉ. एके सिंह, डीएओ डॉ. सुमित सौरव, डॉ. पीपी श्रीवास्तव, डॉ. उषा सिंह, डॉ. यूके बेहरा, डॉ. आरके झा, डॉ. एसपी सिंह मौजूद थे. कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. शंकर झा ने किया. संचालन डॉ. सौरभ तिवारी ने किया. धन्यवाद ज्ञापन डॉ. एसएस प्रसाद ने प्रस्तुत किया. यह पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम न केवल प्रतिभागी कृषि सखियों को प्राकृतिक खेती की बारीकियों से अवगत करायेगा, बल्कि उन्हें ग्राम स्तर पर टिकाऊ और रसायन-मुक्त खेती के लिए एक सशक्त परिवर्तनकर्ता के रूप में तैयार करेगा.

संबोधित करते कुलपति डा पीएस पांडेय .

प्रभात खबर
Tuesday, September 9, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68bf279d0eb6aa511b4dcb9f

बिहार की भूमि की फर्टिलिटी बेहतर : डॉ मुखर्जी

प्रतिनिधि,पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में रबी फसलों के विशेष संदर्भ में पौध संरक्षण में हालिया प्रगति विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ. अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ यू. मुखर्जी ने कहा कि बिहार की भूमि का फर्टिलिटी दूसरे राज्यों की अपेक्षा बेहतर है. देश में बढ़ती हुई आबादी के दौर में भारत चाइना को पीछे छोड़ते हुए एक सौ 40 करोड़ से अधिक जनसंख्या के स्तर को पार कर रही है. एक समय था जब खाद्यान्नों का आयात करने पर भी देश की आबादी को भर पेट भोजन नसीब नहीं हुआ करता था. आज कृषि को मुकाम देते हुए बेहतर अनुसंधान एवं नवीनतम तकनीकों के बदौलत सर्वोत्तम कृषि के रूप में परिलक्षित होकर अपने देश से दूसरे देशों में खाद्यान्न निर्यात किया जा रहा है.

संबोधित करते वैज्ञानिक डॉ यू. मुखर्जी .

उन्होंने कहा कि अन्य राज्यों में उत्पादन क्षमता को एक मानक से अधिक बढ़ा नहीं सकते हैं. जबकि बिहार की मिट्टी में अधिक से अधिक उत्पादन लेने की क्षमता उपलब्ध है. फसलों में उत्पादन के दौरान होने वाले नुकसान को कम करने की जरूरत है. इससे उत्पादन दर में स्वतः वृद्धि दर्ज संभव हो सकता है. वैज्ञानिक डॉ फूलचंद ने कहा कि किसान वैज्ञानिक विधि से फसलों का उत्पादन करते हैं. उसमें भी 15 से 20 प्रतिशत का नुकसान हो ही जाता है. किसान नुकसान को रोक नहीं पाते हैं. इसमें फसल लगाने से पहले एवं बाद में खेतों में कीट, रोग-व्याधियों का उपचार करने पर फसलों को नुकसान से बचाया जा सकता है. संचालन प्रसार शिक्षा उप निदेशक प्रशिक्षण डॉ बिनीता सतपथी ने किया. धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डा संजीव कुमार ने दिया. मौके पर बिहार के पांच जिले के किसान सहित टेक्निकल टीम के सुरेश कुमार, सूरज कुमार, विक्की आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Tuesday, September 9, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68bf279d0eb6aa511b4dcb9f

भास्कर 9/3/25 पेज 12

कृषि में बेहतर अनुसंधान व नवीनतम तकनीकों की बदौलत आज निर्यात बढ़ा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में कार्यक्रम आयोजित

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के संचार केंद्र स्थित पंचतंत्र सभागार में रबी फसलों के विशेष संदर्भ में पौध संरक्षण के क्षेत्र में हुई हालिया प्रगति के विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण की शुरूआत हुई। इसकी अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. यू मुखर्जी ने कहा कि देश में बढ़ती आबादी के दौर में प्राप्त हो रहे आंकड़ों के अनुसार भारत ने चाइना को पीछे छोड़ एक सौ 40 करोड़ से अधिक जनसंख्या के स्तर को पार कर लिया है। हालांकि उन्होंने कहा कि एक समय था जब खाद्यान्न का आयात करने पर भी देश की आबादी को भर पेट भोजन नसीब नहीं होता था। लेकिन आज कृषि में हो रहे बेहतर अनुसंधान और नवीनतम तकनीकों के बदौलत किसान इतना उत्पादन प्राप्त कर रहे हैं की वे अपने देश से दूसरे देशों में भी खाद्यान्न निर्यात कर रहे है। वैज्ञानिक डॉ. फूलचंद ने कहा कि किसान वैज्ञानिक विधि से तो फसलों का उत्पादन करते है लेकिन उसमें भी 15 से 20 प्रतिशत का नुकसान हो ही जाता है। किसान नुकसान को रोक नहीं पाते है। इसमें फसल लगाने से पहले एवं बाद में खेतों में कीट रोग व्याधियों का उपचार समय से करने पर फसलों को नुकसान से बचाया जा सकता है। संचालन प्रसार शिक्षा उप निदेशक प्रशिक्षण डॉ. बिनीता सतपथी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डा. संजीव कुमार ने किया। मौके पर बिहार के पांच जिले से पहुंचे प्रशिक्षणार्थियों के अलावे टेक्निकल टीम के सुरेश कुमार, सूरज कुमार, विक्की आदि मौजूद थे।

प्रशिक्षण को संबोधित करते डॉ. मुखर्जी।

तोरिया उत्तम आय का है जरिया, होगा मुनाफा

प्रिय अन्नदाता,

बिहार के अन्नदाता तोरिया की खेती कर अच्छा उत्पादन व बेहतर मुनाफा कमा सकते है। तोरिया क्रूसीफेरी परिवार तथा ब्रेसिका वंश की फसल है। तोरिया खरीफ एवं रबी के मध्य में उगाई जाने वाली महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है। खाद्य तेल के अतिरिक्त इसका उपयोग वनस्पति घी बनाने, बालों में लगाने शरीर की मालिश, औषधि निर्माण, साबुन निर्माण दीपक जलाने, ग्रीस निर्माण, प्लास्टिक निर्माण, चमड़ा उद्योग आदि में प्रयोग किया जाता है। इसके हरे पौधे का प्रयोग हरे साग के रूप में, पशुओं के चारे के रूप में, मृदा कटाव रोकथाम के लिए तथा हरी खाद के लिए किया जाता है। इसके बीज का प्रयोग आचार, मसले, करी पावडर तथा उबटन बनाने के लिए प्रयोग करते हैं। इसके तेल का उपयोग सब्जियों को पकाने, तलने, छानने के अतिरिक्त आचार निर्माण में भी किया जाता है। तेल निकलने के उपरान्त प्राप्त खली का उपयोग पशुओं को खिलने तथा खाद के रूप में किया जाता है। नरकटियागंज कृषि विज्ञान केंद्र के कृषि वैज्ञानिक डॉ आरपी सिंह ने बताया कि इसकी खेती बलुअर से लेकर बलुअर दोमट भूमियों में की जा सकती है। तोरिया का पौधा क्षारीयता के उच्च स्तर के प्रति सहिष्णु है। एक जुताई मिट्टी पलट हल से करने के बाद 2-3 जुताई देशी हल या कल्टीवेटर से करके आवश्यकतानुसार पाटा लगाकर मिटटी को भुरभुरी व समतल कर लेते हैं।

डॉ आरपी सिंह,
कृषि वैज्ञानिक सह अध्यक्ष,
कृषि विज्ञान केंद्र,
नरकटियागंज

तोरिया की छह प्रमुख प्रजातियां

किस्म का नाम	परिपक्वता (दिन)	उत्पादन (कु./हे.)
▪ टी. 9 (काली)	90 - 95	12 - 15
▪ भवानी	75 - 80	10 - 12
▪ टी. 36 (पीली)	95 -100	10 -12
▪ पी. टी. 303	90 - 95	15 - 18
▪ पी. टी. 30	90 - 95	14 -16
▪ पी. टी. 507	85 - 90	14 -18
▪ नरेन्द्र अगेती राई - 4	95 - 100	15 - 20

नोट - आप खेती-किसानी से जुड़े किसी विषय पर जानकारी चाहते हैं तो व्हाट्सएप नंबर 95324 60717 पर सिर्फ मैसेज करें।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 10 सितंबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में बादल आ सकते हैं। इस अवधि में कहीं- कहीं हल्की वर्षा हो सकती है। इस बीच गर्मी व उमस जारी रहेगी। समस्तीपुर स्थित डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के द्वारा जारी पूर्वानुमान के अनुसार किसानों को सूखे से हाल फिलहाल राहत मिलने की संभावना नहीं दिख रही है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
09 सितंबर	33.0	27.0
10 सितंबर	33.5	27.0
दरभंगा		
09 सितंबर	33.5	27.0
10 सितंबर	33.5	27.5
पटना		
09 सितंबर	34.6	28.0
10 सितंबर	34.6	28.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 09-09-2025

प्रशिक्षण | डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि में राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के तहत कृषि सखियों का पांच दिवसीय प्रशिक्षण शुरू

खेती के विस्तार में कृषि सखियां बनेंगी पथ प्रदर्शक : वीसी

पूसा, निज संवाददाता। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के कुलपति डॉ पीएस पाण्डेय ने कहा कि प्राकृतिक खेती वैदिक काल से चली आ रही परंपरा है। समय के साथ रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक प्रयोग से भूमि की उर्वराशक्ति कमजोर हो रही है। ऐसे में धरती को पुनर्जीवित करने के साथ प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना समय की मांग है। वे सोमवार को विवि के पंचतंत्र के सभागार में कृषि सखियों को संबोधित कर रहे थे। मौका था राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के तहत कृषि सखियों के पांच दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र का। उन्होंने कहा कि कृषि क्षेत्र में लगातार हो रहे बदलाव के दौर में प्रशिक्षण ले रही कृषि सखियां कल की प्राकृतिक खेती की पथ प्रदर्शक बनकर कृषि को नई दिशा देंगी। जो कृषि क्रांति लाने में अहम भूमिका निभाएगा। उन्होंने प्राकृतिक खेती विद्यालय के स्नातक छात्रों को भी इस दिशा में आगे आने का आह्वान किया। मौके पर डीन डॉ मयंक राय, डॉ पीपी श्रीवास्तव, डॉ. उषा सिंह, निदेशक अनुसंधान डॉ अनिल कुमार सिंह, निदेशक शिक्षा डॉ. यूके बेहरा, डॉ. आरके झा, डॉ एसपी सिंह व अन्य वैज्ञानिक मौजूद थे। स्वागत करते हुए प्राकृतिक खेती स्कूल के समन्यवक डॉ शंकर झा ने कहा कि प्रशिक्षण के दौरान प्राकृतिक खेती की बारीकियों के अलावा उन्हें ग्राम स्तर पर टिकाऊ व रसायनमुक्त खेती के लिए एक मजबूत परिवर्तनकर्ता के रूप में तैयार किया जाएगा।

सोमवार को कृषि विवि पूसा प्रशिक्षार्थी व वैज्ञानिकों के साथ कुलपति व अन्य।

आबादी व खेती को लाभकारी व चुनौती को दूर करने को नवीनतम तकनीक जरूरी

पूसा, निज संवाददाता। डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ उदयन मुखर्जी ने कहा कि लगातार बढ़ रही आबादी देश के लिए चुनौती है। ऐसे में नवीनतम शोध व तकनीकों से खाद्यान्न उत्पादन में देश रिकॉर्ड बना रहा है। अनाजों का निर्यात किया जा रहा है। इसे टिकाऊ बनाए रखने के लिए वैज्ञानिकों के साथ किसानों को भी नई शोध व तकनीकों से अपडेट रहना जरूरी है। जिससे खेती की लागत कम कर कृषि को लाभकारी बनाए जाने की चुनौती को दूर किया जा सके। इसको लेकर कृषि विवि लगातार प्रयासरत है। जिसे गति देने में सरकार हरसंभव प्रयास में जुटी है। वे सोमवार को विवि के पंचतंत्र सभागार में किसानों को संबोधित कर रहे थे। मौका था पौध संरक्षण में हालिया प्रगति विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन समारोह का। वैज्ञानिक डॉ फूलचंद ने कहा कि वैज्ञानिक तकनीकों से खेती कर किसान अपनी आमदनी को अधिक बढ़ा सकते हैं। उन्होंने परंपरागत खेती के साथ खेती के अन्य विकल्पों को भी जमीन पर उतारने की अपील की। संचालन प्रसार शिक्षा उप निदेशक प्रशिक्षण डॉ बिनीता सतपथी ने एवं धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डा संजीव कुमार ने किया।

Hindustan 09-09-2025

प्राकृतिक खेती की ओर लौटने की जरूरत : कुलपति

पूसा (एस एन बी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय में कृषि सखियों के लिए राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के तहत पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसका शुभारंभ वि वि के कुलपति डॉ पी एस पांडेय एवं आगत अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर किया। जो आगामी 12 सितम्बर तक चलेगा। इस अवसर पर कुलपति ने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि प्राकृतिक खेती वैदिक काल से चली आ रही परंपरा है। समय के साथ रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक प्रयोग ने हमारी भूमि की उपजाऊ शक्ति को नष्ट कर दिया है। अब जरूरत है हम अपनी धरती को पुनर्जीवित करें और प्रा.तिक खेती की ओर पुनः लौटने की। उन्होंने ने कृषि सखियों की भूमिका को भविष्य की दिशा दिखाने वाली बताते हुए कहा कि आज की ये कृषि सखियाँ कल की प्रा.तिक खेती की पथप्रदर्शक बनेंगी और कृषि क्षेत्र में क्रांति लाएँगी। साथ ही उन्होंने प्राकृतिक खेती विद्यालय के स्नातक छात्रों को भी इस दिशा में आगे आने का आह्वान किया और आशा व्यक्त कि छात्र भविष्य में प्राकृतिक खेती के विज्ञान को विश्व स्तर पर प्रचारित व प्रसारित करेंगे। क्रार्यक्रम का संचालन डॉ. सौरभ तिवारी ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन डॉ. एस. एस. प्रसाद ने इस अवसर पर स्नातकोत्तर कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ. मयंक राय,. निर्देशक अनुसंधान डॉ ए. के. सिंह, जिला कृषि पदाधिकारी, समस्तीपुर, डॉ सुमित सौरव अधिष्ठाता मात्स्यिकी महाविद्यालय डॉ पी पी श्रीवास्तव, अधिष्ठाता सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय डॉ उषा सिंह, निदेशक शिक्षा डॉ उ के बेहरा डॉ

संबोधित करते वीसी।

दैनिक भास्कर-10/9/2025 P-19

केले में लगने वाला कुकुम्बर मोजैक वायरस से उपज में आ रही कमी : कृषि वैज्ञानिक

कृषि : डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के पादप रोग विभाग के हेड वैज्ञानिक ने तकनीक को अपनाकर इस बीमारी की रोकथाम और प्रबंधन की सलाह दी

भास्कर न्यूज | पूसा

केले में लगने वाला कुकुम्बर मोजैक वायरस रोग केले की फसल के लिए काफी घातक हैं। यह बीमारी एक विषाणु जनित बीमारी है जो केले को भारी नुकसान पहुंचाती हैं। केला उत्पादक किसान वैज्ञानिक तकनीक को अपनाकर इस बीमारी का ससमय प्रबंधन करते हुए केले से बेहतर उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। ये जानकारी डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड डॉ. एसके सिंह ने दी। उन्होंने बताया कि केले के पौधों में कई विषाणु जनित बीमारियां लगती है जिसमें केला का बंची टॉप केला का ब्रैक्ट मोजैक (बीबीआरएमभी) केला का स्ट्रीक (बीएसभी) केला का कुकुम्बर मोजैक वायरस (सीएमभी) आदि बीमारियां शामिल है। उन्होंने बताया कि गत वर्ष महाराष्ट्र से जुड़े केले के बागानों में कुकुम्बर मोजैक वायरस रोग 60 प्रतिशत संक्रमण के साथ एक विकराल और गंभीर बीमारी के रूप में उभरकर सामने आया था। मौजूदा वर्ष की बात करें तो यह बीमारी देश के अन्य राज्यों से जुड़े केले के बागानों में भी देखने को मिली हैं। उन्होंने बताया कि केला उत्पादक किसान यह जानना चाहते है की आखिरकार इस रोग को आसानी से कैसे पहचाना जाएं और इसे कैसे प्रबंधित किया जाएं।

कुकुम्बर मोजैक वायरस से ग्रसित केले के पौधे।

सतर्कता जरूरी: किसान बागों की सतत निगरानी करें

उन्होंने बताया कि कुकुम्बर मोजैक वायरस रोग का संक्रमण केले के पौधे के विकास के दौरान किसी भी चरण में हो सकता है। इस रोग का लक्षण मुख्य रूप से पत्तियों पर ही दिखाई देता है। इस रोग के प्रारंभिक लक्षण में नसों के समानांतर निरंतर या बाधित धारियों के मोजैक जैसे पैटर्न का दिखाई देना है। इस रोग के लगने के बाद केले की पत्तियां धारीदार रूप में दिखाई देती है। उन्होंने बताया इस रोग में जहां केले के युवा पत्तियों का आकार छोटा हो जाता है। वहीं पुराने पत्तियों पर गलन के लक्षण काली और बैंगनी रेखाओं के रूप में दिखने लगते हैं और साथ ही साथ पत्तियां गिर जाती हैं। उन्होंने कहा कि इस बीमारी से संक्रमित पौधें परिपक्व नहीं हो पाते हैं और गुच्छों का उत्पादन करने में असमर्थ हो जाते हैं।

किसान कुकुम्बर मोजैक वायरस रोग का ऐसे करें प्रबंधन

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि किसान सबसे पहले कुकुम्बर मोजैक वायरस रोग से संक्रमित पौधों के बाहरी लक्षण के आधार पर उसकी पहचान करते हुए उसे अविलंब उखाड़ कर जला दे या जमीन में गाड़ दे क्योकि यह रोग को फैलाने में सहायक होते हैं। इस रोग से आक्रांत पौधों का प्रयोग केले के नए बागों को लगाने के लिए बिल्कुल भी नहीं करना चाहिए। किसान केले के बागान को खरपतवारों से मुक्त रखें। उन्होंने बताया कि कुकुम्बर मोजैक वायरस रोग को नियंत्रित करने के लिए किसान प्रणालीगत कीटनाशकों का छिड़काव करें जिससे वैक्टर के प्रसार को रोकने में मदद मिलती हैं।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 14 सितंबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में बादल आ सकते हैं। इस अवधि में कहीं-कहीं हल्की वर्षा हो सकती है। इस बीच गर्मी व उमस जारी रहेगी। समस्तीपुर स्थित डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के द्वारा जारी पूर्वानुमान के अनुसार किसानों को सूखे से हाल फिलहाल राहत मिलने की संभावना नहीं दिख रही है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
10 सितंबर	31.5	24.8
11 सितंबर	32.0	24.8
दरभंगा		
10 सितंबर	32.0	24.8
11 सितंबर	32.0	25.0
पटना		
10 सितंबर	33.5	26.6
11 सितंबर	33.5	26.6

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 10-09-2025

बीमारियों से लड़ने की ताकत देता है पौष्टिक आहार : अभिनव कृष्णा

प्रतिनिधि, पूसा

वैज्ञानिक के साथ प्रतिभागी.

राष्ट्रीय पोषण माह के उपलक्ष्य में डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के सभागार में प्रशिक्षण का अयोजन किया गया. इसमें वारिसनगर की 50 आंगनबाड़ी सेविका शामिल हुई. मुख्य अतिथि डीडीएम नाबार्ड अभिनव कृष्णा एवं केन्द्र के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉ रविन्द्र कुमार तिवारी ने किया. डीडीएम नाबार्ड ने पोषण की महत्ता के बारे में बताते हुए मोटे अनाज के लिए चल रहे परियोजना के बारे में जानकारी साझा की. केन्द्र के प्रधान ने कहा कि पौष्टिक आहार एवं भोजन हमारे जीवन में बीमारियों से लड़ने मदद करता है. प्राचीन समय में उपयुक्त होने वाले मोटे अनाज के आहार जो शरीर को निरोग रखते थे. अब विलुप्त होते जा रहे हैं. केन्द्र की गृह वैज्ञानिक वर्षा कुमारी ने खाद्य एवं पोषण की जानकारी दी. उन्होंने बताया कि छोटे बच्चों के लिए हम किस प्रकार प्रसंस्करण कर खाद्य पदार्थ तैयार कर विभिन्न उपरी आहार बना सकते हैं. अपने घर में उपलब्ध अनाज गेहूं, मक्का, मूंग, मडुआ एवं अन्य मोटे अनाजों को प्रसंस्करण प्रक्रिया माध्यम से उपरी आहार बना सकते हैं. उद्यान वैज्ञानिक राजीव कुमार यादव ने पोषण वाटिका में लगाये जाने वाले सब्जियों व उनके पौष्टिक गुणों के बारे में जानकारी दी.

प्रभात खबर
Thursday, September 11, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68c1cc3b77dca42efbfe8731

कार्यक्रम • कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के परिसर में राष्ट्रीय पोषण माह पर मोटे अनाज के लिए चल रही परियोजना से कराया अवगत

सेविकाओं को पोषण की महत्ता का मिला प्रशिक्षण

भास्कर न्यूज | पूसा

कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के परिसर में राष्ट्रीय पोषण माह के उपलक्ष्य में एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इसमें वारिसनगर प्रखंड के 50 आंगनबाड़ी सेविकाओं ने भाग लिया। पोषण माह का मुख्य उद्देश्य सेविकाओं के माध्यम से समाज में पोषण संबंधी जागरूकता फैलाना है। इस प्रशिक्षण का शुभारंभ मुख्य अतिथि डीडीएम नाबार्ड अभिनव कृष्णा एवं केन्द्र के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉ. रविन्द्र कुमार तिवारी ने संयुक्त रूप से किया। डीडीएम नाबार्ड ने पोषण की महत्ता के बारे में बताते हुए मोटे अनाज के लिए चल रहे परियोजना के बारे में जानकारी साझा की। केन्द्र के प्रधान ने सभी लोगों का स्वागत करते हुए बताया कि पौष्टिक आहार एवं भोजन हमारे जीवन में बीमारियों से लड़ने के लिए कितना जरूरी है। उन्होंने मोटे अनाज की खेती के बारे में विस्तृत जानकारी दी एवं सभी मोटे अनाज के पौष्टिक गुणों के बारे में भी बताया। उन्होंने बताया कि प्राचीन समय में उपयुक्त होने वाले मोटे अनाज के आहार जो शरीर को स्वस्थ्य एवं निरोग रखते थे अब विलुप्त होते जा रहे हैं। इसकी उपज करने के लिए केन्द्र द्वारा विभिन्न परियोजनाएं चलाई जा रही है तथा विश्वविद्यालय द्वारा इनकी बीज

प्रशिक्षण सत्र के दौरान मौजूद सेविका व वैज्ञानिक।

भी उपलब्ध कराई जा रही है। केन्द्र की गृह वैज्ञानिक वर्षा कुमारी ने खाद्य एवं पोषण की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि छोटे बच्चों के लिए हम किस प्रकार प्रसंस्करण कर खाद्य पदार्थ तैयार कर विभिन्न प्रकार के पौष्टिक आहार बना सकते हैं। उन्होंने बताया कि घर में उपलब्ध अनाज जौ गेहूं, मक्का, मूँग, मडुआ एवं अन्य मोटे अनाजों के प्रसंस्करण की प्रक्रिया जैसे-रात भर पानी में फुलाना, अंकुरित करना, सुखा कर भुजना तथा आटा बनाकर विभिन्न उपरी आहार बनाकर उसका सेवन करना हैं। उन्होंने बताया कि हरी साग सब्जियाँ, माँस-मछली, विटामिन-सी युक्त आहार से हम अनिमिया से निजात पा सकते हैं। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पुसा से आये उद्यान वैज्ञानिक राजीव कुमार यादव ने पोषण वाटिका में लगाये जाने वाले सब्जियों तथा सभी सब्जियों के पौष्टिक गुण के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि साल भर हम पोषण वाटिका में कौन-कौन सब्जियों की उपज कर सकते हैं जिसमें पौष्टिक गुणों के अलावे पोषण सुरक्षा भी सुनिश्चित कि जा सके। कार्यक्रम के अंत में सभी प्रशिक्षणार्थी को केन्द्र के विभिन्न इकाई क्रमशः वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन, नर्सरी प्रबंधन, पोषण वाटिका, कृषि अभियंत्रण आदि का भ्रमण कराकर उसके बारे में जानकारी दी गई। अंत में सभी प्रशिक्षणार्थियों को पोषण सुरक्षा के लिए एक अमरूद का पौधा आंगनबाड़ी केंद्र में लगाने के लिए वितरण किया गया।

सेविकाओं और सहायिकाओं की उपस्थिति, बच्चों की भागीदारी पर हुई चर्चा

आंगनबाड़ी केंद्रों पर पोषण ट्रैकर व शैक्षणिक माहौल पर दिया गया जोर

भास्कर न्यूज | शिवाजीनगर

प्रखंड की दसौत पंचायत में बुधवार को सीडीपीओ निभा कुमारी ने विभिन्न आंगनवाड़ी केंद्रों का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने पोषण, शिक्षा और बच्चों की देखभाल को लेकर केंद्रों की कार्यप्रणाली का गहनता से मूल्यांकन किया। सीडीपीओ ने निरीक्षण के क्रम में विशेष रूप से आंगनवाड़ी केंद्र संख्या 144, 145 और 161 का दौरा किया, जहां उन्होंने सेविकाओं और सहायिकाओं की उपस्थिति, बच्चों की भागीदारी तथा केंद्रों पर उपलब्ध सुविधाओं का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान पोषण ट्रैकर की नियमित अद्यतन प्रक्रिया पर विशेष जोर दिया और सभी केंद्रों को निर्देशित किया कि पोषण ट्रैकर पर बच्चों के स्वास्थ्य और पोषण संबंधित आंकड़ों की समय पर और सही जानकारी दर्ज

शिवाजीनगर में निरीक्षण करती सीडीपीओ।

की जाए। उन्होंने कहा कि इससे सरकार की योजनाओं के क्रियान्वयन और लाभार्थियों तक सेवाएं पहुंचाने में आसानी होगी। सीडीपीओ ने उपस्थित सेविकाओं और सहायिकाओं को बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रेरित किया और कहा कि आंगनवाड़ी केंद्र सिर्फ पोषण वितरण का स्थान नहीं है, बल्कि यह बच्चों के प्रारंभिक शिक्षा और सामाजिक विकास का पहला चरण है।

आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 14 सितंबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में बादल आ सकते हैं। इस अवधि में कहीं- कहीं हल्की वर्षा हो सकती है। इस बीच गर्मी व उमस जारी रहेगी। समस्तीपुर स्थित डॉ . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के द्वारा जारी पूर्वानुमान के अनुसार किसानों को सूखे से हाल फिलहाल राहत मिलने की संभावना नहीं दिख रही है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
11 सितंबर	31.5	24.8
12 सितंबर	32.0	24.8
दरभंगा		
11 सितंबर	32.0	24.8
12 सितंबर	32.0	25.0
पटना		
11 सितंबर	33.5	26.6
12 सितंबर	33.5	26.6

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 11-09-2025

'संतुलित आहार का सेवन कराएं'

पूसा, निज संवाददाता। कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली में बुधवार को राष्ट्रीय पोषण माह के तहत एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। जिसमें वारिसनगर प्रखंड की 50 आंगनवाड़ी सेविकाओं ने हिस्सा लिया। प्रशिक्षण का शुभारंभ नावार्ड के डीडीएम अभिनव कृष्णा एवं केन्द्र प्रमुख डॉ.रविन्द्र कुमार तिवारी ने दीप प्रज्जवलित कर की। मौके पर वक्ताओं ने कहा कि संतुलित आहार का सेवन कराकर महिलाओं व बच्चों को कुपोषित होने से बचाया जा सकता है।

इसके लिए महिलाओं को जागरूक करने की जरूरत है। वे अपने घरों में उपलब्ध संसाधनों का उपयोग कर संतुलित आहार का सेवन कर सकते हैं। इसमें आंगनबाड़ी केन्द्रों की भूमिका अहम हैं। डीडीएम नाबार्ड ने पोषण की महत्ता पर चर्चा करते हुए मोटे अनाज के लिए चल रही परियोजना की जानकारी दी।

पूसा के कृषि विज्ञान केन्द्र पर प्रशिक्षण के दौरान सेविकायें।

केन्द्र प्रमुख ने कहा कि पौष्टिक आहार रोगमुक्त बनाने व बिमारियों से लड़ने की क्षमता विकसित करता है।बाद में प्रतिभागियों ने केन्द्र के वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन ईकाई, नर्सरी प्रबंधन, पोषण वाटिका, कृषि अभियंत्रण का भ्रमण किया। मौके पर पोषण सुरक्षा के लिए एक अमरूद का पौध आँगनवाड़ी में लगाने के लिए वितरित की गई।

Hindustan 11-09-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 14 सितंबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में बादल आ सकते हैं। इस अवधि में कहीं-कहीं हल्की वर्षा हो सकती है। इस बीच गर्मी व उमस जारी रहेगी। समस्तीपुर स्थित डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के द्वारा जारी पूर्वानुमान के अनुसार किसानों को सूखे से हाल फिलहाल राहत मिलने की संभावना नहीं दिख रही है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
12 सितंबर	32.0	25.0
13 सितंबर	32.0	25.4
दरभंगा		
12 सितंबर	32.0	25.4
13 सितंबर	32.5	25.4
पटना		
12 सितंबर	33.5	26.6
13 सितंबर	33.5	26.6

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 12-09-2025

कृषि विश्वविद्यालय में वेबिनार का आयोजित

पूसा। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि, पूसा में गुरूवार को राष्ट्रीय सेवा योजना एवं वीगन आउटरीच संस्था के संयुक्त तत्वाधान में वेबिनार का आयोजन किया गया। विषय था पौध आधारित भोजन स्वास्थ्य व पर्यावरण के लिए बेहतर। इसमें कार्यक्रम पदाधिकारियों समेत करीब 100 स्वयंसेवकों ने हिस्सा लिया।

Hindustan 12-09-2025

भास्कर 13/9/25 पेज 20

कार्यक्रम • केवीके बिरौली के परिसर में राष्ट्रीय पोषण माह के उपलक्ष्य में किया गया आयोजन

आंगनबाड़ी सेविकाओं को राष्ट्रीय पोषण माह के उद्देश्य से कराया गया रूबरू, मोटे अनाज पर चल रही परियोजनाओं की जानकारी दी

भास्कर न्यूज | पूसा

केवीके बिरौली के परिसर में राष्ट्रीय पोषण माह के उपलक्ष्य में सेविकाओं के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का अयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में वारिसनगर प्रखंड से जुड़े 50 आंगनबाड़ी सेविकाओं ने हिस्सा लिया। पोषण माह के तहत आयोजित हुए इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य आंगनबाड़ी सेविकाओं के माध्यम से ग्रामीण स्तर पर सभी लोगों में पोषण संबंधी जागरूकता को फैलाने का है। प्रशिक्षण का शुभारंभ मुख्य अतिथि डीडीएम नाबार्ड अभिनव कृष्णा एवं केन्द्र के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉ. रविन्द्र कुमार तिवारी ने संयुक्त रूप से किया। डीडीएम नाबार्ड ने पोषण की महत्ता के बारे में बताते हुए खासकर मोटे अनाज को लेकर चल रहे परियोजनाओं से सेविकाओं को अवगत कराया। केन्द्र के प्रधान डॉ. तिवारी ने जीवन में पौष्टिक आहार एवं पोषक तत्व वाला भोजन हमारे जीवन में बीमारियों से लड़ने के लिए कितना जरूरी है इसके बारे में बताया। उन्होंने कहा कि बिना स्वास्थ्य के पैसे का कोई महत्त्व नहीं है। उन्होंने मोटे अनाज की खेती और उसके पौष्टिक गुणों के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि प्राचीन समय में उपयुक्त होने वाले मोटे अनाज के आहार जो शरीर को स्वस्थ्य एवं निरोग रखते थे अब विलुप्त होते जा रहे हैं। इसकी उपज को बढ़ाने के लिए केवीके बिरौली द्वारा विभिन्न परियोजनाएं चलाई जा रही है। किसानों को विश्वविद्यालय द्वारा मोटे अनाज के बीज भी उपलब्ध कराए जा रहे है। केवीके की गृह वैज्ञानिक वर्षा कुमारी ने खाद्य एवं पोषण की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि छोटे बच्चों के लिए हम किस प्रकार प्रसंस्करण कर खाद्य पदार्थ तैयार कर विभिन्न तरह के उपरी पौष्टिक आहार बना सकते हैं। उन्होंने गेहूं, मक्का, मूंग, मडुआ एवं अन्य मोटे अनाजों के प्रसंस्करण के प्रक्रिया की भी जानकारी दी। उद्यान वैज्ञानिक राजीव कुमार यादव ने पोषण वाटिका में लगाये जाने वाले सब्जियों तथा सभी सब्जियों के पौष्टिक गुणों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि साल भर हम पोषण वाटिका में कौन-कौन सब्जियों की उपज कर सकते हैं। इससे पौष्टिक गुणों के अलावे पोषण सुरक्षा भी सुनिश्चित कि जा सके। कार्यक्रंम के अंत में सभी प्रशिक्षणार्थी को वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन, नर्सरी प्रबंधन, पोषण वाटिका, कृषि अभियंत्रण जैसे इकाई का भ्रमण कराकर उन्हें उसके बारे में जानकारी दी गई। सभी प्रशिक्षणार्थियों को पोषण सुरक्षा के लिए एक एक अमरूद का पौधा आंगनवाड़ी केंद्र में लगाने के लिए वितरण किया गया।

प्रशिक्षणार्थियों के साथ वैज्ञानिक।

दैनिक जागरण 13/9/25 पेज 3

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 17 सितंबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। इस अवधि में उत्तर बिहार के अधिकांश जिलों में मानसून सक्रिय रहेगा। कुछ-कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा हो सकती है। कहीं-कहीं भारी वर्षा होने की संभावना है। इस बीच मेघ गर्जन व आकाशीय बिजली गिरने की भी आशंका है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
13 सितंबर	30.8	25.0
14 सितंबर	31.0	25.0
	दरभंगा	
13 सितंबर	31.0	25.0
14 सितंबर	31.0	25.2
	पटना	
13 सितंबर	32.5	26.6
14 सितंबर	32.5	26.6

डिग्री सेल्सियस में

राष्ट्रीय सहारा 13/9/25 पेज 2

मृदा स्वास्थ्य को ले जागरूक होने की जरूरत : डॉ. तिवारी

प्रशिक्षण में शामिल पैक्स प्रबंधक।

पैक्स प्रबंधकों का समेकित पोषक तत्व प्रबंधन विषयक 15 दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न

समस्तीपुर (एसएनबी)। समेकित पोषक तत्व प्रबंधन का उद्देश्य फसल को संतुलित पोषण रसायनिक, जैविक, हरी खाद आदि के माध्यम से प्रदान करना, मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखते हुए टिकाऊ और कृषि में कम लागत लगाकर प्रभावी उत्पादन प्राप्त करना है। डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विज्ञान के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली में आयोजित समेकित पोषक तत्व प्रबंधन विषयक 15 दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण के समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए हेड, शस्य विभाग, पूसा डॉ. एसके चौधरी, ने उक्त बातें कही। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण के दौरान बताए गए कृषि तकनीकों व ज्ञान को जमीन पर उतारने की जरूरत है।

बताते चलें कि केविके बिरौली में आयोजित इस प्रशिक्षण में जिले के 30 पैक्स प्रबंधक शामिल हुए। इस अवसर पर प्राध्यापक (शस्य) डॉ. रत्नेश कुमार झा, ने समेकित शब्द का मतलब समझाते हुए कृषि और मृदा में पोषक तत्व प्रबंधन की महत्ता पर चर्चा करते हुए कहा कि इस प्रशिक्षण से पैक्स प्रबंधकों के द्वारा किसानों को लाभ होगा। इस प्रशिक्षण कार्य में कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉ. आरके तिवारी ने सभी अतिथियों एवं प्रशिक्षणार्थियों का स्वागत करते हुए कृषि में मृदा स्वास्थ्य की महत्ता के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि मृदा के स्वास्थ्य के प्रति जागरूक एवं संवेदनशील होने की जरूरत है। इस प्रशिक्षण के दौरान पाठ्यक्रम समन्वयक का कार्य ई0 विनीता कश्यप एवं निशा रानी ने किया।

कृषि • उद्यानिकी एवं वानिकी विज्ञान महाविद्यालय के छात्र सीख रहे नई तकनीक

उद्यान की पढ़ाई करने वाले छात्रों का एक समूह केवीके बिरौली में कर रहा प्रयोगात्मक अध्ययन

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के अधीनस्थ उद्यानिकी एवं वानिकी विज्ञान महाविद्यालय पीपराकोठी में उद्यानकी की पढ़ाई करने वाले 17 छात्रों का एक दल कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली में पिछले 21 अगस्त से प्रयोगात्मक अध्ययन करने में जुटा हैं। छात्राओं का यह दल 21 अगस्त से 12 नवंबर तक कृषि विज्ञान केंद्र से जुड़े तमाम कृषि वैज्ञानिक एवं केवीके से जुड़े विभिन्न किसानों से उद्यानकी में अपनाएं जा रहे विभिन्न तकनीकियों को बारीकी से जानने व समझने का प्रयास करेंगे। इतना ही नहीं ये छात्राएं खासकर किसानों से वार्तालाप कर उद्यानिकी में किसान कौन से विधि को अपना रहे हैं और किसानों के विधि में किस प्रकार सुधार लाया जा सकता है इस पर भी चर्चा करेंगी। फिलहाल ये छात्राएं कृषि विज्ञान केंद्र में उपलब्ध विभिन्न

केवीके में छात्र अमरूद के पेड़ से नर्सरी तैयार करने की ले रहे जानकारी।

इकाइयों जिसमें मुख्य रूप से विभिन्न फल फसलों के बगीचा, फूलों का उन्नत प्रदर्शन, सब्जियों पर हो रहे अनुसंधान कार्य आदि को देख व समझ रहे हैं। केवीके के हेड डॉ. आरके तिवारी के नेतृत्व में केवीके के वैज्ञानिक डॉ. धीरू तिवारी, डॉ. विनीता कश्यप, डॉ. सुमित कुमार आदि इन छात्रों को संबंधित विषयों से जुड़ी जानकारी देने में लगे हैं। डॉ. आरके तिवारी ने छात्रों को बड़े पौधों से किस प्रकार ग्राफ्टिंग व एयर लेयरिंग विधि से नए पौधे तैयार किये जाते हैं इसके बारे में जानकारी दी। उन्होंने दोनों विधि को लेकर प्रयोगात्मक कार्य करके भी छात्राओं को दिखाया। उन्होंने छात्रों को बताया कि ग्राफ्टिंग एक बागवानी और उद्यानिकी तकनीक है जिसमें दो पौधों के हिस्सों को मिलाकर एक नया पौधा तैयार किया जाता है। इसमें एक पौधे (स्कोन) की ऊपरी शाखा या कली को दूसरे पौधे (रूटस्टॉक) के निचले हिस्से में इस तरह जोड़ा जाता है कि वे आपस में जुड़कर एक ही पौधे के रूप में बढ़ने लगते हैं। इसका उद्देश्य वांछित गुणों वाले पौधों के प्रजातियों का उत्पादन करना हैं। बाद में छात्रों ने कृषि विज्ञान केंद्र के परिसर में लगाए गए गेंदा पुष्प प्रत्यक्षण इकाई में पहुंचकर पुष्प की तुड़ाई करने के साथ-साथ गेंदा फूल के मूल्य संवर्धन हेतु विभिन्न प्रकार के माला को बनाने का कार्य भी किया। इस कार्य को छात्रों ने कृषि विज्ञान केंद्र में मौजूद विशेषज्ञ तथा विभिन्न माली के माध्यम से किया।

दैनिक भास्कर - 14/09/2025 - P- 20

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 17 सितंबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। इस अवधि में उत्तर बिहार के अधिकांश जिलों में मानसून सक्रिय रहेगा। कुछ-कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा हो सकती है। कहीं-कहीं भारी वर्षा होने की संभावना है। इस बीच मेघ गर्जन व आकाशीय बिजली गिरने की भी आशंका है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
14 सितंबर	30.8	25.0
15 सितंबर	31.0	25.0
	दरभंगा	
14 सितंबर	31.0	25.0
15 सितंबर	31.0	25.2
	पटना	
14 सितंबर	32.5	26.6
15 सितंबर	32.5	26.6

डिग्री सेल्सियस में

हिन्दुस्तान 14/9/25 पेज 4

प्रशिक्षण | विवि में कृषि सखियों का पांच दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न, प्रमाणपत्र किया वितरित

'प्राकृतिक खेती को बढ़ावा समय की मांग है'

पूसा, निसं। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि के निदेशक अनुसंधान डॉ.अनिल कुमार सिंह ने कहा कि बदलते परिवेश में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा समय की मांग है। यह मृदा संतुलन बनाये रखने के साथ टिकाउ खेती को बढ़ावा देता है। इसके लिए प्रशिक्षण में प्राप्त ज्ञान को उपयोगी बनाने की जरूरत है। जिसमें कृषि सखियों की भूमिका अहम है। वे प्रशिक्षण में प्राप्त नवीनतम कृषि तकनीकों को जमीन पर उतारने की दिशा में पहल कर किसानो को लाभान्वित करें। वे शुक्रवार की शाम विवि के पंचतंत्र सभागार में बोल रहे थे। मौका था नेशनल मिशन ऑन नेचुरल फार्मिंग के तहत स्नातकोत्तर महावलिय के प्राकृतिक खेती विधालय के तत्वाधान में आयोजित कृषि सखियो के 5 दिवसीय प्रशिक्षण के समापन सत्र का। डीन डॉ.मयंक राय ने कहा कि प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देकर किसान मिटटी की गुणवत्ता व उर्वरता को बढ़ा सकते हैं। इसे अपना कर किसान बाजार पर निर्भरता कम कर सकते हैं। यह खेती की लागत को कम करने व आय बढ़ाने के साथ जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों को दूर करने में मददगार साबित होगा। मौके पर डीन डॉ.रामसुरेश, नोडल पदाधिकारी अमित कुमार समेत अन्य ने अपने विचार व्यक्त किया। संचालन करते हुए डॉ.एसएस प्रसाद ने कहा कि प्रशिक्षण के दौरान प्राकृतिक खेती के मूलभूत सिद्धांतों के साथ जीवामृत, घन जीवामृत, ब्रह्मास्त्र, आग्नेयास्त्र और नीमास्त्र जैसे प्राकृतिक उत्पाद बनाने की प्रायोगिक जानकारी दी गई है। इस दौरान प्रशिक्षुओं के बीच प्रमाण-प्रत्र वितरित किये गये। मौके पर डॉ.एसपी सिंह, डॉ.नीरज कुमार, डॉ.मो. अब्बास, डॉ. आलोक सिंह जयारा, डॉ.ध्रुव सिंह, ईश प्रकाश मौजूद थे।

शनिवार को कृषि विवि में प्रमाण पत्र के प्रशिक्षु व वैज्ञानिक।

हिन्दुस्तान 14/9/25 पेज 5

'फसल को संतुलित पोषण व टिकाऊ खेती को दे बढ़ावा'

पूसा,निसं। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि से जुड़े कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली में पैक्स प्रबंधको को 15 दिवसीय प्रशिक्षण शुक्रवार को समाप्त हो गया। प्रशिक्षण का विषय था समेकित पोषक तत्व प्रबंधन। इस दौरान प्रशिक्षुओं के बीच प्रमाण-पत्र वितरित की गई।

समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के विभागाध्यक्ष (सस्य विभाग) डॉ.एसके चौधरी ने कहा कि समेकित पोषक तत्व प्रबंधन का उद्देश्य रसायनिक, जैविक, हरी खाद आदि के माध्यम से फसल को संतुलित पोषण प्रदान करना है। इसके साथ ही मिट्टी को स्वस्थ बनाए रखते हुए टिकाऊ खेती और कृषि में कम लागत में प्रभावी उत्पादन प्राप्त करना है। उन्होंने प्रशिक्षुओं से कहा कि प्रशिक्षण की सार्थकता उसको कार्यरूप देने पर निर्भर है। प्रशिक्षण में प्राप्त तकनीकी ज्ञान को अपने व आसपास के किसानों के खेतों मे उतारने की जरूरत है। सस्य विज्ञान के प्राध्यापक डॉ.रत्नेश कुमार झा ने कहा कि समेकित शब्द का मतलब कृषि और मृदा में पोषक तत्व प्रबंधन कर कम खर्च में कृषि को लाभकारी बनाना है। उन्होंने कहा कि पैक्स प्रबंधक प्रशिक्षण प्राप्त ज्ञान को किसानों के बीच प्रसारित करे। जिससे अधिक से अधिक किसान लाभान्वित हो सकें। केन्द्र प्रमुख डॉ.आरके तिवारी ने स्वागत करते हुए कृषि में मृदा स्वास्थ्य की महत्ता पर विस्तार से चर्चा की।

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के संचार केंद्र में कार्यक्रम

सही जानकारी से ही बढ़ेगा उत्पादन

पूसा. डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के संचार केंद्र स्थित पंचतंत्र सभागार में रबी फसलों के संरक्षण में नवीनतम प्रगति विषय पर जारी प्रशिक्षण संपन्न हो गया. प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र दिया गया. अध्यक्षता करते हुए वैज्ञानिक सह प्रसार शिक्षा के ट्रेनिंग कोर्स कॉर्डिनेटर डॉ बिनीता सतपथी ने कहा कि फसल उत्पादन में वृद्धि होती है. खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित होती है. किसानों को आर्थिक लाभ होता है. इसका महत्व इसलिए है क्योंकि यह सुधार कीटनाशकों और बीमारियों से फसलों की बेहतर सुरक्षा करते हैं. पर्यावरण और किसानों के स्वास्थ्य पर कम प्रभाव डालते हैं. मिट्टी की गुणवत्ता को बढ़ाते हैं. जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीलापन बढ़ाने और संसाधन संरक्षण में भी यह महत्वपूर्ण है. नवीनतम पौध संरक्षण विधियों से फसलें कीटों, रोगों और खरपतवारों से सुरक्षित रहती हैं. जिससे पैदावार बढ़ती है. देश की खाद्य सुरक्षा मजबूत होती है. बेहतर फसल सुरक्षा और उत्पादकता से किसानों की आय बढ़ती है. संरक्षण कृषि जैसी विधियां मिट्टी की नमी बढ़ाती हैं. जिससे फसलें सूखे और अधिक गर्मी जैसी प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों में भी अधिक लचीली हो जाती है. उन्होंने कहा कि डॉ. मयंक राय के नेतृत्व में प्रशिक्षण हुआ. रबी फसलों के संदर्भ में पौध संरक्षण में नवीनतम प्रगति शीर्षक वाले इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कीटनाशकों के प्रयोग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) की पहचान, निगरानी, रोकथाम, निगरानी और उपयोग को व्यापक रूप से शामिल किया गया. बामेती, पटना द्वारा प्रायोजित सीतामढ़ी, पूर्वी चंपारण, सुपौल, सहरसा, मधुबनी के तीस प्रतिभागियों ने जैव नियंत्रण प्रयोगशाला, पूसा और ढोली बीज उत्पादन इकाई का भी दौरा किया.

प्रमाणपत्र के साथ प्रतिभागी.

प्रभात खबर - 14/09/25 P - 05.

दैनिक जागरण 15/9/25 पेज 5

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 17 सितंबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। इस अवधि में उत्तर बिहार के अधिकांश जिलों में मानसून सक्रिय रहेगा। कुछ-कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा हो सकती है। कहीं-कहीं भारी वर्षा होने की संभावना है। इस बीच मेघ गर्जन व आकाशीय बिजली गिरने की भी आशंका है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
15 सितंबर	31.0	25.0
16 सितंबर	31.0	25.2
	दरभंगा	
15 सितंबर	31.0	25.2
16 सितंबर	31.6	25.2
	पटना	
15 सितंबर	32.5	26.6
16 सितंबर	32.5	26.6

डिग्री सेल्सियस में

महिलाओं के उत्थान को सशक्तीकरण पर सरकार दे रही जोर : कुलपति

प्रतिनिधि,पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के संचार केंद्र स्थित पंचतंत्र सभागार में महिलाओं के उत्थान के लिए आरटीआई के प्रभाव विषय पर जारी संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए कुलपति डॉ पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने कहा की विवि में हिंदी मास एवं पोषण माह के अलावा अभियंता दिवस मनाया जा रहा है. हिंदी व पोषण माह के साथ-साथ अभियंता दिवस के मौके पर डॉ. ईशा सिन्हा की पुण्यतिथि मनाने का सौभाग्य आज विश्वविद्यालय को प्राप्त हुआ है. उन्होंने कहा की पूरी दुनिया में महिलाओं के उत्थान के लिए सशक्तिकरण पर जोर दिया जा रहा है. आरटीआई से महिलाओं में और अत्यधिक सशक्तिकरण आने की संभावना है. कुलपति ने कहा कि ज्यादा फैसिलिटी मिलने से छात्र-छात्राओं को आगे बढ़ने में दिक्कत आती है. ज्यादातर छात्र कम फैसिलिटी में ही आगे बढ़ कर अपना नाम रोशन करते हैं. उन्होंने कहा कि छात्र-छात्राएं अपने में दृढ़ इच्छाशक्ति को समाहित करें. कहा कि जलवायु परिवर्तन के इस दौर में ज्यादातर किसान अंधाधुंध रासायनिक खाद का प्रयोग कर रहे हैं. इसे कम कराने के लिए विश्वविद्यालय ने प्राकृतिक खेती पर एक स्कूल और फूड न्यूट्रिशन पर एक महाविद्यालय खोला है. जिससे किसान जैविक खाद के इस्तेमाल कर प्राकृतिक खेती की दिशा में अग्रसर होंगे

संगोष्ठी को संबोधित करते कुलपति डॉ पीएस पांडेय.

प्रभात खबर
Tuesday, September 16, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68c86594462b85587bfbc0a7

महिलाओं के अधिकारों पर आरटीआइ का प्रभाव विषय पर संगोष्ठी

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता आरटीआइ की परिभाषा : डॉ रश्मि चौधरी

प्रतिनिधि,पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के संचार केंद्र स्थित पंचतंत्र सभागार में सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के सौजन्य से डॉ. इशा मेमोरियल सिन्हा लेक्चर के तत्वाधान में भारत में महिलाओं के अधिकारों पर आरटीआई का प्रभाव विषय पर संगोष्ठी की गयी. अध्यक्षता कुलपति डा पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने की. मुख्य अतिथि केंद्रीय सूचना आयोग की सचिव डॉ. रश्मि चौधरी ने संबोधित करते हुए कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता ही आरटीआई की परिभाषा होती है. किसी भी संस्थान से जुड़े कार्यों में पारदर्शिता लाने की दिशा में आरटीआई एक्ट महत्वपूर्ण है. उन्होंने कहा कि सूचना मांगने वालों का पता और ठिकाना किसी भी कार्यालय को मांगने का अधिकार नहीं है. स्वागत करते हुए सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की डीन डॉ. उषा सिंह ने कहा कि सितंबर का महीना पोषण माह के रूप में परिलक्षित है. इस माह में डॉ. एके आदित्य के सहयोग से विवि में स्वास्थ्य कैंप का शुभारंभ भी किया गया है. महिलाओं एवं बच्चों के सुधार से ही बेहतर राष्ट्र का निर्माण होगा. डीएसडब्ल्यू डॉ. रमन त्रिवेदी ने कहा कि महापुरुषों के मेमोरियल कार्यक्रम से लोगों को प्रेरणा लेने की जरूरत है. डॉ. जेकेपी सिंह ने कहा कि छात्र-छात्राओं के पास एक मॉडल होना जरूरी है. डॉ. आदित्य ने कहा कि ज्ञात एवं अज्ञात कारण से संपूर्ण देश में लगभग 20 प्रतिशत लोग गंभीर रोग से पीड़ित हैं. संचालन डॉ. अनुज्ञा भारती ने किया. धन्यवाद ज्ञापन डॉ. गीतांजलि चौधरी ने किया. मौके पर डॉ. एके सिंह, सच्चिदानंद, विजया सोनी, सुयश आनंद, श्रेया आनंद, टेक्निकल टीम के सुरेश कुमार, सूरज कुमार, रिशु, अलका आदि मौजूद थे.

दीप जलाकर संगोष्ठी का शुभारंभ करते अतिथि .

प्रभात खबर
Tuesday, September 16, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68c86594462b85587bfbc0aa

भास्कर 16/9/25 पेज 13

नई व्यवस्था • जांच में शामिल पदाधिकारी किसानों के खेत, फसल व गुणवत्ता की भी करेंगे जांच

अब बुधवार को कृषि विभाग में रहेगा जीरो ऑफिस डे खेतों में रहेंगे अधिकारी, वहीं से आवेदन का सत्यापन

उमेश कुमार मिश्र | समस्तीपुर

खरीफ 2025 मौसम में किसानों को मिलेट्स का कलस्टर में प्रत्यक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया है। जिसमें किसानों को बीज एवं उपादान का वितरण किया गया है। साथ ही प्रत्यक्षण के लाभार्थियों को दो हजार रुपए नकद अनुदान राशि मिलेगी। इसके लिए वितरित किए गए बीज एवं उपादानों का धरातल पर जांच किया जाएगा। ताकि योजनाओं के सफल क्रियान्वयन के संबंध में वास्तविकता की जानकारी होगी। साथ ही योजनाओं का मूल्यांकन करते हुए इसके परिणामों का आंकलन किया जा सकें। इसके लिए कृषि विभाग ने बुधवार को जीरो ऑफिस डे घोषित किए जाने का निर्णय लिया है। ताकि इसकी जांच कर सत्यापन किया जा सकेगा। जीरो ऑफिस डे का मुख्य उद्देश्य है कि बुधवार को घोषित जीरो ऑफिस दिवस को प्रमंडल स्तरीय पदाधिकारी, जिला स्तरीय पदाधिकारी, अनुमंडल स्तरीय पदाधिकारी एवं प्रखंड स्तरीय पदाधिकारी अपने अपने कार्यालय में न रहकर क्षेत्र में भ्रमण कर धरातल पर जाकर मिलेट्स बीज एवं उपादान वितरण की जांच करेंगे। प्रमंडलीय संयुक्त निदेशक अपने अधीनस्थ जिलों के जिला कृषि पदाधिकारी, अनुमंडल कृषि अधिकारी, सहायक निदेशक पौ.सं., सहायक निदेशक रसायन, सहायक निदेशक अभि., सहायक निदेशक शष्य, प्रक्षेत्र कर जांच दल का गठन करेंगे।

खेतों में लगी फसल।

गुणवत्ता की भी होगी जांच व सत्यापन का देना होगा प्रपत्र

कृषि पदाधिकारी द्वारा किया जायेगा। जांच के क्रम में जियो टैग फोटो लिया जायेगा। जिसे जिला मुख्यालय में पेन ड्राइव में संग्रहित किया जायेगा। जांच में किसानों को उपलब्ध कराए बीज एवं उपादान की गुणवत्ता के संबंध में फीडबैक प्राप्त करेंगे। इसमें दी गयी मात्रा एवं गुणवत्ता भी देखेंगे। योजना की जांच के क्रम में जांचकर्ता पदाधिकारी का नाम एवं पदनाम, लाभुक किसान का नाम व पता, प्राप्त बीज की मात्रा एवं प्रभेद, बुआई की तिथि, वर्तमान में फसल की स्थिति आदि विवरण देना होगा। साथ ही इस प्रपत्र पर जांच पदाधिकारी व किसान का हस्ताक्षर भी अंकित करना होगा।

भास्कर 16/9/25 पेज 15

प्रिय अन्नदाता

पंक्तिबद्ध तरीके से सरसों तोरी व राई की करें बुआई

प्रिय अन्नदाता,

आप सभी को पता है कि आने वाले महीनों में हमलोग तेलहन फसल जैसे सरसों, तोरी, राई इत्यादि की खेती कर सकते हैं। इसकी बुआई अगर पंक्तिबद्ध तरीके से की जाए तो इसकी उत्पादकता बढ़ सकती है। सबसे पहले तिलहन की खेती के लिए हमें खेत की तैयारी करनी होती है। किसी भी खेत में अगर गर्मी के मौसम में खेत की गहरी जुताई की जाए तो खेत में खरपतवार की समस्या कम होती है और साथ ही खेत में पानी का रिसाव भी अच्छे तरीके से होता है। इसके सबसे पहले हमें ऐसे खेत को चयनित करना होता है जहां पानी का जमाव ना हो। खेत में सड़ी हुई गोबर की खाद एवं कंपोस्ट का प्रयोग करें। खेत को मिट्टी पलटने वाले हल जिसे मोल्ड बोर्ड प्लाऊ से जुताई करें इससे तिलहन फसल की जड़ें अच्छे से फैलती हैं। इसके बाद खेत में कल्टीवेटर से जुताई करें एवं उसके बाद खेत को भुरभुरा बनाए रखने हेतु रोटावेटर का प्रयोग करें। इसके बाद सरसों, तोरी और राई की सीधी बुआई के लिए सीड कम फर्टिलाइजर ड्रिल का इस्तेमाल करें।

ई. निधि कुमारी
विषय वस्तु विशेषज्ञ, कृषि अभियंत्रण
कृषि विज्ञान केंद्र
जाले, दरभंगा

बुआई से पहले इस तरह तैयार करें खेत

बुआई से 20 से 30 दिन पहले 8 टन प्रति हेक्टेयर कंपोस्ट बिखेर कर खेत तैयार करें। गंधयुक्त उर्वरक जैसे सिंगल सुपर फास्फेट या अमोनियम सल्फेट का प्रयोग 20 से 30 किलोग्राम गंधक तथा आवश्यकतानुसार जिंक और बोरोन का प्रयोग करें। सामान्यतः सरसों, तोरी और राई में दो सिंचाई एक बुआई के 25 से 30 दिन बाद एवं दूसरी 55 से 60 दिन बाद देनी चाहिए। बुआई के 30 से 45 दिन के बाद ग्रबर या हल्का हल से निकौनी कर सकते हैं अथवा पेंडिमेथिलीन 30 % ई सी शाकनाशी का प्रयोग कर सकते हैं। इसकी अनुसंशित मात्रा 1 से 1.5 लीटर प्रति एकड़ है।

नोट - आप खेती-किसानी से जुड़े किसी विषय पर जानकारी चाहते हैं तो व्हाट्सएप नंबर 7004953357 पर सिर्फ मैसेज करें।

पहले• संस्थानों से जुड़े कार्यों में पारदर्शिता लाने की दिशा में आरटीआई एक्ट काफी महत्वपूर्ण, सभी को होनी चाहिए इसकी जानकारी

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता ही आरटीआई की परिभाषा

16/9/25 पेज 14

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के संचार केंद्र में डॉ. इशा मेमोरियल सिन्हा लेक्चर के तत्वाधान में राष्ट्रीय सूचना आयोग विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में विशेषज्ञों ने केयर ऑफ मैनेजमेंट ऑफ डायबिटीज इन बिहार एंड अनलॉकिंग जस्टिस दी इंपैक्ट ऑफ आरटीआई ऑन वूमेन फाइव इन इंडिया पर विस्तार से चर्चा की। इस संगोष्ठी को बतौर मुख्य अतिथि केंद्रीय सूचना आयोग की सचिव डॉ. रश्मि चौधरी ने संबोधित करते हुए कहा की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता ही आरटीआई की परिभाषा होती है। किसी भी संस्थान से जुड़े कार्यों में पारदर्शिता लाने की दिशा में आरटीआई एक्ट काफी महत्वपूर्ण है। कोई भी व्यक्ति इस एक्ट के जरिए सीधे सरकार से सवाल पूछ सकता है। उन्होंने कहा कि सरकारी विभाग से जुड़े कार्यों की जानकारी को नागरिक के साथ साझा करने का नियम भी है और सरकार इस पर जागरूकता फैलाने के लिए हमेशा तत्पर भी रहती हैं। उन्होंने कहा कि सूचना मांगने वालों का पता और ठिकाना किसी भी कार्यालय को मांगने का अधिकार नहीं है। उन्होंने कहा कि कोई भी विवि या सरकारी व गैर सरकारी संस्थान अपने सभी सूचनाओं को वेबसाइट पर डालकर अपने प्रशासनिक जिम्मेवारी को कम कर सकता है। उन्होंने कहा कि सूचना का अधिकार भ्रष्टाचार विरोधी भी है। आरटीआई के तहत मांगी गई सूचना को 30 दिनों के अंदर ही आरटीआई के तहत उपलब्ध करा देनी है। उन्होंने कहा कि खासकर बिहार के मनरेगा से जुड़े योजनाओं में आरटीआई मांगने की मुहिम ज्यादा चल रही है। उन्होंने कहा कि आज कल पंचायतों में आरक्षण के तहत महिलाएं जनप्रतिनिधि तो बन जाती हैं लेकिन उनके सभी कार्यों को उनके परिवार के पुरुष ही संपादित करते हैं। ये बात बहुत ही गलत है। उन्होंने कहा कि महिलाओं को रूढ़िवादी सोच का होना चाहिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए पुसा विवि के कुलपति डॉ.पीएस पांडे ने डॉ. ईशा सिन्हा के चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा की विवि में हिंदी माह एवं पोषण माह के अलावे अभियंता दिवस मनाने का कार्य भी चल रहा हैं। उन्होंने कहा कि हिंदी व पोषण माह के साथ-साथ अभियंता दिवस के मौके पर डॉ. ईशा सिन्हा की पुण्यतिथि मनाने का सौभाग्य आज विश्वविद्यालय को प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा की पूरी दुनिया में महिलाओं के उत्थान के लिए सशक्तिकरण पर जोर दिया जा रहा है। आरटीआई से महिलाओं में और अत्यधिक सशक्तिकरण आने की संभावना है।

विश्वविद्यालय में पोषण माह के अलावे अभियंता दिवस मनाने का कार्य भी चल रहा

संगोष्ठी को संबोधित करती मुख्य अतिथि डॉ. रश्मि चौधरी व मौजूद अन्य।

अंधाधुंध रासायनिक खाद का भी इस्तेमाल हो रहा

कुलपति ने कहा कि ज्यादा फैसिलिटी मिलने से छात्र-छात्राओं को आगे बढ़ने में दिक्कत आती है। ज्यादातर छात्र कम फैसिलिटी में ही आगे बढ़कर अपना नाम रोशन करते हैं। उन्होंने कहा कि छात्र-छात्राएं अपने में इच्छा शक्ति को समाहित करें। किसानों पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन के इस दौर में ज्यादातर किसान अंधाधुंध रासायनिक खाद का प्रयोग कर रहे हैं। रासायनिक खाद का प्रयोग कम कराने के लिए विवि ने प्राकृतिक खेती पर एक महाविद्यालय खोला है।

संगोष्ठी में मौजूद विशेषज्ञ।

स्वास्थ्य में सुधार से ही बेहतर समाज का निर्माण होगा

स्वागत भाषण करते हुए सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की डीन डॉ. उषा सिंह ने कहा कि सितंबर का महीना पोषण माह के रूप में परिलक्षित है। उन्होंने कहा कि इस माह में डॉ. एके आदित्य के सहयोग से विवि में स्वास्थ्य कैंप का शुभारंभ भी किया गया है। उन्होंने कहा कि महिलाओं एवं बच्चों के सुधार से ही बेहतर राष्ट्र का निर्माण संभव हो पायेगा तथा बच्चों के स्वस्थ रहने पर ही सुदृढ़ भविष्य की कल्पना की जा सकती है। डीएसडब्ल्यू डॉ.रमन त्रिवेदी ने कहा की महापुरुषों के मेमोरियल कार्यक्रम से लोगों को प्रेरणा लेने की जरूरत है। कठिनाई में रहते हुए भी महापुरुषों से बेहतर जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने सभी छात्रों के लिए मेडिकल बीमा की सुविधा प्रदान की है।

डाइट का पूरा ख्याल रखें व एक्सरसाइज भी करें

डॉ. जेके पी सिंह ने कहा की छात्र-छात्राओं के पास एक मॉडल होना जरूरी है। उन्होंने कहा कि एक कहावत में कहा गया है जैसा राजा वैसा प्रजा लेकिन अब वह समय बदल गया है। आज जैसा प्रजा वैसा राजा का स्वरूप परिवर्तित हो चला हैं। समस्तीपुर शहर के मधुमेह रोग विशेषज्ञ डॉ. ए के आदित्य ने कहा की ज्ञात एवं अज्ञात कारण से संपूर्ण देश में लगभग 20 प्रतिशत लोग गंभीर रोग से पीड़ित है जिनका इलाज कर पाना लगभग असंभव है। उन्होंने कहा कि आज मधुमेह रोग भी एक बड़ी समस्या बनती जा रही है। मधुमेह से निजात पाने के लिए लोग डाइट का पूरा ख्याल रखे तथा नियमित एक्सरसाइज करें। उन्होंने सीपीआर सिस्टम के बारे में भी विस्तार से बताया। मंच संचालन डॉ. अनुज्ञा भारती ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन डॉ. गीतांजलि चौधरी ने किया। मौके पर डॉ. ए के सिंह, डॉ. ईशा सिंह के पति सच्चिदानंद, बहु विजया सोनी, पुत्र सुयश आनंद थे।

किसी भी संस्थान के कार्यों में पारदर्शिता के लिए आरटीआई एक्ट काफी महत्वपूर्ण : डा. रश्मि

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सूचना आयोग विषय पर संगोष्ठी

संस. जागरण • पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के संचार केंद्र में सोमवार को डा. इशा सिन्हा मेमोरियल लेक्चर के तत्वावधान में राष्ट्रीय सूचना आयोग विषय पर संगोष्ठी आयोजित हुई। इसमें केयर आफ मैनेजमेंट आफ डायबिटीज इन बिहार एवं अनलाकिंग जस्टिस दी ईंपैक्ट आफ आरटीआई आन वूमेन फाइव इन इंडिया पर चिंतन-मंथन किया गया। मुख्य अतिथि केंद्रीय सूचना आयोग की सचिव डा. रश्मि चौधरी ने कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता ही आरटीआई की परिभाषा होती है। किसी भी संस्थान से जुड़े कार्यों में पारदर्शिता लाने की दिशा में आरटीआई एक्ट काफी महत्वपूर्ण है। कोई भी आदमी इस एक्ट के माध्यम से सीधे सरकार से सवाल पूछ सकता है। सरकारी विभाग से जुड़े कार्यों की जानकारी को नागरिक के साथ साझा करने का नियम भी है।

सूचना मांगने वालों का पता और ठिकाना किसी भी कार्यालय को मांगने का अधिकार नहीं है। कोई भी विश्वविद्यालय या सरकारी व गैर सरकारी संस्थान अपने सभी सूचनाओं को वेबसाइट पर डालकर प्रशासनिक जिम्मेवारी को कम कर सकता है। सूचना का अधिकार भ्रष्टाचार विरोधी भी है। आरटीआई के तहत मांगी गई सूचना 30 दिनों के अंदर ही आरटीआई के तहत उपलब्ध करा देनी है। उन्होंने कहा कि खासकर बिहार के मनरेगा से जुड़े योजनाओं में आरटीआई मांगने की मुहिम ज्यादा चल रही है। उन्होंने कहा कि इन दिनों पंचायतों में आरक्षण के तहत महिलाएं जनप्रतिनिधि तो बन जाती हैं लेकिन उनके सभी कार्यों को उनके परिवार के पुरुष ही देखते हैं जो बहुत ही गलत है। उन्होंने कहा कि महिलाओं को रूढ़िवादी सोच को छोड़ना चाहिए। मंच संचालन डा. अनुज्ञा भारती ने किया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन डा. गीतांजलि चौधरी ने किया। मौके पर डा. एके सिंह, ई. सच्चिदानंद, विजया सोनी, सुयश आनंद, श्रेया आनंद आदि मौजूद रहे।

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि में संगोष्ठी को संबोधित करतीं डा. रश्मि चौधरी • जागरण

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि में संगोष्ठी में उपस्थित शिक्षाविद् व अन्य • जागरण

महिलाओं एवं बच्चों के सुधार से ही बेहतर राष्ट्र का निर्माण संभव : स्वागत भाषण में सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की डीन डा. उषा सिंह ने कहा कि सितंबर का महीना पोषण माह के रूप में परिलक्षित है। उन्होंने कहा कि इस माह में विश्वविद्यालय में स्वास्थ्य कैंप का शुभारंभ भी किया गया है। महिलाओं एवं बच्चों के सुधार से ही बेहतर राष्ट्र का निर्माण संभव हो पाएगा। बच्चों के स्वस्थ रहने पर ही सुदृढ़ भविष्य की कल्पना की जा सकती है। डीएसडब्ल्यू डा. रमन त्रिवेदी ने कहा कि महापुरुषों के मेमोरियल कार्यक्रम से लोगों को प्रेरणा लेने की जरूरत है। कठिनाई में रहते हुए भी महापुरुषों से बेहतर जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने सभी छात्रों के लिए मेडिकल बीमा की सुविधा प्रदान की है।

डा. जेकेपी सिंह ने कहा कि छात्र-छात्राओं के पास एक माडल होना जरूरी है। उन्होंने कहा कि एक कहावत में कहा गया है जैसा राजा वैसा प्रजा लेकिन अब वह समय बदल गया है। आज जैसी प्रजा वैसा राजा का स्वरूप परिवर्तित हो चला है। आइएमए सचिव डा. एके आदित्य ने कहा कि ज्ञात एवं अज्ञात कारण से संपूर्ण देश में लगभग 20 प्रतिशत लोग गंभीर रोग से पीड़ित हैं। जिनका इलाज कर पाना लगभग असंभव है। उन्होंने कहा कि आज मधुमेह रोग भी एक बड़ी समस्या बनती जा रही है। मधुमेह से निजात पाने के लिए लोग डाइट का पूरा ख्याल रखें तथा नियमित एक्सरसाइज करें। उन्होंने सीपीआर सिस्टम के बारे में बताया।

रासायनिक खाद का उपयोग कर रहे ज्यादातर किसान

अध्यक्षीय संबोधन में कुलपति डा. पीएस पांडे ने कहा कि विश्वविद्यालय में हिंदी एवं पोषण माह के अलावा अभियंता दिवस भी मनाया जा रहा है। डा. इशा सिन्हा की पुण्यतिथि मनाने का सौभाग्य विश्वविद्यालय को प्राप्त हुआ है। पूरी दुनिया में महिलाओं के उत्थान के लिए सशक्तिकरण पर जोर दिया जा रहा है। आरटीआई से महिलाओं में और अत्यधिक सशक्तिकरण आने की संभावना है। ज्यादा सुविधा मिलने से छात्र-छात्राओं को आगे बढ़ने में दिक्कत आती है। ज्यादातर छात्र कम सुविधा में ही आगे बढ़कर अपना नाम रोशन करते हैं। छात्र-छात्राएं अपने में इच्छा शक्ति को समाहित करें। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन के इस दौर में ज्यादातर किसान अंधाधुंध रासायनिक खाद का प्रयोग कर रहे हैं।

Dainik Jagran 16-09-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पुसा के मौसम विभाग ने 17 सितंबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि पूर्वानुमानित अवधि में आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। इस अवधि में उत्तर बिहार के अधिकांश जिलों में मानसून सक्रिय रहेगा। कुछ-कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा हो सकती है। कहीं-कहीं भारी वर्षा होने की संभावना है। इस बीच मेघ गर्जन व आकाशीय बिजली गिरने की भी आशंका है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
16 सितंबर	28.0	25.0
17 सितंबर	29.0	25.0
दरभंगा		
16 सितंबर	29.0	25.0
17 सितंबर	29.0	25.5
पटना		
16 सितंबर	30.5	26.6
17 सितंबर	30.5	26.6

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 16-09-2025

भ्रष्टाचार पर अंकुश में आरटीआई अहम

कृषि विवि के पंचतंत्र सभागार में मौजूद वैज्ञानिक व छात्र।

पूसा, निज संवाददाता। केन्द्रीय सूचना आयोग की सचिव रश्मि चौधरी ने कहा कि सूचना का अधिकार (आरटीआई) कार्यप्रणाली को पारदर्शी बनाने का बेहतर विकल्प है। यह लोगों को उनके अधिकार से अवगत कराने के साथ सार्वजनिक प्राधिकार से जुड़ी जानकारियों को साझा करने का सशक्त माध्यम है। जो भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने में अहम भूमिका निभाता है।

यह महिलाओं के लिए संजीवनी के रूप में मिला है। वे सोमवार को डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के पंचतंत्र सभागार में छात्रों व वैज्ञानिकों को संबोधित कर रही थी। मौका था डॉ. ईशा सिन्हा मेमोरियल लेक्चर के दौरान राज्य में मधुमेह की देखरेख व प्रबंधन एवं भारत की महिलाओं के जीवन पर सूचना के अधिकार नियम का असर विषय पर आयोजित संगोष्ठी का। कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने कहा कि यह व्याख्यान काफी प्रभावी है। जरूरत है इसे कार्यरूप देने की। उन्होंने कहा कि स्वस्थ व्यक्ति से ही स्वस्थ समाज का निर्माण संभव है।

राज्य में मधुमेह तेजी से फैल रहा है। इसमें लाईफ स्टाईल का बड़ा रोल है। इसमें महिलाओं से अधिक पुरूष प्रभावित हो रहे हैं। उन्होंने संतुलित आहार, धूप, पानी, व्यायाम जैसे मुफ्त के चिकित्सक का सहयोग लेने की अपील की। मौके पर रेलवे के पूर्व प्रधान सीपीओ जेकेपी सिंह, डीएसडब्लू डॉ. रमण त्रिवेदी ने भी संबोधित किया। स्वागत डीन डॉ. उषा सिंह, संचालन डॉ. अनुज्ञा भारती एवं धन्यवाद डॉ. गीतांजली चौधरी ने किया। मौके पर डीआर डॉ. अनिल कुमार सिंह, डॉ. सच्चिदानंद प्र.सिन्हा, बहू विजया सोनी, अंशुमन सिन्हा, अमित मिश्रा आदि मौजूद थे।

Dainik Jagran 16-09-2025

एमएमटीएम कॉलेज में शिक्षक संघ गठन को लेकर शिक्षकों ने तेज की पहल

प्रभात खबर 17/9/25 पेज 4

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि में कार्यक्रम

विवि में फूड एवं डेयरी टेक्नोलॉजी कॉलेज की होगी स्थापना: वीसी

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के कृषि अभियंत्रण एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय में अभियन्ता दिवस हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया. शुभारंभ दीप प्रज्वलन, सरस्वती वंदना एवं विश्वविद्यालय गीत से हुआ. मुख्य अतिथि कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने भारत रत्न मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया को स्मरण किया.

उन्होंने यह भी कहा कि इंजीनियरिंग विकसित कृषि संकल्प अभियान को साकार करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. उन्होंने बताया कि शीघ्र ही विश्वविद्यालय में फूड एवं डेयरी टेक्नोलॉजी कॉलेज की स्थापना करने की बात कही. जिससे खाद्य एवं दुग्ध प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में

अतिथि को सम्मानित करते कुलपति.

अनुसंधान को मजबूती मिलेगी. विशिष्ट अतिथि डॉ. वी. पलानीमुथु ने भी भारत रत्न विश्वेश्वरैया के जीवन एवं सुदृढ़ राष्ट्रनिर्माण के लिए उनके योगदान पर व्याख्यान प्रस्तुत किया. बताया कि आने वाले दिनों में निफ्टेम-तंजावुर और आरपीसीएयू, समस्तीपुर (बिहार) के बीच एक समझौता हस्ताक्षरित करने के लिए इच्छा व्यक्त की. जिससे शोध व तकनीकी सहयोग को नई गति मिलेगी. कृषि अभियंत्रण एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. आर. सुरेश ने भी विश्वेश्वरैया के योगदानों पर प्रकाश डाला. इसके अतिरिक्त एफटी एमबीए मखाना वाले के सीईओ इं. श्रवण कुमार ने बिहार में फूड प्रोसेसिंग उद्यमिता की संभावनाओं पर काफी बल दिया. धन्यवाद ज्ञापन डॉ. विनोद कुमार यादव ने दिया.

भास्कर 17/9/25 पेज 17

पूर्वानुमान • अधिकतम तापमान 29-31 डिग्री व न्यूनतम तापमान 25-26 डिग्री के बीच रह सकता है

अगले 24 घंटे तक उत्तर बिहार के जिलों में अधिकतर स्थानों पर अच्छी बारिश की संभावना, ठनका को लेकर किया अलर्ट

सिटी रिपोर्टर | समस्तीपुर

आसमान में मध्यम बादल छाए रह सकते हैं। उत्तर बिहार के जिलों में अनुकूल मौसमीय परिस्थितियों के चलते अधिकतर जिलों में अगले 24 घंटों के दौरान तराई तथा मैदानी के भागों के जिलों में अधिकतर स्थानों पर अच्छी वर्षा की संभावना है। रस दौरान कुछ स्थानों पर भारी वर्षा भी हो सकती है। उसके बाद में पूर्वानुमानित अवधि में रुक-रुक कर हल्की वर्षा होने का अनुमान है। कुछ स्थानों पर वर्षा के दौरान तेज हवा चलने और आकाशीय बिजली गिरने की भी संभावना है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 29-31 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। न्यूनतम तापमान 25-26 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है। वहीं सापेक्ष आर्दता सुबह में 85-95 प्रतिशत के आसपास तथा दोपहर में 65-75 प्रतिशत रहने की संभावना है। इस बीच पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 6 से 10 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से पूरवा हवा चलने की संभावना है। कुछ स्थानों पर पछिया हया भी चल सकती है। तराई तथा मैदानी भागों के कुछ स्थानों पर भारी वर्षा की सम्भावना को देखते हुए मक्का एवं सब्जी के खेतों से जल निकास की उचित व्यवस्था करें। बरसात के दिनों में परती खेतों एवं खेती के मेट पर अत्यधिक दूब नोभा, घास वाली जंगल उग आते है, जिसमे कीट-व्याधि अपना निवास स्थान बनाकर अपने अण्डे को सुरक्षित रखते है। अण्डे से पिल्लू बनते ही ये आस-पास के फसलों में घुस जाते हैं एवं पौधे की शाखाओं को खाकार अत्यधिक नुकसान पहुंचाते है। आत इन जंगलों को नष्ट करने के लिए खरपतवारनाशी दया प्लाइकोसीट 41% एसएल का 10-15 मिसी प्रति लीटर पानी की दर से धील कर। कड़ी धूप के वक्त सिकाय करें।

बारिश के बीच जाता रिक्शा चालक।

बारिश के बाद अरहर की बुआई जल्द संपन्न करें

किसान अरहर की बुआई जमीन में वर्षा के बाद जल्द संपन्न कर है। इसके लिए पूसा एवं शरद अनुशंसित है। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर 20 किलोग्राम नेत्रजन 45 किलोग्राम स्फूर, 20 किलोग्राम पोटाश तथा 20 किलोग्राम सल्फर का व्यवहार करें। बुआई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम वोरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपधार करे। बुआई के लीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजीबि कल्चर से उपधारित कर बुआई करनी चाहिए। जून-जुलाई में बोई की फसल में कीट का निरीक्षण करते रहे।

दैनिक जागरण 17/9/25 पेज 5

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पुसा के मौसम विभाग ने 21 सितंबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया है कि पूर्वानुमानित अवधि में आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। इस अवधि में उत्तर बिहार के अधिकांश जिलों में मौसमीय प्रभाव के कारण मानसून सक्रिय रहेगा। कुछ-कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा हो सकती है। कहीं-कहीं भारी वर्षा होने की संभावना है। अधिकतर जिलों के तराई व मैदानी भागों में भारी बारिश का अनुमान है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
17 सितंबर	28.3	24.0
18 सितंबर	29.0	24.0
	दरभंगा	
17 सितंबर	29.0	24.0
18 सितंबर	29.0	25.0
	पटना	
17 सितंबर	30.5	26.6
18 सितंबर	30.5	26.6

डिग्री सेल्सियस में

हिन्दुस्तान 17/9/25 पेज 4

प्रशिक्षण | समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, बेगूसराय, मधुबनी एवं दरभंगा के प्रगतिशील मुर्गी पालक व प्रसार में प्रशिक्षु ले रहे हैं हिस्सा

मुर्गीपालन व्यवसाय को बढ़ावा देना समय की मांग

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि से जुड़े राष्ट्रीय गोकुल मिशन, पिपराकोठी के निदेशक डॉ. ए. कुंडू ने कहा कि मुर्गी पालन व्यवसाय को बढ़ावा देना समय की मांग है। यह आर्थिक समृद्धि में अहम भूमिका निभाता है। जरूरत है इसके तकनीकी पहलुओं का ज्ञान लेकर मार्केट की मांग के अनुरूप उत्कृष्ट प्रजातियों की मुर्गी पालन व अंडा उत्पादन जैसे व्यवसाय को आकार देने की। इसमें विवि व सरकार हरसंभव सहयोग में जुटी है।

वे मंगलवार को विवि के पंचतंत्र सभागार में समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, बेगूसराय, मधुबनी एवं दरभंगा से आये प्रगतिशील मुर्गी पालक व प्रसार कार्यकर्ताओं को संबोधित कर रहे थे। मौका था किसानों की आय बढ़ाने के लिए मुर्गी पालन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन समारोह का।

विवि के पंचतंत्र सभागार में दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते निदेशक व अन्य वैज्ञानिक।

उन्होंने कड़कनाथ जैसे प्रजातियों की चर्चा करते हुए कहा कि इसका काफी डिमांड है। वैज्ञानिक डॉ. फूलचंद ने कहा कि कम लागत व कम जगह में मुर्गी पालन व्यवसाय की शुरूआत की जा सकती है। यह ग्रामीण स्तर से लेकर शहरी क्षेत्रों तक काफी फैल चुका है।

प्रशिक्षण संयोजिका डॉ. विनिता शतपति ने संचालन करते हुए कहा कि कड़कनाथ जैसी प्रजातियों में औषधीय गुण पाये जाते हैं। जरूरत है ऐसी प्रजातियों के विकास व उसके अंडे के उत्पादन को बढ़ावा देने की। वैज्ञानिक डॉ. संजीव कुमार ने कहा विवि ज्ञान का केन्द्र है।

यहां कृषि की चुनौतियों को दूर करने का कार्य होता है। उन्होंने मुर्गी पालन जैसे कार्यों को बढ़ावा देने के लिए चेन बमाने की जरूरत पर बल दिया।

हिन्दुस्तान 17/9/25 पेज 4

विवि में खुलेगा फूड व डेयरी टेक्नोलॉजी कॉलेज

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के कुलपति डॉ. पीएस पाण्डेय ने भारत रत्न मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया को स्मरण करते हुए कहा कि विकसित कृषि संकल्प अभियान को साकार करने में इंजीनियरिंग की अहम भूमिका है। वे विवि के कृषि अभियंत्रण एवं प्रौधौगिकी महाविद्यालय के सभागार में बोल रहे थे। मौका था अभियंता दिवस समारोह का।

उन्होंने कहा कि जल्द ही विश्वविद्यालय में फूड एवं डेयरी टेक्नोलॉजी कॉलेज की स्थापना की जाएगी। जिससे [illegible] प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अनुसंधान को मजबूती मिलेगी। विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद निफ्टेम तंजावुर के निदेशक डॉ. वी. पलानीमुथु ने भारत रत्न विश्वेश्वरैया के जीवन एवं सुदृढ़ राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान की चर्चा की। उन्होंने शोध व तकनीकी सहयोग को नई गति देने के लिए पूसा स्थित कृषि विवि एवं निफ्टेम तंजावुर के बीच एमओय हस्ताक्षरित करने की इच्छा जताई। वहीं एफटी एमबीए मखाना के सीईओ ई. श्रवण कुमार ने बिहार में फूड प्रोसेसिंग उद्यमिता की संभावनाओं पर बल दिया।

कृषि अभियंत्रण व प्रौद्योगिकी कॉजेल में अभियंता दिवस मना

समारोह की शुरूआत आगत अतिथियों ने दीप प्रज्जवलित कर किया। बाद छात्रों ने सरस्वती गीत व विवि कुल गीत प्रस्तुत किया। धन्यवाद प्रोसेसिंग एवं फूड इंजीनियरिंग के प्राध्यापक डॉ. बिनोद कुमार यादव ने दिया। मौके पर महाविधालय के विभागाध्यक्ष, वरिष्ठ संकाय सदस्य, शिक्षकगण एवं छात्र-छात्राएं मौजूद थे।

प्रभात खबर 17/9/25 पेज 6

पोल्ट्री फार्मिंग महिलाओं के जीविकोपार्जन का साधन : डॉ कुंडू

वैज्ञानिक के साथ मौजूद किसान.

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के संचार केंद्र स्थित पंचतंत्र सभागार में किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए पोल्ट्री फार्मिंग एक बेहतर विकल्प विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुई. अध्यक्षता करते हुए वैज्ञानिक डॉ आनंदमय कुंडू ने कहा कि पोल्ट्री फार्मिंग ग्रामीण व घरेलू महिलाओं के जीवकोपार्जन का साधन के रूप में विकसित हो चुका है. किसानों की आय बढ़ाने के लिए पोल्ट्री फार्मिंग एक लाभदायक व्यवसाय है. क्योंकि इससे नियमित नकद आय होती है. फसल की खराब स्थिति में भी आय का वैकल्पिक साधन मिलता ही रहता है. इसके लिए बहुत बड़े निवेश की भी जरूरत नहीं होती है. सरकार द्वारा राष्ट्रीय पशुधन मिशन जैसी योजनाओं के तहत सब्सिडी और लोन की सुविधा भी उपलब्ध है. इससे लागत कम होती है. इस व्यवसाय से अंडे और मांस की निरंतर मांग रहती है. जिससे किसानों को अच्छा मुनाफा मिलता है. इसे शुरू करने के लिए ज्यादा जगह की भी आवश्यकता नहीं होती है. वैज्ञानिक डॉ फूलचंद ने कहा कि मुर्गीपालन व्यवसाय कम लागत एवं छोटी जगहों में बेहतर आमदनी देने का जरिया बन सकता है. मुर्गी के मांस में प्रोटीन, वसा एवं खनिज प्रचुर मात्रा में पायी जाती है. मुर्गी फार्म का अवशेष अन्य फसलों में नाइट्रोजन एवं फास्फोरस बड़े ही सफलतापूर्वक उत्पादन में वृद्धि करता है. संचालन करते हुए प्रसार शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष सह प्रशिक्षण कॉर्डिनेटर डॉ बिनीता सतपथी ने कहा कि इस सत्र में प्रशिक्षणार्थियों की प्री एवं पोस्ट अर्जित ज्ञान का हमारे वैज्ञानिक अवलोकन करेंगे. धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डॉ संजीव कुमार ने दिया. मौके पर एटीएम आदित्य पांडेय, अजहर इमाम खान, कैसर खान, अफसर खान, टेक्निकल टीम के सुरेश कुमार, विक्की कुमार, सूरज कुमार आदि मौजूद थे.

एमएमटीएम कॉलेज में शिक्षक संघ गठन को लेकर शिक्षकों ने तेज की पहल

प्रभात खबर 17/9/25 पेज 4

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि में कार्यक्रम

विवि में फूड एवं डेयरी टेक्नोलॉजी कॉलेज की होगी स्थापना: वीसी

प्रतिनिधि, पूसा

अतिथि को सम्मानित करते कुलपति.

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के कृषि अभियंत्रण एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय में अभियन्ता दिवस हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया. शुभारंभ दीप प्रज्वलन, सरस्वती वंदना एवं विश्वविद्यालय गीत से हुआ. मुख्य अतिथि कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने भारत रत्न मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया को स्मरण किया.

उन्होंने यह भी कहा कि इंजीनियरिंग विकसित कृषि संकल्प अभियान को साकार करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. उन्होंने बताया कि शीघ्र ही विश्वविद्यालय में फूड एवं डेयरी टेक्नोलॉजी कॉलेज की स्थापना करने की बात कही. जिससे खाद्य एवं दुग्ध प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अनुसंधान को मजबूती मिलेगी. विशिष्ट अतिथि डॉ. वी. पलानीमुथु ने भी भारत रत्न विश्वेश्वरैया के जीवन एवं सुदृढ़ राष्ट्रनिर्माण के लिए उनके योगदान पर व्याख्यान प्रस्तुत किया. बताया कि आने वाले दिनों में निफ्टेम-तंजावुर और आरपीसीएयू, समस्तीपुर (बिहार) के बीच एक समझौता हस्ताक्षरित करने के लिए इच्छा व्यक्त की. जिससे शोध व तकनीकी सहयोग को नई गति मिलेगी. कृषि अभियंत्रण एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. आर. सुरेश ने भी विश्वेश्वरैया के योगदानों पर प्रकाश डाला. इसके अतिरिक्त एफटी एमबीए मखाना वाले के सीईओ इं. श्रवण कुमार ने बिहार में फूड प्रोसेसिंग उद्यमिता की संभावनाओं पर काफी बल दिया. धन्यवाद ज्ञापन डॉ. विनोद कुमार यादव ने दिया.

कार्यक्रम • केंद्रीय कृषि विवि पूसा के कृषि अभियंत्रण एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय में अभियंता दिवस का हुआ भव्य आयोजन

इंजीनियरिंग कृषि में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही : वीसी

17/9/25 पेज 18

भास्कर न्यूज़ | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पुसा के कृषि अभियंत्रण एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय में अभियंता दिवस का समारोह काफी हर्ष व उल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन, सरस्वती वंदना और विश्वविद्यालय के कुलगीत से हुआ। इस अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने सर्वप्रथम भारत रत्न मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया को स्मरण किया। उन्होंने कहा कि मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया भारत के महान अभियंता एवं राजनयिक थे। उन्हें सन 1955 में भारत के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से विभूषित किया गया था। उनके जन्मदिन को अभियंता दिवस के रूप में मनाया जाता है। कुलपति ने यह भी उल्लेख किया कि इंजीनियरिंग विकसित कृषि संकल्प अभियान को साकार करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्होंने कहा कि शीघ्र ही विश्वविद्यालय में फूड एवं डेयरी टेक्नोलॉजी कॉलेज की स्थापना की जाएगी। इस कॉलेज के खुलने से खाद्य एवं दुग्ध प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में किये जाने वाले अनुसंधान को काफी मजबूती मिलेगी। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. वी पलानीमुथु (निदेशक निफ्टेम-तंजावुर) ने भी भारत रत्न विश्वेश्वरैया के जीवन एवं सुदृढ़ राष्ट्रनिर्माण हेतु उनके योगदान पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि आने वाले दिनों में निफ्टेम-तंजावुर और कृषि विवि पुसा के बीच एक एमओयू हस्ताक्षर किया जाएगा। इस एमओयू के साइन होने से शोध व तकनीकी सहयोग को नई गति मिलेगी। कृषि अभियंत्रण एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. आर सुरेश ने भी विश्वेश्वरैया के योगदानों पर प्रकाश डाला। इसके अतिरिक्त एफटी एमबीए (मखाना) के सीईओ इंजीनियर श्रवण कुमार ने बिहार में फूड प्रोसेसिंग उद्यमिता की संभावनाओं पर बल दिया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. बिनोद कुमार यादव (प्राध्यापक प्रोसेसिंग एवं फूड इंजीनियरिंग) के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में डॉ. दिनेश रजक के अलावे सभी विभागाध्यक्ष, वरिष्ठ संकाय सदस्य, शिक्षकगण एवं छात्र-छात्राएँ बड़ी संख्या में थे।

कार्यक्रम को संबोधित करते कुलपति और कार्यक्रम में मौजूद अभियंता।

सरायरंजन : राजकीय अभियंत्रण महाविद्यालय में हिंदी दिवस का आयोजन

सरायरंजन| प्रखंड के नरघोघी स्थित राजकीय अभियंत्रण महाविद्यालय में समारोहपूर्वक हिंदी दिवस मनाया गया। इसका आयोजन महाविद्यालय के कला एवं संकाय क्लब उड़ान ने किया । समारोह में महाविद्यालय के छात्र छात्राओं ने विभिन्न क्रियाकलापों और प्रतिस्पर्धाओं में भाग लिया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राजकिशोर तुगनायत, उड़ान के फैकल्टी कॉर्डिनेटर अभय कुमार और ई सेल के अध्यक्ष तन्मय कुमार भी उपस्थित रहे । प्राचार्य ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी हमारी सांस्कृतिक धरोहर है जिसका हमें और हमारे पूरे राष्ट्र को गर्व होना चाहिए । कार्यक्रम में विभिन्न प्रतिस्पर्धाओं में काव्य पाठ में प्रथम शिवम, द्वितीय संस्कृति, तृतीय संदेश शिवम, क्विज में आशीष कुमार प्रथम, सजन कुमार में द्वितीय और अभिषेक कुमार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया , वाद विवाद में श्रेया राज ने प्रथम, श्रेय कुमार ने द्वितीय और संदेश शिवम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया, निबंध लेखन प्रतियोगिता में अभिनव कुमार ने प्रथम, नवीन कुमार ने द्वितीय और दीप मोहन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के दौरान हिंदी को बढ़ावा देने के लिए छात्र-छात्राओं को जागरूक भी किया गया। कार्यक्रम के आयोजन में उड़ान के कोर कॉर्डिनेटर 22 बैच के प्रेम राज शुक्ला, अभिषेक कुमार, जिया कुमारी, मुस्कान कुमारी, रोहित कुमार, निशु कुमारी,रानी कुमारी, पंकज एवं रविरंजन का अतएव 23 बैच के कॉर्डिनेटर बसंत, साद, कृष्ण , अभिषेक चौधरी, अभिषेक, बैजू, दिनकर, अनुष्का, निहारिका, तनु प्रिय, ऋचा, आकांक्षा, रिद्धि मधुमिता एवं आरोही ने महत्वपूर्ण भागीदारी निभाई।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 21 सितंबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया है कि पूर्वानुमानित अवधि में आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। इस अवधि में उत्तर बिहार के अधिकांश जिलों में मौसमीय प्रभाव के कारण मानसून सक्रिय रहेगा। कुछ-कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा हो सकती है। कहीं-कहीं भारी वर्षा होने की संभावना है। अधिकतर जिलों के तराई व मैदानी भागों में भारी बारिश का अनुमान है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
19 सितंबर	28.3	24.0
20 सितंबर	29.0	24.0
दरभंगा		
19 सितंबर	29.0	24.0
20 सितंबर	29.0	25.0
पटना		
19 सितंबर	30.5	26.6
20 सितंबर	30.5	26.6

डिग्री सेल्सियस में

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 24 सितंबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया है कि उत्तर बिहार के अधिकांश क्षेत्रों मे पूर्वानुमानित अवधि में आसमान मे बादल छाए रह सकते है। इस अवधि मे कुछ जिलो के अधिकांश तराई तथा मैदानी भागों मे अच्छी अच्छी वर्षा होने का अनुमान है। एक-दो स्थानों पर आकाशीय बिजली भी गिरने की आशंका है। एक-दो दिन बाद आमतौर पर मौसम शुष्क रहने की संभावना है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
20 सितंबर	29.0	24.8
21 सितंबर	29.0	25.0
	दरभंगा	
20 सितंबर	29.0	25.0
21 सितंबर	30.5	25.0
	पटना	
20 सितंबर	32.8	25.8
21 सितंबर	32.8	25.8

डिग्री सेल्सियस में

भास्कर 22/9/25 पेज 17

बिहार के प्रगतिशील किसान

पूर्वी चम्पारण के सुबोध का 2001 में 10 कट्ठे से शुरू खेती का सफर 120 कट्ठे तक पहुंचा

पौधों के अपशिष्ट व गोबर की खाद से उपजाते हैं अलपान केला

रितेश | भास्कर नेटवर्क

पूर्वी चम्पारण में एक गांव है बिशुनपुर। पिपराकोठी प्रखंड के

दक्षिणी ढेकहां पंचायत के इस गांव की पहचान केले की खेती से है। यह पहचान बनाई है वहां के किसान सुबोध कुमार ने। 2001 में 10 कट्ठे से उन्होंने शुरुआत की थी। तब गांव के किसान पारंपरिक खेती करते थे। सुबोध ने कहीं केले की बागवानी देखी और ठान लिया कि अब केला उपजाएंगे। 10 कट्ठे से शुरू यह सफर आज 120 कट्ठे की खेती तक पहुंच चुका है। पर बात सिर्फ उनकी तरक्की तक सीमित नहीं है। उन्हें इस तरक्की तक ले जाने वाला तरीका खास है। वे रासायनिक खाद का प्रयोग नहीं करते हैं। इस वजह से उनके बागान में उपजा केला स्वास्थ्य की दृष्टि से बिल्कुल सुरक्षित होता है। वे गोबर से निर्मित खाद का प्रयोग अपने बागानों में करते हैं। साथ में केले के पौधों के अपशिष्ट को कहीं फेंकते नहीं, बल्कि उसका प्रयोग भी खाद के तौर पर करते हैं। केले के थंब का खाद के रूप में प्रयोग का उनका तरीका अपना नवाचार है और वे पूर्णतः वैज्ञानिक विधि अपनाते हैं।

सुबोध ने बताया कि वे केले के पौधों की कतारों के बीच केले के पौधों के अपशिष्ट डाल देते हैं। इसे कुदाल से टुकड़े-टुकड़े करके छोड़ देते हैं। कुछ दिनों के पश्चात यह मिट्टी में मिल जाता है। गोबर की खाद का प्रयोग वे पहले ही कर चुके होते हैं। उनका कहना है कि गोबर की खाद व केले के पौधे के अपशिष्ट मिट्टी को जितना उर्वर बनाते हैं, उतना रासायनिक खाद के प्रयोग से उर्वरता नहीं आ पाती। साथ ही रासायनिक खाद की सबसे बड़ी कमी वे यह बताते हैं कि यह ज्यादा समय तक कारगर नहीं होती। दो-तीन महीनों में ही दोबारा रासायनिक खाद का प्रयोग करना पड़ जाता है, जबकि गोबर की खाद का एक बार प्रयोग छह से आठ महीनों तक पौधों को स्वस्थ रखता है और बढ़वार भी काफी होती है।

एक घौद में 200 से 250 तक केले

इनके खेत से एक बार की कटिंग में 100 से ज्यादा घौद निकलते हैं। एक घौद में 200 से 250 तक केले रहते हैं। व्यापारी बागान से ही 400 रुपए प्रति घौद कीमत देकर ले जाते हैं। इनके केले की खपत पूर्वी चम्पारण के अलावा पश्चिम चम्पारण व रक्सौल तक होती है। वे अलपान वैरायटी केले की खेती कर रहे हैं। श्रावण, भाद्रपद, आश्विन एवं कार्तिक महीने में केले का भरपूर उत्पादन होता है। वे बताते हैं कि केले की खेती के लिए ऊंची जमीन होनी चाहिए। प्रत्येक पौधे के बीच में 12 हाथ की दूरी होनी चाहिए जिससे साफ-सफाई करने में दिक्कत नहीं हो। मुख्य रूप से सावन के महीने में केला का पौधा लगाया जाता है। एक पौधा लगाने के बाद उसे वयस्क पौधा बनने एवं उत्पादन तक 14 से 15 महीने का समय लग जाता है।

यह खबर दूसरों से भी शेयर करें

इन प्रगतिशील किसान से और जानें 9534848332

आप भी किसान हैं और कोई अनोखा नवाचार किया है तो पूरी जानकारी, फोटो-वीडियो अपने नाम-पते के साथ हमें 8770590566 पर वाट्सएप करें। ध्यान रहे, आपका किया काम किसी भी मीडिया या सोशल मीडिया में जारी न हुआ हो।

भास्कर 22/9/25 पेज 20

खेती-किसानी • फूलों की खेती से आने वाले त्योहार के मौसम में कर सकते हैं अच्छी कमाई : कृषि वैज्ञानिक

किसान सितंबर से दिसंबर माह तक अपने खेतों में वैज्ञानिक विधि से गेंदा के फूल की खेती करें, इस खेती से होगा काफी फायदा

भास्कर न्यूज | पूसा

भारत में पुष्प व्यवसाय के क्षेत्र में गेंदा फूल की खेती काफी महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इस फूल का प्रयोग धार्मिक तथा सामाजिक अवसरों काफी वृहद रूप से किया जाता है। बिहार के किसान सितंबर से दिसंबर माह तक अपने खेतों में वैज्ञानिक विधि से गेंदा फूल की खेती कर आने वाले त्योहार के मौसम में अच्छी से अच्छी कमाई कर सकते हैं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र शिवहर की वैज्ञानिक डॉ. संचिता घोष ने दी। उन्होंने कहा कि गेंदा फूल का प्रयोग शादी, जन्मदिन, पूजा और त्यौहार के अलावे सरकारी एवं निजी संस्थानों में आयोजित होने वाले विभिन्न तरह के समारोहों में काफी जोर-शोर से किया जाता है। इतना ही नहीं इस फूल का प्रयोग आजकल मुर्गी के भोजन के रूप में भी बड़े पैमाने पर किया जाने लगा है। मुर्गियों को इस फूल का सेवन कराने से मुर्गी के अंडे की जर्दी का रंग काफी पीला हो जाता है और अंडे की गुणवत्ता भी काफी बढ़ जाती हैं।

खेतों में की गई गेंदा के फूल की खेती।

वैज्ञानिक के बताए गए विधि से करें गेंदा के फूल की रोपनी

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि किसानों को गेंदा फूल की रोपनी वैज्ञानिक विधि से करनी चाहिए। किसान इसकी रोपनी 40 गुने 40 सेंटीमीटर की दूरी पर करें। किसान गेंदा को टमाटर, बैंगन, परवल, मिर्च आदि के सब्जियों के साथ भी मेर पर लगा सकते हैं। मेर पर गेंदा फूल की खेती करने से सब्जियों की फसल को कीट के प्रकोप से भी बचाया जा सकता है।

सितंबर में लगाए जाने वाले गेंदा फूल का बाजारों में मिलती है अधिक कीमत

कृषि वैज्ञानिक डॉ. संचिता के अनुसार सितंबर के माह में की जाने वाली गेंदा फूल की खेती किसानों के लिए अत्यंत ही लाभकारी है। **इस समय में** लगाएं जाने वाले गेंदा फूल के पेड़ों में नवरात्रि, **दिवाली, छठ** आदि जैसे महत्वपूर्ण त्योहारों के समय में फूल आने लगते हैं जिससे किसानों को इसका काफी अच्छा रेट मिल जाता है। उन्होंने बताया कि किसान गेंदा की उन्नत किस्में जैसे नारंगी पुसा, बसंती पुसा, शिराकोल आदि को लगाकर बेहतर उपज और आमदनी दोनों प्राप्त कर **सकते हैं। पूसा नारंगी 120 से 125 दिनों में फूल देने लगते हैं तथा यह 50 से 60 दिनों तक फूल देता रहता हैं। इसकी उपज 25 से 30 टन प्रति हेक्टेयर होती हैं। इसके अलावे पूसा बसंती की** बात करें तो यह प्रभेद 140 से 45 दिनों में फूल देना शुरू करते हैं। उन्होंने बताया कि किसान गेंदा के फूल की लड़ी बनाकर भी पर्व त्यौहार में अच्छी कमाई कर सकते हैं।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 24 सितंबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया है कि उत्तर बिहार के अधिकांश क्षेत्रों में पूर्वानुमानित अवधि मे आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। इस अवधि में कुछ जिलों के अधिकाश तराई तथा मैदानी भागो मे अच्छी अच्छी वर्षा होने का अनुमान है। एक-दो स्थानो पर आकाशिय बिजली भी गिरने की आशंका है। एक-दो दिन बाद आमतौर पर मौसम शुष्क रहने की संभावना है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
22 सितंबर	30.0	25.0
23 सितंबर	30.5	25.0
दरभंगा		
22 सितंबर	30.5	25.0
23 सितंबर	30.5	25.5
पटना		
22 सितंबर	31.8	26.6
23 सितंबर	31.8	26.6

डिग्री सेल्सियस में

प्रभात खबर 22/5/25 पेज 4

क्रांतिकारी बदलाव ला रहा कृषि ज्ञान वाहन

कृषि विवि

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित प्रसार शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ विनीता सतपथी ने बताया कि पीपरा कोठी स्थित कृषि विज्ञान केन्द्र में आयोजित तीन दिवसीय कृषि, मत्स्यिकी एवं पशुधन उन्नति मेला सह किसान सम्मान समारोह आयोजित किया गया.

मेला में कृषि ज्ञान वाहन के माध्यम से किसानों को परंपरागत कृषि, फल, सब्जी, फूल, मशरूम व अन्य लाभदायक फसलों के उत्पादन की जानकारी दी गई. डॉ. एके सिंह ने चतुर्थ कृषि रोड मैप के विभिन्न आयामों के बारे में जानकारी दी. उन्होंने कृषि ज्ञान वाहन की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला. कहा कि यह वाहन किसानों को कृषि संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान कर कृषि क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव ला रहा है. किसानों को सरकार की योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया. लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया.

विवि में स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम का आयोजन

सफाई करते वैज्ञानिक व छात्र-छात्राएं.

पूसा . डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित कृषि अभियंत्रण एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय परिसर में मंगलवार को स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम का आयोजन किया गया. एनएसएस समन्वयक डॉ. दिनेश रजक ने संचालन किया. अध्यक्षता अधिष्ठाता डॉ. राम सुरेश ने की. उन्होंने स्वच्छता स्वभाव, स्वच्छता संस्कार विषय पर छात्रों को संबोधित करते हुए स्वच्छता के साथ-साथ स्वच्छ स्वभाव एवं स्वच्छ संस्कार को दैनिक जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी. प्राध्यापक डॉ. मुकेश श्रीवास्तव, डॉ. विनोद कुमार यादव, डॉ. सुदर्शन प्रसाद, ई. मनोज कुमार, डॉ. निकिता मिश्रा, डॉ. श्रेया, नीरज कुमार, संतोष कुमार उपस्थित रहे.कार्यक्रम में सभी छात्र एवं छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए स्वच्छता के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाई और सक्रिय सहभागिता दर्ज कराई.

प्रभात खबर
Wednesday, September 24, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68d2f2c116ef56b8c20a2

भास्कर 25/9/25 पेज 19

स्वच्छ स्वभाव एवं संस्कार को दैनिक जीवन में अपनाना जरूरी : रामसुरेश

पूसा विवि में स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम का किया गया आयोजन

भास्कर न्यूज | पूसा

स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम में शामिल वैज्ञानिक व छात्र।

स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम का आयोजन पूसा विवि के कृषि अभियंत्रण एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय में मंगलवार सुबह किया गया। कार्यक्रम का संचालन महाविद्यालय के सह-प्राध्यापक एवं एनएसएस समन्वयक डॉ. दिनेश रजक ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राम सुरेश ने किया। इस अवसर पर डॉ. राम सुरेश ने स्वच्छता स्वभाव व स्वच्छता संस्कार विषय पर छात्रों को संबोधित करते हुए स्वच्छता के साथ-साथ स्वक्ष स्वभाव एवं स्वक्ष संस्कार को अपने दैनिक जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में सभी छात्र एवं छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए स्वच्छता के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाई और सक्रिय सहभागिता दर्ज कराई। मौके पर महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. मुकेश श्रीवास्तव, डॉ. विनोद कुमार यादव, डॉ. सुदर्शन प्रसाद, ई. मनोज कुमार, डॉ. निकिता मिश्रा, डॉ. श्रेया सहित अन्य सहायक प्राध्यापक, कर्मचारीगण नीरज कुमार, संतोष कुमार मौजूद थे।

P.T.O

भास्कर 24/9/25 पेज 20

वर्तमान समय में किसानों को जलवायु अनुकूल कृषि को 100 प्रतिशत अपनाने की जरूरत : डॉ. मयंक

राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा में जलवायु अनुकूल कृषि विषय पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण

भास्कर न्यूज | पूसा

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्लाय पूसा के संचार केंद्र स्थित पंचतंत्र सभागार में जलवायु अनुकूल कृषि विषय पर चल रहा पांच दिवसीय प्रशिक्षण मंगलवार को संपन्न हो गया। समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए डीन पीजीसीए सह निदेशक प्रसार शिक्षा डा. मयंक राय ने कहा कि परिवर्तन संसार का नियम व एक कटुसत्य तथ्य है। इसे मिटाने से भी मिटाया नहीं जा सकता है। इसी परिवर्तन की कड़ी में विश्वस्तरीय जलवायु परिवर्तन से कृषि एवं किसान समाहित है। कृषि वैज्ञानिक अनुसंधान के बदौलत किसानों एवं कृषि को बचाने की दिशा में सतत शोध में लगे है। परिणाम भी बेहतर आ रहा है। जरूरत है किसान को जलवायु अनुकूल कृषि को सौ प्रतिशत अपनाने की। उन्होंने कहा कि पर्यावरण अनुकूल बनाने के लिए मृदा संरक्षण एवं जल संचय की दिशा में किसानों को जागरूक होने की आवश्यकता है। कृषि से पैदावार बढ़ाने के लिए रासायनिक खादों का अंधाधुंध हो रहे प्रयोग को रोकने की जरूरत है। कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से जलवायु अनुकूल कृषि पर विशेष रूप से प्रशिक्षण आयोजित किया जा रहा है। उसमें अधिक से अधिक किसानों की सहभागिता जरूरी है। शश्य विज्ञान विभाग के प्राध्यापक सह. जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केंद्र के निदेशक डॉ.रत्नेश कुमार झा ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के अनुसार किसान को अपने आप में परिवर्तन लाकर ही विकट परिस्थिति से सामना करने की जरूरत है। किसानों के लिए वैज्ञानिक का दरवाजा 24 घंटे खुला हुआ है। कृषि विज्ञान केंद्र के प्रमुख वैज्ञानिक डा. आरके तिवारी ने कहा कि किसानों को वैज्ञानिकी तकनीक का उपयोग कर जलवायु परिवर्तन की दिशा में पहल करने की आवश्यकता है। संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डॉ.बिनीता सतपथी ने की। मौके पर टेक्निकल टीम के सुरेश कुमार, सूरज कुमार, विक्की कुमार आदि मौजूद थे।

प्रशिक्षण के समापन में शामिल किसान।

स्वच्छता संस्कार विषय पर परिचर्चा आयोजित

पूसा। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के कृषि अभियंत्रण एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, पूसा परिसर में मंगलवार को स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। एनएसएस समन्वयक डॉ. दिनेश रजक के मार्गदर्शन एवं डीन डॉ.राम सुरेश की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में मौजूद कर्मियो ने साफ सफाई की। वहीं इस दौरान स्वच्छता स्वभाव, स्वच्छता संस्कार विषय परिचर्चा आयोजित की गई।

Hindustan 24-09-2025

मोटे अनाज को बढ़ावा दिया जा रहा : डॉ तिवारी

समस्तीपुर (एसएनबी)। स्वास्थ्य ही सबसे बडा धन है, बिना अच्छे स्वास्थ्य के पैसे का कोई महत्व नहीं है। पौष्टिक आहार एवं सुपाच्य भोजन शरीर में बिमारियों से लड़ने की क्षमता बढाते है और मोटे अनाज इस केलिए सर्वाधिक उपयुक्त है। प्राचीन काल में इन्हीं मोटे अनाज के दम पर लोग स्वस्थ रहते थे।

केविके बिरौली में पोषण माह के तहत पोषण संबंधी जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से प्रशिक्षण आयोजित

उक्त बातें वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉ रविन्द्र कुमार तिवारी ने एक प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान कही। उन्होंने मंगलवार को राष्ट्रीय पोषण माह के दौरान पोषण संबंधी जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के बिरौली स्थित कृषि विज्ञान केन्द्र में एक दिवसीय प्रशिक्षण का अयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में मोहनपुर प्रखंड की 50 आँगनवाड़ी की सेविकाएँ उपस्थित हुई। इस अवसर पर प्रशिक्षण का

प्रशिक्षण में शामिल प्रशिक्षु व अन्य।

शुभारंभ एवं प्रतिभागियो का स्वागत करते हुए केन्द्र के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉ रविन्द्र कुमार तिवारी ने बताया कि पोषण माह का लक्ष्य मुख्य रूप से वे कुपोषित महिलायें एवं बच्चे है जिनकी स्थिति दयनीय होती है। इस दौरान उन्होंने पोषण की महत्ता के बारे में बताते हुए मोटे अनाज के लिए चल रहे परियोजना के बारे में जानकारी साझा की। सभी मोटे अनाज के पौष्टिक गुणों के बारे में बताते हुए उन्होंने बताया कि इसकी उपज बढाने के लिए केन्द्र द्वारा विभिन्न परियोजनाएँ चलाई जा रही है तथा विश्वविद्यालय द्वारा इनकी बीज भी उपलब्ध कराई जा रही है। केन्द्र की गृह वैज्ञानिक श्रीमति वर्षा कुमारी ने खाद्य एवं पोषण की जानकारी दी उन्होंने बताया की गेहूँ, मक्का, मूंग, मडुआ एवं अन्य मोटे अनाजों से किस प्रकार हम छोटे बच्चों के लिए विभिन्न उपरी आहार बना सकते है। जो बाजार में उपलब्ध उपरी आहार की तुलना में कम खर्च में अधिक पौष्टिक होता है। इस दौरान उन्होंने बताया कि कैसे किशोर अवस्था से महिलाओं में धातृ अवस्था तक अनिमिया साथ ही कुपोषण का कुचक्र चालू होता है। वहीं उद्यान वैज्ञानिक डॉ. धीरू कुमार तिवारी ने पोषण वाटिका में लगाये जाने वाले सब्जियों तथा सभी सब्जियों के पौष्टिक गुण के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम के अंत में सभी प्रशिक्षणार्थी को केन्द्र के विभिन्न इकाई का भ्रमण कराया गया एवं वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन, नर्सरी प्रबंधन, पोषण वाटिका, .षि अभियंत्रण एवं अन्य की जानकारी दी तथा एक आम का पौधा आँगनवाडी केन्द्र पर लगाने हेतु प्रदान किया गया।

Rashtriya Sahara 24-09-2025

किसान मेले में शिवशक्ति एग्रीटेक लिमिटेड ने किसानों को किया जागरूक

प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते।

जाले। कृषि विज्ञान केन्द्र केभीके जाले, दरभंगा द्वारा आयोजित दो दिवसीय किसान मेले में शिवशक्ति एग्रीटेक लिमिटेड ने किसानों को जागरुक करते हुए डिविजनल सर्विस मैनेजर सुजीत सिंह ने किसानों को मृदा संरक्षण के साथ कार्बनिक खेती के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि समय के मांग के अनुकूल किसानों को प्राकृतिक खेती को अपनाते हुए मृदा की उर्वरक क्षमता बढ़ाने की जरूरत है। शिवशक्ति के उत्पाद विंगरोजी, खास ,जुपिटर प्लस, धनराज धरनी, चिता,आदि खेती के लिए संतुलित पोषक उपलब्ध कराते है एवं सुरक्षा प्रदान करते है जिससे मिट्टी की उर्वरा शक्ति बनी रहती है और किसानों को अपेक्षाकृत भरपूर पैदावार प्राप्त होती है। वही कंपनी के रीजनल सेल्स मैनेजर संतोष झा कहा कि किसानों को परंपरागत खेती से हटकर वाणिज्यकी खेती को बढ़ाने की जरूरत है। ऐसे में किसान वानिकी खेती की ओर बढ़ सकते है। इससे भी हमारे उत्पाद सागवान एवं महोगनी के पौधा उपलब्ध कराते है एवं सर्विस प्रदान करते है। मौके पर कंपनी के कृषि अधिकारी रितेश कुमार सिंह मौजूद रहे। इस दो दिवसीय कार्यक्रम मे कम्पनी ने दूसरा स्थान प्राप्त किया।

Rashtriya Sahara 24-09-2025

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि के संचार केंद्र स्थित पंचतंत्र सभागार में कार्यक्रम

जलवायु अनुकूल कृषि अपनाएं किसान

प्रतिनिधि, पूसा

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के संचार केंद्र स्थित पंचतंत्र सभागार में जलवायु अनुकूल कृषि विषय पर जारी प्रशिक्षण संपन्न हो गया. अध्यक्षता करते हुए डीन पीजीसीए सह निदेशक प्रसार शिक्षा डा मयंक राय ने कहा कि आधुनिक कृषि के दौर में फसलों से बेहतर उत्पादन लेने के लिए किसानों को जलवायु अनुकूल कृषि तकनीक अपनाने की जरूरत है. परिवर्तन संसार का कटु सत्य सत्य है. इसे नहीं मिटाया जा सकता है. इसी परिवर्तन में विश्वस्तरीय जलवायु परिवर्तन से कृषि एवं किसान मर्माहत

समापन सत्र को संबोधित करते वैज्ञानिक.

हैं. वैज्ञानिक अनुसंधान की बदौलत किसानों एवं कृषि को बचाने की दिशा में सतत शोध में लगे हैं. परिणाम भी बेहतर आ रहा है. जरूरत है किसान को जलवायु अनुकूल कृषि को सौ प्रतिशत अपनाने की. उन्होंने कहा कि पर्यावरण अनुकूल बनाने के लिए मृदा संरक्षण एवं जल संचय की दिशा में किसानों को जागरूक होने की आवश्यकता है. कृषि से पैदावार बढ़ाने के लिए रासायनिक खादों का अंधाधुंध हो रहे प्रयोग को रोकने की जरूरत है. कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से जलवायु अनुकूल कृषि पर विशेषरूप से प्रशिक्षण आयोजित किया जा रहा है. उसमें अधिक से अधिक किसानों की सहभागिता जरूरी है. शश्य विज्ञान विभाग के प्राध्यापक सह जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केंद्र के निदेशक डॉ रत्नेश कुमार झा ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के अनुसार किसान को अपने आप में परिवर्तन लाकर ही विकट परिस्थिति से सामना करने की जरूरत है. किसानों के लिए वैज्ञानिक का दरवाजा 24 घंटे खुला हुआ है. कृषि विज्ञान केंद्र के प्रमुख वैज्ञानिक डा आरके तिवारी ने कहा कि किसानों को वैज्ञानिकी तकनीक का उपयोग कर जलवायु परिवर्तन की दिशा में पहल करने की आवश्यकता है. संचालन वैज्ञानिक डॉ बिनीता सतपथी ने किया. मौके पर सुरेश कुमार, सूरज कुमार, विक्की कुमार आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Thursday, September 25, 2025
Samastipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68d441ae21f53e73f8b0c35a

फसल अवशेष को खेतों में ही डालने की जरूरत : डॉ बेहरा

शुभारंभ करते निदेशक शिक्षा डॉ यूएस बेहरा .

पूसा . डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित ईख अनुसंधान संस्थान के सभागार में उन्नत तकनीक द्वारा गन्ना उत्पादन प्रसंस्करण एवं रोजगार सृजन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ. अध्यक्षता करते हुए निदेशक डॉ यूएस बेहरा ने कहा कि फसल से बेहतर उत्पादन लेने के लिए कृषि अवशेषों को खेतों के अंदर ही डालने की जरूरत है. जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति बरकरार रखा जा सके. जलवायु परिवर्तन से खासकर गन्ने की फसल बहुत कम प्रभावित होने की बात सामने आ रही है. खरपतवार नियंत्रण करने की आवश्यकता होती है. फसल अवशेष मिट्टी को ऊर्जावान बनाने में भी सहायक होता है. बिहार में गन्ना उत्पादन के बेहतरी के लिए किसान ऑन के साथ वैज्ञानिक कदम से कदम मिलाकर चल रहे है. विवि से निकलने वाले नवीनतम तकनीकों को किसानों के खेत तक पहुंचाने का भी प्रयास किया जा रहा है. संस्थान के निदेशक डॉ देवेंद्र सिंह ने आगत अतिथियों का स्वागत किया. निदेशक अनुसंधान डॉ अनिल कुमार सिंह ने कहा कि गन्ना की खेती को लाभकारी बनाने के लिए उत्पादकों को वैल्यू एडिशन की तरफ मुखातिब होने की आवश्यकता है. संचालन वैज्ञानिक डॉ सुनीता कुमारी मीना एवं धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डॉ एसएन सिंह ने किया. मौके पर उप निदेशक गन्ना विकास धर्मवीर सिंह, डॉ डीएन कामत, डॉ मिनितुल्लाह, डॉ बलवंत कुमार, डॉ सीके झा, डॉ दयाराम, डॉ ललिता राणा आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Friday, September 26, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68d594e3097c331b2dd50b85

कवि सम्मेलन में कवियों ने खूब लूटी वाहवाही

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित विद्यापति सभागार में हिंदी चेतना माह के अवसर पर कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया. उद्घाटन सत्र में आगत अतिथियों ने देशरत्न डॉ राजेंद्र बाबू के प्रतिमा पर माल्यार्पण किया. कवि दमदार बनारसी, नवल सुधांशु, प्रशांत बजरंगी एवं अर्चना चौधरी की दमदार कविताओं की प्रस्तुति से श्रोताओं ने अपनी तालियों की गड़गड़ाहट से सभागार को गुंजायमान कर दिया. मौके पर डीन पीजीसीए सह प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ मयंक राय के अलावा डीआर डॉ अनिल कुमार सिंह, डॉ शंकर झा, डा महेश कुमार, डॉ सत्यप्रकाश आदि मौजूद थे.

उद्घाटन करते डीन डा मयंक राय.

प्रभात खबर
Friday, September 26, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68d594e3097c331b2dd50b85

स्वच्छता में ही निवास करते हैं भगवान : कुलपति

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में कुलपति डॉ पीएस पांडेय की अध्यक्षता में स्वच्छता ही सेवा अभियान कार्यक्रम आयोजित किया गया. कुलपति, वैज्ञानिक एवं छात्रों ने मुख्य गेट से बैंक चौक होते हुए पार्किंग स्थल तक साफ-सफाई की. कुलपति डॉ पांडेय ने कहा कि स्वच्छता में भगवान का वास होता है. उन्होंने कहा कि सबको अपने आसपास साफ-सफाई रखनी चाहिए. उन्होंने कहा कि गंदगी बीमारियों की जड़ है. निदेशक छात्र कल्याण डॉ रमन त्रिवेदी ने कहा कि विश्वविद्यालय में स्वच्छता का यह अभियान लगातार संचालित होता रहेगा. निदेशक अनुसंधान डॉ एके सिंह, निदेशक शिक्षा डा उमाकांत बेहरा, डॉ राकेश मणि शर्मा, डॉ महेश कुमार, डॉ सीके झा, ई. मनोज कुमार आदि थे. दूसरी ओर पूसा जिला गंगा समिति के सौजन्य से स्वच्छता ही सेवा के तहत विशेष श्रमदान के संदेश के साथ दक्षिणी हरपुर, बूढ़ी गंडक नदी के जानकी घाट तट पर सफाई की गयी.

अभियान में शामिल प्रतिभागी व अन्य.

समिति के जिला परियोजना पदाधिकारी नीरजेश कुमार, अशोक कुमार, बीडीओ रविश कुमार रवि, सरपंच संजय कुमार साह ने श्रमदान कर पौधारोपण किया.

नेतृत्व स्वच्छता पर्यवेक्षक पप्पू कुमार ने किया. गोपाल त्रिवेदी, ऋषि कुमार, मनीष कुमार, सुधीर कुमार राम, संजू देवी, गीता देवी, सुमित्रा देवी, पिंकी देवी, ललिता देवी, मंजू देवी, पुनीता देवी आदि थे.

प्रभात खबर
Friday, September 26, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68d594e3097c331b2dd50b85

भास्कर 26/7/25 पेज 17

पूसा विवि में गन्ना उत्पादन, प्रसंस्करण और रोजगार सृजन विषय पर प्रशिक्षण

फसल से बेहतर उत्पादन लेने के लिए कृषि अवशेषों को खेतों के अंदर डालें

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्लाय पुसा के परिसर स्थित ईख अनुसंधान संस्थान के सभागार में उन्नत तकनीक द्वारा गन्ना उत्पादन प्रसंस्करण एवं रोजगार सृजन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुई। इसकी अध्यक्षता करते हुए निदेशक डॉ. यूएस बेहरा ने कहा कि फसल से बेहतर उत्पादन लेने के लिए कृषि अवशेषों को खेतों के अंदर ही डालने की जरूरत है। जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति बरकरार रखी जा सके। जलवायु परिवर्तन से खासकर गन्ने की फसल बहुत कम प्रभावित होने की बात सामने आ रही है। केवल खरपतवार नियंत्रण करने की आवश्यकता होती है। फसल अवशेष मिट्टी को ऊर्जावान बनाने में

प्रशिक्षण में मौजूद किसान।

भी सहायक होता है। बिहार में गन्ना उत्पादन के बेहतरी के लिए किसानो के साथ वैज्ञानिक कदम से कदम मिलाकर चल रहे है। विवि से निकलने वाले नवीनतम तकनीकों को किसानों के खेतों तक पहुंचाने का भी प्रयास किया जा रहा है। निदेशक अनुसंधान डॉ.अनिल कुमार सिंह ने कहा कि गन्ना की खेती को लाभकारी बनाने के लिए उत्पादकों को वैल्यू एडिशन की तरफ मुखातिब होने की आवश्यकता है। जिससे महज एक हेक्टेयर गन्ने की खेत से किसान करीब करीब 10 लाख रुपए प्रतिवर्ष की आय प्राप्त कर सकते है। संचालन वैज्ञानिक डॉ. सुनीता कुमारी मीना एवं धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डॉ.एसएन सिंह ने किया। मौके पर उप निदेशक गन्ना विकास धर्मवीर सिंह, डॉ डीएन कामत, डॉ बलवंत कुमार, डॉ सीके झा, डॉ दयाराम, डॉ ललिता राणा थे।

स्वच्छता में ईश्वर का वास, अपने आसपास रखें सफाई : कुलपति

सफाई करते कुलपति एवं अन्य वैज्ञानिक छात्र • जागरण

संस, जागरण, पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में गुरुवार को कुलपति डा. पीएस पांडेय की अध्यक्षता में स्वच्छता ही सेवा अभियान कार्यक्रम आयोजित किया गया। कुलपति, विज्ञानी एवं छात्रों ने मुख्य गेट से बैंक चौक होते हुए पार्किंग स्थल तक साफ सफाई की। अपने संबोधन में कुलपति ने कहा कि स्वच्छता में ही भगवान का वास होता है। कहा कि हम सबको अपने आस पास साफ सफाई रखनी चाहिए। गंदगी बीमारियों की जड़ है। उन्होंने सभी विज्ञानियों, शिक्षकों और छात्रों से अपने घर और हास्टल के आस पास किसी भी तरह की गंदगी नहीं होने देने की अपील की।

उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में साफ सफाई को लेकर आगंतुक हमेशा इसकी तारीफ करते है। उन्होंने विश्वविद्यालय में स्चच्छता के लिए सभी सहकर्मी और छात्र छात्राओं को बधाई भी दी। कहा कि सभी लोगों को विश्वविद्यालय में चारों तरफ घूम कर देखना चाहिए और जहां भी गंदगी दिखे उसे सामूहिक रूप से मिलकर साफ करने का प्रयत्न करना चाहिए। इससे लोग कम बीमार पड़ते हैं। इससे लोगों को हजारों रुपए की दवा आदि के मद में बचत होती है। साथ ही साथ देश की उत्पादकता भी बढ़ती है। उन्होंने कहा कि हम सबको मिलकर देश को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाना है। विकसित राष्ट्र बनाने के लिए हमें स्वच्छता पर काफी ध्यान देना होगा। निदेशक छात्र कल्याण डा. रमन त्रिवेदी ने कहा कि विश्वविद्यालय में स्वच्छता का यह अभियान लगातार संचालित होता रहेगा।

Dainik Jagran 26-09-2025

आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 25 सितंबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया है कि उत्तर बिहार के अधिकांश क्षेत्रों में पूर्वानुमानित अवधि में आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। इस अवधि में कुछ जिलों के अधिकांश तराई तथा मैदानी भागों में अच्छी अच्छी वर्षा होने का अनुमान है। एक-दो स्थानों पर आकाशीय बिजली भी गिरने की आशंका है। एक-दो दिन बाद आमतौर पर मौसम शुष्क रहने की संभावना है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
26 सितंबर	30.0	25.0
27 सितंबर	30.5	25.0
दरभंगा		
26 सितंबर	30.5	25.0
27 सितंबर	30.5	25.5
पटना		
26 सितंबर	31.8	26.6
27 सितंबर	31.8	26.6

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 26-09-2025

स्वच्छता में होता है ईश्वर का वास : वीसी

कार्यक्रम

पूसा, निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि, पूसा में कुलपति डॉ.पीएस पांडेय की अध्यक्षता में स्वच्छता ही सेवा अभियान कार्यक्रम का आयोजन गुरुवार को किया गया। इस दौरान कुलपति समेत वैज्ञानिक एवं छात्रों ने मुख्य गेट से बैंक चौक होते हुए पार्किंग स्थल तक के बीच साफ-सफाई की। इस दौरान जागरूकता रैली निकाली गई।

मौके पर कुलपति ने कहा कि स्वच्छता में भगवान का वास होता है। हम सबको अपने आस-पास साफ सफाई रखनी चाहिए। गंदगी बीमारियों की जड़ है। उन्होंने कहा कि सभी अपने आवासीय व कार्यालय परिसर को स्वच्छ व सुसज्जित रखने की दिशा में पहल करें। उन्होंने कहा स्वच्छता सामुहिक प्रयास से ही संभव है। यह निरोग रखने में सहायक होता है। निदेशक छात्र कल्याण डॉ.रमण त्रिवेदी ने कहा कि विवि में स्वच्छता का अभियान जारी रहेगा। स्वागत एनएसएस समन्वयक डॉ.सत्यप्रकाश ने की। मौके पर निदेशक अनुसंधान डॉ.एके सिंह, निदेशक शिक्षा डॉ.उमाकांत बेहरा, डॉ.राकेश मणि शर्मा, डॉ.महेश कुमार, डॉ.सीके झा, ई.मनोज कुमार आदि मौजूद रहे।

गुरुवार को पूसा में स्वच्छता रैली निकालते विवि के छात्र-छात्राएं।

- **कृषि विवि में स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित**
- **जागरूकता रैली निकली हुई साफ-सफाई**

Hindustan 26-09-2025

कविता प्रस्तुत कर तालियां बटोरी

■ कृषि विवि में कवि सम्मेलन आयोजित

पूसा, निज संवाददाता।... एक नेता ने दूसरे नेता पर गधा होने का जैसे ही आरोप लगाया, सारे गदहो को एक साथ क्रोध आया, गदहो के सरदार ने कहा कि लोकतंत्र की गरिमा को सस्ती लोकप्रियता के चलते मत बेचो,हम गदहे जरूर हैं,..लेकिन भाषा वाद, क्षेत्र वाद, सांम्प्रदाय वाद व दंगे-फसाद से कोसो दूर है, कृपा करके हमें राजनीति में न घसीटे, लोकतंत्र की पवित्र सरिता को निर्मल बहने दे, आदमी को आदमी और गदहे को गदहा रहने दे। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के विधापति सभागार में बुधवार की देर शाम हिन्दी चेतना माह पर आयोजित कवि सम्मेलन में कवि दमदार बनारसी की इस कविता ने जमकर ताली बटोरी। दमदार बनारसी ने एक से बढ़कर एक कविता परोसे। नवल सुधांशु की अब न पायल निहारो जो दी थी तुम्हे, अब न बिन्दियां संवारो जो दी थी तुम्हे आदि पेश किया।

Hindustan 26-09-2025

विकसित एवं आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने के लिए स्वस्थ व स्वच्छ परिवेश जरूरी : कुलपति

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के परिसर में स्वच्छता ही सेवा अभियान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का नेतृत्व करते हुए

स्वच्छता अभियान में शामिल कुलपति व अन्य।

कुलपति डॉ पी एस पांडेय ने कहा कि स्वच्छता में स्वास्थ्य रूपी भगवान का वास होता है। इसलिए हम अपने आसपास के स्थल की साफ सफाई रख स्वस्थ एवं स्वच्छ राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे सकते है। गंदगी को बीमारियों का जड़ बताते हुए उन्होंने कहा कि हम सबको मिलकर देश को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाना है तो विकसित राष्ट्र बनाने के लिए हमें पहले स्वच्छ पर्यावरण एवं स्वस्थ राष्ट्र के सिद्धांत को साकार करना होगा, इसकेलिए हमें स्वच्छता पर काफी ध्यान देना होगा। डॉ पाण्डेय ने कहा कि साफ सफाई रखने से लोग कम बीमार पड़ते है। इससे दवा आदि के मद में हजारों रुपए की बचत होता है। हमें अपने बच्चों को भी स्वच्छता को लेकर जागरूक करना चाहिए। इस दौरान निदेशक छात्र कल्याण डॉ रमण त्रिवेदी ने कहा कि विश्वविद्यालय में स्वच्छता का यह अभियान लगातार संचालित होता रहेगा। इसमें विश्वविद्यालय के अधीनस्थ महाविद्यालय भाग लेंगे और प्रतिदिन के कार्यो का विवरण भी उपलब्ध करायेंगे। मौके पर निदेशक अनुसंधान डॉ एके सिंह, निदेशक शिक्षा डॉ उमाकांत बेहरा, डॉ राकेश मणि शर्मा, डॉ महेश कुमार, डॉ सीके झा, ई मनोज कुमार सहित छात्र छात्रा उपस्थित थे।

Rashtriya Sahara 26-09-2025

भास्कर 27/9/25 पेज 19

आयोजन • अकादमी श्रेष्ठता और अनुसंधान की गुणवत्ता को और बेहतर बनाने के उद्देश्य से मंथन कार्यक्रम किया गया

पूसा विवि ने रैंकिंग में काफी अच्छा स्थान पाया

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में अकादमी श्रेष्ठता और अनुसंधान की गुणवत्ता को और बेहतर बनाने के उद्देश्य से एक मंथन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान अध्यक्षीय संबोधन देते हुए कुलपति डॉ. पी एस पांडेय ने कहा कि सभी के सहयोग से विश्वविद्यालय ने एनआईआरएफ रैंकिंग, आईआईआरएफ रैंकिंग सहित अन्य तरह के रैंकिंग में काफी अच्छे स्थान को प्राप्त किया है। उन्होंने कहा कि अच्छी रैंकिंग मिलने के बाद से पूसा विवि और यहां के वैज्ञानिकों की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ गई है। आने वाले वर्षों में विवि को और बेहतर रैंक कैसे मिले इसके लिए यहां के वैज्ञानिकों को जी तोड़ मेहनत करने की आवश्यकता हैं। उन्होंने कहा कि इस मंथन कार्यक्रम से बेहतर सुझाव मिलेंगे जिससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी विवि बेहतर रैंकिंग प्राप्त कर सकेगा। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में अब सभी कार्य पूर्ण पारदर्शिता से यानी ई ऑफिस के जरिये हो रहे हैं। विश्वविद्यालय के अकादमिक और अनुसंधान के कार्य भी डिजिटल हो गये हैं। जो कुछ छूट गया है उसे भी आने वाले समय में डिजिटल कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि अनुसंधान की गुणवत्ता बढ़ी है और लगभग सभी अनुसंधान को किसानों की समस्याओं पर आधारित कर दिया गया हैं। इससे आने वाले समय में किसानों को बहुत फायदा मिलेगा। उन्होंने कहा कि पुसा विश्वविद्यालय डिजिटल एग्रीकल्चर और ड्रोन तकनीक के क्षेत्र में पूर्वी भारत में एक उल्लेखनीय केंद्र बनकर उभरा है। आज देश दुनिया में भी पुसा विवि की चर्चा हो रही है। उन्होंने प्राध्यापकों से आग्रह किया कि वे छात्र हित को ध्यान में रखकर कार्य करें ताकि छात्रों का समग्र विकास हो सके। उन्होंने कहा कि यदि किसी भी नियम को लेकर छात्रों के पढ़ाई में कोई विवशता आती है तो उन नियमों को बदल दिया जायेगा। उन्होंने बताया कि छात्रों के हितों के लिए कई ऐसे नियमों में परिवर्तन भी किया गया है और आगे भी किया जायेगा।

अच्छी रैंकिंग आने के बाद से अब यहां के वैज्ञानिकों की और बढ़ गई जिम्मेदारी

मंथन कार्यक्रम को संबोधित करते कुलपति और मौजूद वैज्ञानिक व विशेषज्ञ।

रफ्तार बनी रही तो जल्द ही विवि देश भर में पहले रैंक पा लेगा

मंथन कार्यक्रम में अतिथि के रूप में आये विशेषज्ञ डॉ.के वीरेंजनेलु ने विभिन्न सरकारी आंकड़ों के माध्यम से यह स्पष्ट हो गया है कि देश भर के सभी विश्वविद्यालयों में पुसा विवि काफी तेजी से प्रगति कर रहा है। उन्होंने कहा कि यदि प्रगति की यह रफ्तार बनी रही तो बहुत जल्द विश्वविद्यालय देश भर के विश्वविद्यालयों में पहले रैंक को प्राप्त कर लेगा। उन्होंने कहा कि प्राध्यापकों को अच्छे जर्नल में रिसर्च पेपर प्रकाशित करना चाहिए जिससे प्राध्यापकों को भी फायदा मिलेगा और विश्वविद्यालय के रैंकिंग में भी सुदृढ़ता आएगी। विश्वविद्यालय के प्रबंधन बोर्ड के सदस्य डॉ.जयकृष्ण झा ने कहा कि उन्हें गर्व है कि वे भी इस विश्वविद्यालय की प्रगति में सहभागी हैं। उन्होंने कहा कि वे इस विश्वविद्यालय की चर्चा देश भर में जहां भी जाते हैं वहां उन्हें सुनने को मिलती है। अच्छे कार्यों के लिए तारीफ सुनकर उन्हें भी गर्व का अहसास होता है। कुलसचिव डॉ. मृत्युंजय कुमार ने कहा कि विश्वविद्यालय को पिछले तीन वर्षों में तेरह से अधिक पेटेंट मिले हैं। विवि ने लगभग तेइस विभिन्न फसलों के प्रभेद को रिलीज किया है। चार सौ से अधिक ड्रोन पायलटों को ट्रेनिंग दी गई है। छात्रों ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का झंडा बुलंद किया है। इस सबके परिणामस्वरूप ही आज विश्वविद्यालय देश भर में श्रेष्ठ हुआ है और जल्दी ही श्रेष्ठतम बनेगा। उन्होंने अच्छे प्रदर्शन के लिए कुलपति के नेतृत्व की सराहना की।

डीन ने रैंकिंग के विभिन्न आयामों के बारे में बताया

रैंकिंग कमिटी के चेयरमैन और फिशरीज कॉलेज के डीन डॉ.पी पी श्रीवास्तव ने रैंकिंग के विभिन्न आयामों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि रैंकिंग बेहतर बनाने में सभी शिक्षकों का योगदान है। निदेशक अनुसंधान डॉ. ए के सिंह ने विश्वविद्यालय के अनुसंधान को और बेहतर बनाने के उपायो पर चर्चा की। निदेशक शिक्षा डा.उमाकांत बेहरा ने विश्वविद्यालय की शिक्षा को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर श्रेष्ठ बनाने को लेकर अपनी कार्ययोजना प्रस्तुत की। निदेशक पीजीसीए ने कार्यक्रम की रूपरेखा के बारे में विस्तार से जानकारी दी और सभी अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम के दौरान रैंकिंग समिति के सभी सदस्यों को सम्मानित किया गया। कृषि व्यवसाय एवं ग्रामीण प्रबंधन संस्थान के निदेशक डॉ.रामदत्त ने धन्यवाद ज्ञापन किया। मौके पर डीन कम्युनिटी साइंस डा. उषा सिंह आदि मौजूद रहे।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 1 अक्टूबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि उत्तर बिहार के जिलो में आने वाले चार से पांच दिनों में मौसम शुष्क बने रहने की संभावना है। पूर्वानुमानित अवधि में आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि फिलहाल मौसम शुष्क रहेगा। इस सप्ताह बारिश की संभावना कम है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 34-36 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
27 सितंबर	36.0	26.0
28 सितंबर	36.5	26.0
दरभंगा		
27 सितंबर	36.5	26.0
28 सितंबर	36.5	26.5
पटना		
27 सितंबर	37.8	27.6
28 सितंबर	37.8	27.6

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 27-09-2025

बेहतर रैंकिंग के लिए मिलकर प्रयास करें : वीसी

- अनुसंधान की गुणवत्ता को और बेहतर बनाने पर मंथन
- डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में कार्यक्रम

कार्यक्रम को संबोधन करते कुलपति व मौजूद वैज्ञानिक • जागरण

संस. जागरण, पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में अकादमिक श्रेष्ठता और अनुसंधान की गुणवत्ता को और बेहतर बनाने के लिए एक मंथन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अध्यक्षीय संबोधन में कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि सभी के सहयोग से विश्वविद्यालय ने एनआईआरएफ रैंकिंग, आईआईआरएफ रैंकिंग सहित सभी रैंकिंग में अच्छा स्थान हासिल किया है। उन्होंने कहा कि इस मंथन कार्यक्रम से बेहतर सुझाव मिलेंगे जिससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी बेहतर रैंकिंग के लिए प्रतिभागिता का प्रयास किया जाएगा। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में अब सभी कार्य पूर्ण पारदर्शिता से इ आफिस से हो रहे हैं। विश्वविद्यालय के अकादमिक और अनुसंधान के कार्य भी डिजिटल हो गए हैं। जो कुछ छूट गया है उसे भी आने वाले समय में डिजिटल कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि अनुसंधान की गुणवत्ता बढ़ी है और लगभग सभी अनुसंधान किसानों की समस्याओं पर किए जा रहे हैं जिससे आने वाले समय में किसानों को बहुत फायदा होगा। कहा कि विश्वविद्यालय डिजिटल एग्रीकल्चर और ड्रोन तकनीक में पूर्वी भारत में एक उल्लेखनीय केंद्र बनकर उभरा है और देश भर में इसकी चर्चा हो रही है। उन्होंने प्राध्यापकों से आग्रह किया कि वे छात्रों को ध्यान में रख कर कार्य करें ताकि उनका समग्र विकास हो सके।

विभिन्न सरकारी आंकड़ों के माध्यम से माध्यम से दिखाया कि पूसा विश्वविद्यालय में देश भर के सभी विश्वविद्यालयों से तेज प्रगति हो रही है। उन्होंने कहा कि यदि प्रगति की यह रफ्तार बनी रही तो बहुत जल्द विश्वविद्यालय देश भर के विश्वविद्यालयों में पहला रैंक प्राप्त कर लेगा। विश्वविद्यालय प्रबंधन बोर्ड के सदस्य डा. जयकृष्ण झा ने कहा कि उन्हें गर्व है कि वे भी इस विश्वविद्यालय की प्रगति में सहभागी हैं। कुलसचिव डा. मृत्युंजय कुमार ने कहा कि विश्वविद्यालय में पिछले तीन वर्षों में तेरह से अधिक पेटेंट मिले हैं, लगभग तेइस विभिन्न फसलों के प्रभेद रिलीज हुये है। रैंकिंग कमिटी के चेयरमैन और फिशरीज कालेज के डीन डॉ पी पी श्रीवास्तव ने रैंकिंग के विभिन्न आयामों के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम के दौरान रैंकिंग समिति के सभी सदस्यों को सम्मानित किया गया। कृषि व्यवसाय एवं ग्रामीण प्रबंधन संस्थान के निदेशक डा. रामदत्त ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम के दौरान डीन कम्युनिटी साइंस डा उषा सिंह, डीन बेसिक साइंस डा अमरेश चंद्रा, डॉ घनश्याम झा , डा. महेश कुमार, डा. शिवपूजन सिंह, डा. महेश कुमार, डा. कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न शिक्षक वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।

Dainik Jagran 27-09-2025

‘गन्ना उत्पादन रोजगार का बेहतर विकल्प’

पूसा। डॉ .राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के निदेशक शिक्षा डॉ .उमाकांत बेहरा ने कहा कि कृषि के बदलते तौर–तरीको में वैज्ञानिक तकनीक, फसल व उसके प्रभेदो का चयन का महत्व काफी बढ़ गया है। गन्ना उत्पादन व उसका प्रसंस्करण के क्षेत्र में रोजगार के काफी विकल्प खुल गये है। इसमें राज्य सरकार हर संभव सहयोग दे रही है। जरूरत है सरकार की पहल व वैज्ञानिको के तकनीको का उपयोग कर इसे जमीनी स्वरूप देने की। यह आर्थिक समृद्धि में अहम भूमिका निभायेगा।

Hindustan 27-09-2025

विवि का हो रहा चहुंमुखी विकास : वीसी

पूसा, निसं । डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के कुलपति डॉ. पीएस पाण्डेय ने कहा कि सामुहिक प्रयास से विवि का चहुंमुखी विकास जारी है। इसके साथ ही विवि की जिम्मेवारियां भी बढ़ गई है। इसे और गति व सतत प्रयास से अर्न्तराष्ट्रीय स्तर की रैंकिंग के लिए तैयार रहने की जरूरत है। वे शुक्रवार को विवि के विद्यापति सभागार में बोल रहे थे। मौका था अकादमी श्रेष्ठता और अनुसंधान की गुणवत्ता को और बेहतर बनाने को लेकर चिंतन मंथन कार्यक्रम का।

उन्होंने कहा कि विवि ने एनआईआरएफ रैंकिंग, आईआईआरएफ रैंकिंग समेत अन्य रैंकिंग में अच्छा स्थान हासिल किया है। उन्होंने कहा कि विवि में कार्यो में गति व पारदर्शिता के लिए ई-ऑफिस में कार्य हो रहा है। अकादमिक और अनुसंधान के कार्य भी डिजिटल हो गये हैं। शेष स्थलों को जल्द ही डिजिटल कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि किसानों को ध्यान में रखकर हो रहे अनुसंधान से इसकी गुणवत्ता बढ़ी है।

कृषि विवि के विद्यापति सभागार में दीप प्रज्वलित करते कुलपति व अन्य। • हिन्दुस्तान

Hindustan 27-09-2025

कृषि विवि को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बेहतर रैंकिंग के लिए किया जाएगा प्रयास : वीसी

दीप प्रज्वलित करते अतिथि व अन्य।

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के विद्यापति सभागार में अकादमी श्रेष्ठता और अनुसंधान की गुणवत्ता को और बेहतर बनाने के लिये एक मंथन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आगत अतिथियों के स्वागत सम्मान, कुलगीत प्रसारण एवं आगत अतिथियों व विश्वविद्यायल के कुलपति डॉ पीएस पाण्डेय द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वल कर कार्यक्रम के उद्‌घाटन के बाद वीसी डॉ पांडेय ने अपने संबोधन में कहा कि सभी के सहयोग से विश्वविद्यालय ने एनआईआरएफ रैंकिंग, आईआईआरएफ रैंकिंग सहित सभी रैंकिंग में अच्छा स्थान हासिल किया है।

अच्छा रैंकिंग मिलने से जिम्मेदारी और बढ़ गई है कि आने वाले वर्षो में और बेहतर रैंक कैसे हासिल किया जाये। उन्होंने कहा इस मंथन कार्यक्रम में मिले बेहतर सुझावों से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी बेहतर रैंकिंग के लिए प्रयास किया जाएगा। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में अब सभी कार्य पूर्ण पारदर्शिता से ई आफिस से हो रहा है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ के वीरेंजनेलु ने आंकडों में विश्वविद्यालय के प्रगति का उल्लेख करते हुए कहा कि यदि प्रगति की यह रफ्तार बनी रही तो बहुत जल्द यह देश भर के विश्वविद्यालयों में पहला रैंक को प्राप्त कर लेगा। उन्होंने कहा कि प्राध्यापकों को अच्छे जर्नल में रिसर्च पेपर प्रकाशित करना चाहिए इससे प्राध्यापकों को भी फायदा होगा और विश्वविद्यालय के रैंकिंग में भी और सुदृढ़ता मिलेगी। इस अवसर पर विश्वविद्यालय प्रबंधन बोर्ड के सदस्य डॉ जयंकृष्ण झा, निदेशक शिक्षा डॉ उमाकांत बेहरा, फिशरीज कालेज के डीन डॉ पीपी श्रीवास्तव, कुलसचिव डॉ मृत्युजय कुमार, निदेशक अनुसंधान डॉ एके सिंह, स्नातकोतर महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ मयंक राय, ने भी अपने विचारा व्यक्त किए। धन्यवाद ज्ञापन डॉ रामदत्त ने किया। कार्यक्रम के दौरान डीन कम्युनिटी साइंस डॉ उषा सिंह, डीन बेसिक साइंस डॉ अमरेश चंद्रा, डॉ घनश्याम झा, डॉ महेश कुमार, डॉ शिवपूजन सिंह, डॉ महेश कुमार, डॉ कुमार राज्यवर्धन सहित सभी वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी उपस्थित थे।

Rashtriya Sahara 27-09-2025

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि ने पूसा की धरती को एक खास पहचान दी है। कृषि शोध व शिक्षा के क्षेत्र में अहम योगदान देकर किसानों को निरंतर कुछ नया दिया है। बदलते समय में खेती के तौर-तरीकों में बदलाव हुए है। मजदूरों का आभाव किसानों को सता रहा है। उर्वरकों की कीमतों और समय पर उपलब्धता किसानों के लिए चुनौती रही है। तो दूसरी ओर बाढ़-सुखाड़ की समस्याएं हर वर्ष मुंह बाये खड़ी रहती है। काफी कोशिशों के बाबजूद अधिकतर किसान अब भी परंपरागत खेती पर ही अटका है। लोगों ने मांग की है कि विवि पूसा प्रखंड क्षेत्र के अधीन है। ऐसे में यहां के लोगों को खेती, रोजगार व प्रतिनिधि के चयन में तरजीह मिले।

अपनी समस्यओं के बारे में किसानों ने विस्तार से बताया। इनलोगों का कहना है कि किसानो को समूह में खेती के लिए जागरूक करने के साथ कृषि यंत्रो की उपलब्धता कम दरो में कराई जाए।

पंचायतो को गोद लेकर मॉडल के रूप में विकसित करें कृषि वैज्ञानिक

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय ने पूसा की धरती को एक खास पहचान दी है। कृषि शोध व शिक्षा के क्षेत्र में अहम योगदान देकर किसानों को निरंतर कुछ नया दिया है। बूढ़ी गंडक नदी के किनारे बसे इस विवि ने धान, गेहूं, मक्का, हल्दी, मशरूम, शहद, गन्ना जैसी फसलों में अपनी उत्कृष्टता के लिए मान-सम्मान बढ़ाया है। बदलते समय में खेती के तौर-तरीकों में बदलाव हुए है। मजदूरों का आभाव किसानों को सता रहा है। उर्वरकों की कीमतों और समय पर उपलब्धता किसानों के लिए चुनौती रही है। तो दूसरी ओर बाढ़-सुखाड़ की समस्याएं हर वर्ष मुंह बाये खड़ी रहती है। पारिवारिक बंटवारा के बाद खेतों का रकबा लगातार छोटे हो रहे हैं। काफी कोशिशों के बाबजूद अधिकतर किसान अब भी परंपरागत खेती पर ही अटका है। उन्हें प्रोत्साहित करने वाले वैज्ञानिकों की किसानों व खेतों से दूरी लगातार बढ़ रही है। लैब टू लैंड का कॉन्सेप्ट भी भाषणो तक ही सिमटा है। ऐसे में किसान क्या करे। खेती को आर्थिक समृद्धि की दिशा में कैसे ले जाये। किसान का बेटा अपने बच्चों को कृषक बनाने के लिए प्रेरित करे। ऐसी चुनौतियों को दूर करने के लिए है।

वैज्ञानिकों व किसानों की दूरी में आये कमी: इस संदर्भ में किसान विभूति कुमार ने कहा कि विवि के वैज्ञानिकों को एक-एक पंचायत गोद लेकर उसे मॉडल के रूप में विकसित करने की जरूरत है। जिससे अन्य किसान भी प्रेरित हो सकें। रंजीत शर्मा ने बताया कि केन्द्रीय दर्जा मिलने के बाद पूसा स्थित कृषि विवि व किसानों के बीच दूरी लगातार बढ़ रही है। ऐसे में वैज्ञानिकों को किसान के खेत तक पहुंचकर उनकी समस्या का निदान करने की जरूरत है। उन्होंने कहा विवि पूसा प्रखंड क्षेत्र के अधीन है। ऐसे में यहां के लोगों को खेती, रोजगार व प्रतिनिधि के चयन में तरजीह मिलने की जरूरत है। रामप्रसाद पासवान ने कहा कि किसानों के खेतो में प्रत्यक्षण को बढ़ावा मिलने की जरूरत है। इससे वैज्ञानिकों का लगाव किसानों से बढ़ेगा। साथ ही फलाफल भी बेहतर होगा। मोरसंड के महेश सिंह ने कहा कि पहले वैज्ञानिक खेत तक जाते थे। इससे किसानो की समस्या में काफी कमी आती थी। खेत तक जाने से वैज्ञानिको किसानो की समस्या से सीधे रूबरू होते थे। बाद में उसके निदान पर पहल होती थी। ठहरा निवासी व प्रखंड आत्मा के अध्यक्ष महेश कुमार ने कहा कि किसानों को अब सीधा लाभ नहीं मिल पाता है। उन्होंने वैज्ञानिकों से बेहतर प्रभेद के साथ गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन पर जोर दिया। इस दिशा में विशेष पहल की जरूरत है। मुकुन्द कुमार ने कहा कि निजी कंपनियां पीला मक्का पर बेहतर कार्य कर रही है। विवि को इस दिशा में आगे बढ़कर अधिक प्रयास की जरूरत है।

किसान के खेतो में प्रत्यक्षण को मिले बढ़ावा: चंदन कमार ने कहा कि समसामयिक फसलो के लिए उर्वरको के इस्तेमाल के तौर-तरीको से अवगत कराने की जरूरत है। रमेश कुमार ने कहा कि विवि में काफी अच्छे वैज्ञानिक हैं। प्रखंड का गंगापुर, कुबौलीराम, विष्णुपुर बथुआ समेत कई अन्य पंचायत है। जहां आम का बगीचा है। लेकिन समसामयिक उसके रखरखाव व कीटनाशको के उपयोग की जानकारी उपलब्ध होनी चाहिए। वहीं मिटटी जांच की समुचित व्यवस्था के आभाव में किसानों को अधिक उर्वरकों का उपयोग करना पड़ता है। सौरभ कुणाल ने कहा कि आम तौर पर छोटे व मध्यम किसानो की संख्या अधिक है। वे अधिक खर्च नहीं कर सकते है। ऐसे में कृषि यंत्रो की उपलब्धता कम दरो में होनी चाहिए।

प्रस्तुति: अभय कुमार

शिकायतें और सुझाव

शिकायतें

1. किसान और वैज्ञानिको के बीच बढ़ रही है दूरी, सही समन्वय न होने के कारण के समस्याओं का निदान नहीं होता है ।
2. किसानो तक पहुंच वाले प्रसार का आभाव है । इसके कारण किसानों तक सही जानकरी नहीं पहुंच पाती है।
3. वर्षो से कृषि विज्ञान केन्द्रो में स्वायल टेस्टिंग वैन खड़ी है। इसके कारण मिट्टी की जांच नहीं हो पाती है।
4. प्रशिक्षणार्थी चयन के तौर-तरीको के बदलाव की जरूरत है।
5. सस्ते दर पर कृषि यंत्रो की उपलब्धता का आभाव है।

सुझाव

1. किसान के खेतो में प्रत्यक्षण को बढ़ावा से दूरी कम होगी।
2. विवि की शोध परख और समसामयिक जानकारियां किसानो तक पहुंच बढ़ाने के लिए अभियान चलाने की जरूरत है।
3. कृषि विज्ञान केन्द्रो में खड़ी स्वायल टेन्टिंग लैब की हो शुरूआत
4. कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा जरूरतमंद किसानो को प्रशिक्षण मिले साथ ही किसानों से फीडबैक लेने की जरूरत है।
5. किसानो को समूह में खेती के लिए जागरूकता व प्रसार व्यवस्था सुदृढ़ करने की जरूरत है।

कृषि विज्ञान केन्द्र के माध्यम से किसानों और नौजवानों को मिल रहा प्रशिक्षण

कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने बताया कि कृषि विज्ञान केन्द्र के माध्यम से किसानों को प्रशिक्षण दिये जा रहे हैं। देशी नस्ल की गाय को बढ़ावा देने के लिए आईवीएफ तकनीक का उपयोग किया जा रहा है। भविष्य की खेती को ध्यान में रखकर डिजिटल एग्रीकल्चर और ड्रोन के विभिन्न आयामों पर अनुसंधान एवं किसानों और नौजवानों को प्रशिक्षण दिये जा रहे है। वैज्ञानिक गांवों में जाकर किसानों से सीधा संवाद कर रहे हैं। इसके अलावा शिक्षा पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। जिससे विवि के छात्र देश को 2047 तक उन्नत भारत बनाने में अपना सक्रिय योगदान दे सकें।

बोले जिम्मेदार

"विवि में सभी अनुसंधान किसानों की समस्याओं को ध्यान में रखकर किया जा रहा है। इससे आने वाले समय में राज्य व देश भर के किसानों को फायदा मिलेगा। विवि ने धान, गेहूं, मक्का, अरहर, हल्दी, तिलहन, शकरकंद, जिमिकंद समेत कई उन्नत प्रभेद दिये है। कई अन्य प्रभेदों पर कार्य चल रहा है। विवि सरकार के साथ चौथे कृषि रोड मैप पर मिलकर कार्य कर रहा है। -डॉ.पीएस पाण्डेय, कुलपति, डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि

किसानों को आम के पेड़ का प्रबंधन की जानकारी देते डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक।

सुनिए हमारी पीड़ा

"केंद्रीय कृषि विश्व विद्यालय का दर्जा मिलने का बाद किसानों को जुड़ाव में काफी कमी आई है। कृषि विवि पूसा क्षेत्र में है। ऐसे में तकनीक, रोजगार और प्रतिनिधित्व में प्रखंड क्षेत्र को प्राथमिकता मिलनी चाहिए।

-रंजीत शर्मा

"केंद्रीय कृषि विश्व विद्यालय के वैज्ञानिको को एक-एक पंचायत को गोद लेकर उसे मॉडल के रूप में विकसित करना चाहिए। जिससे अन्य किसान भी प्रेरणा ले सके। और इस क्षेत्र में सभी किसान को फायदा मिल सके।

-विभूति कुमार

"किसानों से कृषि वैज्ञानिको को सीधा संवाद को बढ़ावा देने की जरूरत है। इससे वैज्ञानिक किसान की समस्याओं को समझ कर तकनीक व प्रभेदो के विकास पर अनेको कार्य कर सकेंगे। कृषि वैज्ञानिको को इस पर ध्यान देना चाहिए।

-महेश सिंह

"यह देश में विश्व स्तर की विश्व विद्यालय संस्थान है। जो पहले किसानो को प्रत्यक्षण के लिए तकनीक और नए प्रभेद के बीज दी जाती थी। इससे वैज्ञानिक खेतो तक पहुंचते थे। इससे समस्याओं का निदान हो जाता था।

-राम प्रसाद पासवान

"छोटे और मध्यम किसानो को ध्यान में रखकर प्रभेदो और तकनीको का विकास हो। समय के साथ गुणवत्तायुक्त बीज की उपलब्धता के साथ किसान से वैज्ञानिको का जुड़ाव बढ़ाने की दिशा में पहल हो ।

-सौरभ कुणाल

"खेती करने वाले किसानों का चयन कर उनकी जरूरत के अनुरूप प्रशिक्षण दिया जाए। साथ ही उनका फीडबैक लेने और किसानों को समूह में खेती करने के लिए प्रेरित करे। इससे अनेक क्षेत्र में सभी को प्रशिक्षण मिलेगा।

-महेश कुमार

"मिट्टी जांच करने वाली वैन को सुदृढ़ कर किसानो तक पहुंचे। कीटनाशक की समसामयिक जानकारी और फसल बार उपलब्ध हो। इससे किसानों को सुविधा होगी, साथ ही फसलों की अच्छी पैदावार होगी।

-मुकुंद कुमार

"प्रसार और आधुनिक कृषि यंत्रो की उपलब्धता कम दरों में हो। उद्यानिक फसलो की समसामयिक जानकारी किसानो तक ठिक से पहुंचे। इससे वह फसलों को अच्छे गुणवत्ता के साथ अधिक मात्रा में उगा सके।

-रमेश कुमार पातेपुर

"पीला मक्का पर शोध कार्य कर नया विकसित करे। निजी कंपनी काफी तेजी से कार्य कर रही है। इस कारण से किसान निजी कंपनी के बीज पर निर्भर हो रहे है। इसके चलते किसानों को ज्यादा पैसे देने पड़ते है।

-चंदन कुमार

"पपीता में फलन के बाद बांझी और गलका रोग फसल को प्रभावित कर रहा है। इसका निदान निश्चित तौर पर होनी चाहिए। अब तक ऐसा नहीं होने से किसानों को बहुत परेशानियां का सामना करना पड़ रहा है।

-दीपक कुमार

"विवि इस क्षेत्र की धरोहर है। किसान व वैज्ञानिको के बीच आपसी समन्वय हो बढ़ाकर खेती को बेहतर आकार दिया जा सकता है। इसके लिए सरकार, वैज्ञानिक व किसान के बीच बेहतर तालमेल जरूरी है।

-गोपाल पटेल

"किसानों को समसामयिक फसलों के लिए उर्वरको के इस्तेमाल के तौर-तरीको से अवगत कराने की जरूरत है। इस कारण से किसान वेबजह परेशान हो रहे होते है। इस समस्या पर ध्यान देने की जरूरत है।

-कुंदन कुमार

पूसा के पातेपुर गोपीनाथ गांव में पपीते के फल में बांझ लगा दिखाता किसान।

तीन दिवसीय प्रशिक्षण हुआ संपन्न

ईख अनुसंधान संस्थान में प्रमाण पत्र देते निदेशक।

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के ईख अनुसंधान केन्द्र, पूसा में उन्नत तकनीक से गन्ना उत्पादन, प्रसंस्करण एवं रोजगार सृजन विषय पर जारी तीन दिवसीय प्रशिक्षण शनिवार को संपन्न हो गया। इस दौरान प्रतिभागियों के बीच प्रमाण पत्र वितरित किये गये। मौके पर वक्ताओं ने कहा कि गन्ना व प्रसंस्करण के क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावनाएं है। इसमें सरकार के साथ कृषि विवि हरसंभव सहयोग में जुटा है। जरूरत है प्रशिक्षण में प्राप्त ज्ञान को जमीनी स्वरूप देने की। उन्होंने कहा कि बदलते समय में कृषि का व्यवसायीकरण जरूरी है। यह आर्थिक समृद्धि का रास्ता आसान करता है। वक्ताओं ने कहा कि गन्ना का उत्पादन व प्रसंस्करण कर बेहतर लाभ लिया जा सकता है।

Hindustan 28-09-2025

केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के प्रांगण में चला स्वच्छता अभियान

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के .षि व्यवसाय एवं ग्रामीण प्रबंधन संस्थान में सह प्राध्यापक डॉ ऋतंभरा की अध्यक्षता में स्वच्छता अभियान चलाया गया। इस अभियान के तहत सभी प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों ने संस्थान के चारों तरफ सफाई की। उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए डॉ ऋतंभरा ने कहा कि हम सबको अपने आस पास साफ सफाई रखनी चाहिए। उन्होंने कहा कि देश तेजी से तरक्की कर रहा है। अब हम विकसित भारत बनने की दौड़ में शामिल हो गए है और ऐसे में हमें साफ सफाई पर ध्यान रखना होगा । सह प्राध्यापक डॉ समीर ने कहा कि विश्वविद्यालय में सफाई की अच्छी व्यवस्था है, लोग भी जागरूक है। पर कही कहीं ग्रामीण स्तर पर और शहरों में भी लोग सफाई को लेकर सचेत नहीं है। उन्होंने कहा कि स्कूलों और कॉलेजों में साफ सफाई की प्रेरणा छात्रों को घरों को भी स्वच्छ रखने को प्रेरित करेगी । स्वच्छता अभियान कार्यक्रम राष्ट्रीय सेवा योजना के कोआर्डिनेटर डॉ रमनदीप के द्वारा आयोजित किया गया था । इस दौरान डॉ शिवपूजन सिंह,डॉ रश्मि सिन्हा, डॉ श्रावंती, डॉ कुमार राज्यवर्धन,विजय कुमार, गोपाल कुमार सहित विभिन्न शिक्षक वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी उपस्थित थे।

Rashtriya Sahara 28-09-2025

गन्ना उत्पादन व उत्पादकता बढ़ाने को सरकार क्रियाशील : पासवान

प्रतिनिधि, पूसा

बिहार सरकार के गन्ना उद्योग मंत्री कृष्णनंदन पासवान ने कहा कि बिहार के गन्ना उत्पादकों की उत्पादन एवं उत्पादकता दर को बढ़ाने की दिशा में सरकार एवं चीनी मिल दोनों क्रियाशील हो चुकी है. इस सभा में नरकटियागंज, बेतिया एवं गोपालगंज के गन्ना उत्पादकों को प्रशस्ति पत्र एवं अन्य उपकरणों के साथ सम्मानित होना बेहतरी का मिसाल साबित हुआ है. हमारे गन्ना उत्पादक किसान मेहनती और कर्मयोगी पुरुष हैं. किसानों के परिश्रम पर ही ऊपर वाले सभी लोगों को अन्न प्राप्त होता है. राज्य में अन्य बंद चीनी मिलों को भी खोलने का समुचित व नियमानुसार सार्थक प्रयास

किसानों को संबोधित करते गन्ना उद्योग मंत्री.

किया जा रहा है. समस्तीपुर के वर्षों पूर्व से बंद परे चीनी मिल खोलने का भी प्रयास किया जायेगा. सकरी एवं रैयाम चीनी मिल में भी बहुत जल्द पेराई का कार्य शुरू होने वाला है. डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के विद्यापति सभागार में बिहार में गन्ना के उत्पादन एवं उत्पादकता के वृद्धि चुनौती विषय पर राज्यस्तरीय कार्यशाला को संबोधित करते हुए बतौर मुख्य अतिथि मंत्री श्री पासवान ने कहा कि गन्ना उत्पादकों की कठिनाई एवं समस्याओं के निदान के लिए सरकार वैज्ञानिकों के साथ कदम से कदम मिलाकर उत्पादकों के खेतों तक पहुंच चुका है. बिहार की मिट्टी एवं जलवायु में गन्ना उत्पादन की अपार संभावनाएं हैं. आगत अतिथियों का स्वागत जिला गन्ना पदाधिकारी शिवांगी पांडेय ने किया. ईखायुक्त दरभंगा डॉ अनिल कुमार झा ने कहा कि गन्ना उद्योग आधारित फसल है. गन्ना का उत्पादन 30 टन प्रति एकड़ से बढ़ाकर 60 टन करने की जरूरत है. निदेशक अनुसंधान डॉ अनिल कुमार सिंह ने कहा कि बिहार की गन्ना उत्पादन अन्य राज्यों से बेहतर देखने को मिल रहा है. गन्ना का वैल्यू एडिशन कर जिगरी का निर्माण कर उत्पादक बेहतर लाभ कमा सकते हैं. संचालन ईख अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक डॉ सुनीता कुमारी मीना ने की. वहीं धन्यवाद ज्ञापन ईख उपायुक्त धर्मवीर सिंह ने किया. मौके पर आप्त सचिव सुनील कुमार, निदेशक ईख अनुसंधान संस्थान डॉ देवेंद्र सिंह, डॉ डीएन कामत, डॉ सीके झा, डॉ बलवंत कुमार, ई. सुभाष चंद्रा आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Monday, September 29, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/68d988ee19ac1932bc661b51

भास्कर 29/9/25 पेज 23

संगोष्ठी • गन्ना से जुड़े अधिकारी, वैज्ञानिक और कर्मी उत्पादकों को ज्यादा से ज्यादा लाभ दिलाने के लिए कर रहे मेहनत

बिहार गन्ना उत्पादन में अग्रणी भूमिका निभाएगा : मंत्री

भास्कर न्यूज़ | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के विद्यापति सभागार में बिहार में गन्ना के उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि एक चुनौती विषय पर राज्यस्तरीय गन्ना किसान संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी का उद्घाटन बिहार सरकार के गन्ना उद्योग विभाग के मंत्री कृष्णनंदन पासवान सहित अन्य अतिथियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया।

इस अवसर पर गन्ना उत्पादक किसानों एवं गन्ना वैज्ञानिकों को संबोधित करते गन्ना मंत्री ने कहा की हम सभी इस संगोष्ठी में केवल इसी उद्देश्य से पहुँचे हैं कि कैसे गन्ना उत्पादक किसानों का उत्पादन बढ़ाकर उन्हें गन्ना से ज्यादा से ज्यादा लाभान्वित किया जाए। उन्होंने कहा कि बिहार में कभी ऐसा दौर था जब अधिकतर चीनी मिल बंद पर गए थे और गन्ना उत्पादक किसान गन्ना उत्पादन से अपना मुंह भी मोरने लगे थे। किसान सोचते थे कि अब ज्यादातर चीनी मिल कभी चालू ही नही होगा। हालांकि वह समय अब बदल गया हैं। गन्ना उत्पादकों की सुविधा के लिए बारी बारी से चीनी मिल चालू कराएं जा रहे हैं। इस कड़ी में चार वर्षो से बंद पड़े रिगा चीनी मिल को इस साल चालू कराकर वहां गन्ना की पेराई भी कराई गई हैं। मंत्री ने कहा कि बिहार के दो अन्य चीनी मिलों को भी बहुत जल्द ही चालू कराया जाएगा। उन्होंने किसानों से कहा कि अगर किसानों को गन्ना उत्पादन में किसी भी प्रकार की समस्या आती है तो वे अविलंब गन्ना से संबंधित पदाधिकारी से संपर्क करें और पदाधिकारी किसानों के समस्या का तत्क्षण निदान करेंगे। मौके पर जिला गन्ना अधिकारी शिवांगी पांडे, उप निदेशक गन्ना पुसा के धर्मवीर सिंह, मंत्री के आप्त सचिव सुनील कुमार, ईख अनुसंधान संस्थान पुसा के निदेशक डॉ. देवेंद्र सिंह, गन्ना आयुक्त अनिल झा, निदेशक अनुसंधान डॉ. एके सिंह, डॉ. डीएन कामत, डॉ. सीके झा, डॉ. एसएन सिंह, डॉ. सुभाष चंद्रा आदि मौजूद थे।

5 किसानों को स्प्रे मशीन व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित भी किया : बिहार की मिट्टी और यहां के किसान काफी ऊर्जावान हैं। आने वाले समय में बिहार गन्ना उत्पादन के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाएगा और इसके लिए गन्ना से जुड़े अधिकारी, पुसा के गन्ना वैज्ञानिक, कर्मी सभी दिन रात जी तोर मेहनत कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि गन्ना उत्पादक किसानों को ज्यादा से ज्यादा लाभान्वित करने के लिए गन्ना विभाग के द्वारा किसानों के लिए तरह तरह की योजनाएं चलाई जा रही हैं। इन योजनाओं का लाभ गन्ना उत्पादक किसानों को उठाना चाहिए। मंत्री ने कार्यक्रम के दौरान उत्तर बिहार में कम लागत में अत्यधिक गन्ना उत्पादन प्राप्त करने वाले 5 अग्रणी किसानों को स्प्रे मशीन व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित भी किया। मंच संचालन डॉ. सुनीता कुमारी मीना और धन्यवादज्ञापन धर्मवीर सिंह ने किया।

बिहार में गन्ना के उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि एक चुनौती विषय पर संगोष्ठी

संगोष्ठी में मौजूद सम्मानित होने वाले किसान और वैज्ञानिक।

29 पंचायतों में 3 से 17 अक्टूबर तक लगेगी कृषि जन कल्याण चौपाल

विभूतिपुर | कृषि विभाग के तहत प्रखंड कृषि कार्यालय, विभूतिपुर द्वारा प्रखंड के किसानों के लिए एक बड़ी पहल की गई है। प्रखंड कृषि पदाधिकारी, विभूतिपुर ने एक पत्र जारी कर सूचित किया है कि 03 अक्टूबर से 17 अक्टूबर 2025 के बीच प्रखंड की सभी 29 पंचायतों में \'कृषि जन कल्याण चौपाल\' का आयोजन किया जाएगा। इस चौपाल का मुख्य उद्देश्य कृषि विभाग द्वारा संचालित होने वाली विभिन्न सरकारी योजनाओं के संबंध में किसानों को विस्तृत जानकारी देना है, ताकि वे इन योजनाओं का लाभ उठा सकें। पत्र में बीएओ ने बताया कि यह आयोजन जिला कृषि पदाधिकारी-सह-परियोजन । निदेशक आत्मा, समस्तीपुर के निर्देश पर किया जा रहा है। चौपाल का आयोजन प्रत्येक पंचायत में पंचायत भवन, पंचायत कृषि कार्यालय, या किसी सार्वजनिक स्थान पर किया जाएगा। इसमें सभी जनप्रतिनिधियों (विधायक, प्रमुख, उपप्रमुख, मुखिया, सरपंच, जिला परिषद/पंचायत समिति सदस्य), प्रगतिशील कृषकों से अनुरोध किया है कि वे निर्धारित तिथि और स्थान पर चौपाल में भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाएं। वहीं इस कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन के लिए सभी कृषि समन्वयक, किसान सलाहकार, और सहायक तकनीकी प्रबंधक को निर्देश दिए गए हैं कि वे अपने पंचायत के जनप्रतिनिधियों को पत्र सौंपकर और प्रगतिशील किसानों के साथ मिलकर कार्यक्रम का व्यापक प्रचार-प्रसार करें। इस चौपाल के माध्यम से स्थानीय किसानों को सरकार की नई तकनीकों और लाभप्रद योजनाओं की सीधा जानकारी मिलेगी।

गन्ना उत्पादक एक से बढ़कर एक योजना, उठाएं लाभ

मंत्री बोले–सरकार प्रयत्नशील, अत्यधिक गन्ना उत्पादन प्राप्त करने वाले पांच अग्रणी किसानों को मिला सम्मान

संस, जागरण● पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि वि पूसा के विद्यापति सभागार में बिहार में गन्ना के उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि एक चुनौती विषय पर किसान संगोष्ठी का आयोजन किया गया। सूबे के गन्ना उद्योग विभाग के मंत्री कृष्णनंदन पासवान ने इसे संबोधित करते हुए कहा कि गन्ना उत्पादक किसानों का उत्पादन बढ़ाकर उन्हें ज्यादा से ज्यादा लाभान्वित करने की दिशा में सरकार प्रयत्नशील है। बिहार में कभी ऐसा दौर था जब अधिकतर चीनी मिल बंद कर दिये गए थे और गन्ना उत्पादक किसान गन्ना उत्पादन से अपना मुंह भी मोड़ने लगे थे। किसान सोचते थे कि अब ज्यादातर चीनी मिल कभी चालू ही नहीं होगी। वह समय अब बदल गया है। गन्ना उत्पादकों की सुविधा के लिए बारी बारी से चीनी मिल चालू कराएं जा रहे हैं। इस कड़ी में चार वर्षों से बंद पड़े रीगा चीनी मिल को इस साल चालू कराकर वहां गन्ना की पेराई भी

संबोधन करते गन्ना मंत्री कृष्णनंदन पासवान ● जागरण

कार्य में मौजूद वैज्ञानिक किसान● जागरण

कराई गई। मंत्री ने कहा कि बिहार के दो अन्य चीनी मिलों को भी बहुत जल्द ही चालू कराया जाएगा। उन्होंने किसानों से कहा कि अगर किसानों को गन्ना उत्पादन में किसी भी प्रकार की समस्या आती है तो वे अविलंब गन्ना से संबंधित पदाधिकारी से संपर्क करें और पदाधिकारी किसानों के समस्या का तत्क्षण निदान करेंगे। बिहार की मिट्टी और यहां के किसान काफी ऊर्जावान हैं। आने वाले समय में बिहार गन्ना उत्पादन के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाएगा और इसके लिए गन्ना से जुड़े अधिकारी, पूसा के गन्ना वैज्ञानिक, कर्मी सभी दिन रात मेहनत कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि गन्ना उत्पादक किसानों को ज्यादा से ज्यादा लाभान्वित करने के लिए गन्ना विभाग के द्वारा किसानों के लिए तरह तरह की योजनाएं चलाई जा रही हैं। इन योजनाओं का लाभ गन्ना उत्पादक किसानों को उठाना चाहिए। मंत्री ने कार्यक्रम के दौरान उत्तर बिहार में कम लागत में अत्यधिक गन्ना उत्पादन प्राप्त करने वाले 5 अग्रणी किसानों को स्प्रे मशीन व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित भी किया। मंच संचालन डा. सुनीता कुमारी मीना और धन्यवाद ज्ञापन धर्मवीर सिंह ने किया। मौके पर जिला गन्ना अधिकारी शिवांगी पांडे, उप निदेशक गन्ना पूसा के धर्मवीर सिंह, सुनील कुमार, ईख अनुसंधान संस्थान पूसा के निदेशक डा. देवेंद्र सिंह, गन्ना आयुक्त अनिल झा, निदेशक अनुसंधान डा. एके सिंह, डा. डीएन कामत, डा. सीके झा, डा. एसएन सिंह, डा. सुभाष चंद्रा आदि मौजूद रहे।

Dainik Jagran 29-09-2025

‘चीनी मिलों को लेकर सरकार की पहल तेज’

कार्यक्रम

पूसा, निज संवाददाता। राज्य के गन्ना उद्योग मंत्री कृष्णनंदन पासवान ने कहा कि सरकार की पहल से बीते चार वर्षो से बंद रीगा चीनी मिल में इस वर्ष से ईख की पेराई का कार्य शुरू हुआ है। आने वाले समय में राज्य के दो अन्य चीनी मिलों की शुरूआत की दिशा में प्रयास जारी है। इसमें केन्द्र व राज्य सरकार के साथ विभागीय टीम की भूमिका अहम रही है। उन्होंने कहा कि सरकार गन्ना उत्पादक किसानों व इससे जुड़े लोगों को आर्थिक रूप से सबल करने में लगातार प्रयासरत है। जरूरत हैं संकल्पित भाव से गन्ना की उत्पादकता वृद्धि के साथ इससे जुड़े कार्यो को गति देने की। सरकार हरसंभव सहयोग देते हुए आपके साथ खड़ा है।

वे डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के विद्यापति सभागार में आयोजित बिहार में गन्ना के उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि एक चुनौती विषय पर आयोजित राज्यस्तरीय गन्ना किसान संगोष्ठी के मौके पर बोल रहे थे। ईख आयुक्त अनिल कुमार झा ने कहा कि गन्ना उत्पादन के क्षेत्र में राज्य नेतृत्व करने वाला राज्य था। वह मुकाम दुबारा हासिल करना है। उन्होंने कहा कि इसके लिए 30 टन प्रति एकड़ उत्पादन को बढ़ाकर 60 टन करना होगा। यह स्थिति कई जिलों में आने भी लगी है। उन्होंने कहा कि सासा-मुसा, सकरी व रैयाम चीनी मिल को खोलने की दिशा में पहल जारी है। कहा कि इस के विस्तार के लिए आधे दामों में कृषि यंत्र भी उपलब्ध कराये जा रहे हैं। उन्होंने कहा विज्ञान व प्रबंधन से गन्ना क्षेत्र को और विस्तार दिया जा सकता है। विवि के निदेशक अनुसंधान डॉ.अनिल कुमार सिंह ने कहा कि गन्ना उधोग आधारित फसल है। राज्य में इस क्षेत्र के विकास में काफी गति आई हैं। स्वागत ईख पदाधिकारी शिवांगी पाण्डेय, संचालन सुनीता कुमारी मीणा एवं धन्यवाद उपनिदेशक धर्मवीर सिंह ने किया। मौके पर निदेशक डॉ.देवेन्द्र सिंह, सुनील कुमार, विवि के डॉ.सुभाष चन्द्रा, डॉ.डीएन कामत, डॉ.सीके झा, डॉ.ललिता राणा, अभिनव प्रियदर्शी, पुष्पराज सिंह आदि मौजूद थे। इस दौरान मौजूद कई किसानों ने वर्ष 1997 से बंद समस्तीपुर चीनी मिल की शुरूआत करने की मांग रखी।

रविवार को कृषि विवि के विद्यापति सभागार में दीप प्रज्जवलित करते मंत्री व अन्य।

- **सकरी और रैयाम चीनी मिलों को खोलने की पहल तेज**
- **गन्ना उत्पादन को 30 से 60 टन प्रति एकड़ उत्पादन का है लक्ष्य**

प्रिय अन्नदाता

ड्रोन से कीटनाशक छिड़काव फसल के लिए बेहतर विकल्प

प्रिय अन्नदाता दैनिक भास्कर - 30/9/25 P-23

आज के आधुनिक कृषि में ड्रोन की तकनीक तेजी से लोकप्रिय हो रही है। गन्ना, धान, फलदार वृक्ष और सब्जियों में इसका उपयोग समय और श्रम बचाने के साथ-साथ फसल पर दवा के समान वितरण को सुनिश्चित करता है। सरकार भी ड्रोन को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाएं चला रही है। लेकिन विशेषज्ञों का कहना है कि ड्रोन द्वारा कीटनाशक और फफूंदनाशक छिड़काव करते समय सुरक्षा और पर्यावरण संरक्षण को प्राथमिकता देना अनिवार्य है। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड डॉ. संजय कुमार सिंह ने बताया कि कृषि में ड्रोन का गलत या लापरवाहीपूर्ण प्रयोग किसानों, आमजन और पर्यावरण सभी के लिए खतरनाक साबित हो सकता है। डॉ. सिंह के अनुसार छिड़काव से पहले ऑपरेटर और सहायक कर्मियों को दस्ताने, मास्क और सुरक्षात्मक वस्त्र पहनना चाहिए। दवा के सीधे संपर्क से बचना बेहद आवश्यक है। ड्रोन केवल अनुकूल मौसम में उड़ाएँ। तेज हवा या बारिश की स्थिति में दवा बहकर बेअसर हो जाती है। उन्होंने बताया कि छिड़काव से पहले ड्रोन का परीक्षण अवश्य करें। नोजल से दवा का समान रूप से निकलना, बैटरी और जीपीएस का ठीक से काम करना जरूरी है। जलस्रोतों, घरों और संवेदनशील क्षेत्रों के आसपास 50 से 100 मीटर का बफर जोन बनाएं ताकि रसायन के बहाव से प्रदूषण और स्वास्थ्य जोखिम न हो। उन्होंने किसानों को सलाह दी कि वे ड्रोन से दवा छिड़काव के दौरान दवा की मात्रा क्षेत्रफल और फसल की जरूरत के हिसाब से तय करें। अधिक या कम मात्रा दोनों हानिकारक होती हैं।

डॉ. संजय कु. सिंह
पादपरोग विभाग
के हेड, पूसा, विवि

छिड़काव में सुरक्षा और मौसम पर दें विशेष ध्यान

- छिड़काव से पहले ड्रोन का परीक्षण जरूरी।
- ड्रोन से स्प्रे में दवा की सही खुराक और ऊँचाई पर दें विशेष ध्यान देना जरूरी ।
- प्रशिक्षित ऑपरेटर ही ड्रोन से करें दवा का छिड़काव।
- छिड़काव के बाद ड्रोन और नोजल की जाँच करें ताकि रिसाव की संभावना न रहे।

आप खेती किसानी से जुड़ी किसी विषय पर जानकारी चाहते हैं तो व्हाट्सएप नंबर 94318 83416 पर संपर्क करें।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग ने 1 अक्टूबर तक के लिए मौसम पूर्वानुमान जारी करते हुए बताया कि उत्तर बिहार के जिलो में आने वाले चार से पांच दिनों में मौसम शुष्क बने रहने की संभावना है। पूर्वानुमानित अवधि में आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। मौसम विज्ञानी डा. ए. सत्तार ने बताया कि फिलहाल मौसम शुष्क रहेगा। इस सप्ताह बारिश की संभावना कम है। इस अवधि में अधिकतम तापमान 34-36 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
30 सितंबर	36.0	26.0
01 अक्टूबर	36.5	26.0
दरभंगा		
30 सितंबर	36.5	26.0
01 अक्टूबर	36.5	26.5
पटना		
30 सितंबर	37.8	27.6
01 अक्टूबर	37.8	27.6

डिग्री सेल्सियस में

30/09/2023 दैनिक जागरण पृष्ठ-3